रायपुर। शनिवार, 15 अगस्त, 2026
रावण कृष्ण पक्ष अमावस्या, सिद्धार्थि संवत्सर विक्रम संवत 2083
वर्ष : 1, अंक : 14 / मूल्य 3.00 रुपए। पृष्ठ 12

दैनिक
विश्व केसरी
सिर्फ पत्रकारिता...

छत्तीसगढ़ एवं नई दिल्ली से एक साथ प्रकाशित

vishwakesari.com
@vishwakesariTV
@vishwakesari
vishwa_kesari_official
@VishwaKesari

@ छत्तीसगढ़ साइबर जागृति अभियान... | @ विचार स्वतंत्रता दिवस यानी राष्ट्र निर्माण... | @ व्यापार भारतीय शेयर बाजार...

चिप डिजाइन से लेकर स्वदेशी एआई मॉडल तक, भारत बना रहा मजबूत तकनीकी इकोसिस्टमः सरकार

एंजेसी ■ नई दिल्ली

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और सेमीकंडक्टर तकनीक के तेजी से विकसित होते दौर में भारत अपनी घरेलू क्षमताओं को मजबूत करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। एक आधिकारिक फैक्टशीट के अनुसार, देश सेमीकंडक्टर वैल्यू चेन के हर महत्वपूर्ण हिस्से में क्षमता विकसित कर रहा है, जिसमें चिप डिजाइन, वेफर फैब्रिकेशन, एडवांस्ड पैकेजिंग, उपकरण निर्माण और कच्ची सामग्री शामिल हैं। अब तक भारत में विभिन्न तकनीकी नोड्स पर सात चिप्स का सफल निर्माण किया जा चुका है, जिनमें 12 नैनोमीटर जैसे उन्नत नोड्स भी शामिल हैं।

सरकार के अनुसार, भारत ने छह राज्यों में 12 सेमीकंडक्टर परियोजनाओं को मंजूरी दी है, जिनमें कुल निवेश प्रतिबद्धता 1.64 लाख करोड़ रुपए से अधिक है। इन परियोजनाओं में सिलिकॉन और कंपाउंड सेमीकंडक्टर फैब, डिस्प्ले निर्माण इकाइयां और एडवांस्ड पैकेजिंग सुविधाएं शामिल हैं। इनमें से तीन इकाइयों ने व्यावसायिक उत्पादन भी शुरू कर दिया है, जो इस बात का संकेत है कि भारत अब केवल नीतियां बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि वास्तविक विनिर्माण की दिशा में भी आगे बढ़ चुका है।

फैक्टशीट के मुताबिक, अप्रैल 2026 तक देश की 75 संस्थाओं द्वारा 211 चिप्स का टेप-आउट किया जा चुका है। यह उपलब्धि भारत की बढ़ती घरेलू डिजाइन क्षमता को दर्शाती है और बताती है कि देश अब वैश्विक चिप डिजाइन परिदृश्य में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहा है। सरकार ने जुलाई 2026 में 'सेमिकॉन 2.0' कार्यक्रम को भी मंजूरी दी है, जिसके लिए 1.27 लाख करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सेमीकंडक्टर बौद्धिक संपदा (आईपी), चिप डिजाइन और सिस्टम डिजाइन को प्रोत्साहन देना है। सरकार का मानना है कि इससे भारत एक वैश्विक सेमीकंडक्टर डिजाइन हब के रूप में और मजबूत होगा।

सरकारी बयान में कहा गया है कि सेमीकंडक्टर आधुनिक तकनीक की रीढ़ हैं। स्मार्टफोन, ऑटोमोबाइल, उपग्रह, रक्षा प्रणालियां और एआई-आधारित तकनीकें सभी उन्नत चिप्स पर निर्भर हैं। वहीं एआई के विस्तार के साथ हाई-परफॉर्मेंस कंप्यूटिंग, विशेष प्रोसेसर और उन्नत चिप्स की मांग तेजी से बढ़ रही है। इसी कारण सेमीकंडक्टर और एआई तकनीकें एक-दूसरे से गहराई से जुड़ती जा रही हैं।

इस बदलते तकनीकी परिदृश्य को देखते हुए भारत केवल चिप निर्माण तक सीमित नहीं रहना चाहता, बल्कि कंप्यूटिंग इंफ्रास्ट्रक्चर और स्वदेशी एआई मॉडल विकसित करने पर भी जोर दे रहा है। इसी दिशा में सरकार की इंडियाएआई मिशन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

करीब 10,372 करोड़ रुपए के परिव्यय वाली इंडियाएआई मिशन ने पिछले एक वर्ष में उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की है। जून 2026 तक इस मिशन के तहत उपलब्ध साझा कंप्यूटिंग क्षमता बढ़कर 45,000 से अधिक ग्राफिक्स प्रोसेसिंग यूनिट (जीपीयू) तक पहुंच गई है।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, अगस्त 2026 तक 237 परियोजनाओं ने सब्सिडी वाली एआई कंप्यूटिंग सुविधा का उपयोग किया है। इन परियोजनाओं को कुल 93.18 लाख जीपीयू घंटे उपलब्ध कराए गए हैं, जिससे देश के शोधकर्ताओं, स्टार्टअप्स और नवाचारकर्ताओं को एआई मॉडल विकसित करने, उन्हें प्रशिक्षित करने, परीक्षण करने और अनुसंधान गतिविधियां संचालित करने के लिए अपेक्षाकृत कम लागत पर उच्च क्षमता वाली कंप्यूटिंग शक्ति प्राप्त हो रही है।

सरकार का कहना है कि इन पहलों का उद्देश्य भारतीय नवाचारकर्ताओं के लिए प्रवेश बाधाओं को कम करना और देश में एआई अनुसंधान एवं विकास को गति देना है।

स्वतंत्रता दिवस पर 1,057 कर्मियों को सम्मान, 301 को गैलेंट्री मेडल

नक्सल क्षेत्रों के 197 जवान शामिल

एजेंसी ■ नई दिल्ली

स्वतंत्रता दिवस 2026 के मौके पर केंद्र सरकार ने पुलिस, फायर सर्विस, होम गार्ड, सिविल डिफेंस और जेल सेवाओं के 1,057 कर्मियों को गैलेंट्री और सर्विस मेडल देने का ऐलान किया है।

इनमें 301 गैलेंट्री मेडल, 92 प्रेसिडेंट्स मेडल फॉर डिस्टिंग्विश्ड सर्विस और 664 मेडल फॉर मेरिटोरियस सर्विस शामिल हैं। इसके अलावा CBI के 21 अधिकारियों और कर्मचारियों को भी राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किया गया है।

301 कर्मियों को गैलेंट्री मेडल

कुल 301 गैलेंट्री मेडल में 272 पुलिसकर्मी और 29 फायर सर्विस कर्मी शामिल हैं। इनमें सबसे ज्यादा 197 कर्मी लेफ्ट विंग एक्सट्रीमिज्म यानी नक्सल प्रभावित इलाकों में तैनात हैं। इसके अलावा जम्मू-कश्मीर के 51, नॉर्थ-ईस्ट के 12 और अन्य क्षेत्रों के 41 कर्मियों को भी गैलेंट्री मेडल दिया गया है। यह सम्मान ऐसे कर्मियों को दिया जाता है, जिन्होंने जान बचाने, संपत्ति की रक्षा करने, अपराध रोकने या अपराधियों को पकड़ने के दौरान असाधारण बहादुरी दिखाई।

92 कर्मियों को प्रेसिडेंट्स मेडल

सरकार ने 92 कर्मियों को प्रेसिडेंट्स मेडल फॉर डिस्टिंग्विश्ड सर्विस देने का ऐलान किया है। इनमें 83 पुलिस सेवा, 4 फायर सर्विस, 3 सिविल डिफेंस एवं होम गार्ड और 2 करेक्शनल सर्विस के कर्मी शामिल हैं। यह सम्मान सेवा में विशेष और उत्कृष्ट रिकॉर्ड के लिए दिया जाता है।

664 कर्मियों को मेरिटोरियस सर्विस मेडल

इसके अलावा 664 कर्मियों को मेडल फॉर मेरिटोरियस सर्विस (MSM) दिया गया है। इनमें 606 पुलिस, 28 फायर सर्विस, 18 सिविल डिफेंस एवं होम गार्ड और 12 करेक्शनल सर्विस के कर्मी शामिल हैं। यह मेडल कर्तव्य के प्रति समर्पण और बेहतर सेवा के लिए दिया जाता है।

CBI के 21 अफसर-कर्मियों को भी राष्ट्रपति पदक

CBI के 21 अधिकारियों और कर्मचारियों को भी राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किया गया है। इनमें 6 को PSM और 15 को रूस्रू दिया गया है। PSM पाने वालों में शोभा दत्ता, मनोज बनर्जी, गिन्नी राणा, संजय कुमार समाल, रमेश चंद और मदन लाल धीमान शामिल हैं। इनमें SP, ASP, DSP और ASI स्तर के अधिकारी-कर्मचारी हैं। रूस्रू पाने वालों में छ्रस्क्क इंस्पेक्टर, सब-इंस्पेक्टर, हेड कॉन्स्टेबल और कॉन्स्टेबल के साथ लीगल और टेक्निकल स्टाफ भी शामिल हैं। ये CBI की दिल्ली, मुंबई, लखनऊ, कोलकाता, जयपुर, पटना, चंडीगढ़, मदुरै और बेंगलुरु समेत अलग-अलग यूनिट में तैनात हैं। इन पुरस्कारों के जरिए CBI के जांच, कानूनी, तकनीकी, प्रशासनिक और फील्ड स्तर पर काम करने वाले कर्मियों के योगदान को सम्मानित किया गया

राहुल गांधी को राहत, सुप्रीम कोर्ट ने वीर सावरकर पर टिप्पणी से जुड़े आपराधिक मानहानि मामले को किया रद्द

एजेंसी ■ नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को हिंदुत्व विचारक वीर सावरकर पर टिप्पणी से जुड़े मानहानि मामले में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के खिलाफ निचली अदालत में चल रही कार्यवाही को रद्द किया। जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस शील नागू की बेंच ने शुक्रवार को यह फैसला दिया।

सुप्रीम कोर्ट ने पाया कि इस मामले में राहुल गांधी पर मुकदमा चलाने के लिए कानून के तहत जरूरी मंजूरी नहीं ली गई थी। प्रक्रिया में इस कमी पर ध्यान देते हुए शुक्रवार को शीर्ष अदालत ने कांग्रेस नेता के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही और जारी किए गए समन को रद्द कर दिया।

यह मामला 2022 में 'भारत जोड़ो यात्रा' के दौरान राहुल गांधी के महाराष्ट्र में दिए गए विवादित बयान से जुड़ा है। इसमें उन्होंने वीर सावरकर को 'अंग्रेजों का नौकर' बताया था। साथ ही, कांग्रेस सांसद ने कहा था कि सावरकर 'अंग्रेजों से पेंशन लेते थे।' वकील नृपेंद्र पांडे ने इसको लेकर निचली अदालत में शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने राहुल गांधी पर भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 153ए (दुश्मनी को बढ़ावा देना) और 505 (सार्वजनिक उपद्रव) के तहत आरोप लगाए थे।

नृपेंद्र पांडे का दावा था कि ये टिप्पणियां समाज में नफरत फैलाने के इरादे से की गई थीं। पांडे की शिकायत में यह भी कहा गया था कि महात्मा गांधी ने पहले सावरकर को देशभक्त माना था। जून 2023 में, मजिस्ट्रेट कोर्ट ने पांडे की शिकायत खारिज कर दी, जिसके बाद वकील नृपेंद्र पांडे ने सेशंस कोर्ट में इसे चुनौती दी।

सेशंस कोर्ट ने याचिका स्वीकार कर ली और मामले को वापस मजिस्ट्रेट कोर्ट भेज दिया। इसके बाद, दिसंबर 2024 में निचली अदालत ने राहुल गांधी के खिलाफ पहली नजर में आईपीसी 153(ए) और 505 के तहत केस मानते हुए उन्हें समन जारी किया था। इसी मामले में 4 अप्रैल 2025 को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने राहुल को कोई राहत देने से इनकार कर दिया। इसके बाद गांधी ने सुप्रीम कोर्ट में अपील की थी।

15 महीनों से अमेरिकी बॉर्डर पर कोई रिहाई नहींः ट्रंप प्रशासन

एजेंसी ■ वॉशिंगटन

सीमा पर सख्त सुरक्षा उपायों और सीमा पार करने की घटनाओं में आई ऐतिहासिक गिरावट की वजह से अमेरिका की दक्षिणी सीमा पर अवैध रूप से प्रवेश करने वाले प्रवासियों को रिहा किए जाने का सिलसिला लगातार 15वें महीने भी शून्य रहा। ट्रंप प्रशासन ने गुरुवार को यह जानकारी दी।

डिपार्टमेंट ऑफ होमलैंड सिक्योरिटी (डीएचएस) और अमेरिकी कस्टम्स एंड बॉर्डर प्रोटेक्शन ने बताया कि जुलाई में बॉर्डर पेट्रोल एजेंटों ने दक्षिण-पश्चिम सीमा पर 9,295 लोगों को पकड़ा। यह संख्या जून की तुलना में 6 प्रतिशत कम थी।

एजेंसियों ने बताया कि पूरे देश में बॉर्डर पेट्रोल द्वारा पकड़े गए लोगों की संख्या पिछले महीने की तुलना में 1 प्रतिशत घटकर 11,298 हो गई। डीएचएस सेक्रेटरी मार्कवेन मुलिन ने कहा, 'इस महीने भी नतीजे साफ हैं। राष्ट्रपति ट्रंप का बॉर्डर सिक्योरिटी एजेंडा व्यवस्था बहाल कर रहा है और अमेरिकी लोगों की सुरक्षा को प्राथमिकता दे रहा है।

उन्होंने कहा, 'डीएचएस हमारे इमिग्रेशन कानूनों को लागू करने, सीमा को सुरक्षित करने और यह सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है कि जो लोग हमारे देश में अवैध रूप से प्रवेश करते हैं, उन्हें तुरंत वापस भेजा जाए।

ट्रंप प्रशासन ने बताया कि जुलाई में दक्षिण-पश्चिमी सीमा पर पकड़े गए लोगों की संख्या बाइडेन प्रशासन के दौरान दर्ज किए गए मासिक औसत से 94 प्रतिशत कम थी। यह संख्या दिसंबर 2023 के सबसे ज्यादा स्तर से 96 प्रतिशत कम थी और जुलाई 2024 के छह दिनों में दर्ज की गई संख्या से भी कम थी। जारी बयान के अनुसार, मौजूदा वित्त वर्ष में जुलाई तक दक्षिण-पश्चिमी सीमा पर पकड़े गए लोगों की कुल संख्या 1992 से 2024 के वित्त वर्षों के दौरान किसी एक महीने के औसत से भी कम थी। अमेरिकी कस्टम्स एंड बॉर्डर प्रोटेक्शन (सीबीपी) कमिश्नर रॉडनी एस. स्कॉट ने कहा, 'साफ नीति, सख्त कार्रवाई और समर्पित फ्रंटलाइन कर्मचारी हमारी सीमाओं पर अच्छे नतीजे दे रहे हैं।

स्कॉट ने कहा, 'राष्ट्रपति ट्रंप और सेक्रेटरी मुलिन के सहयोग से सीबीपी हमारे देश को अवैध रूप से सीमा पार करने वालों, खतरनाक लोगों और गैर-कानूनी ड्रग्स से सुरक्षित रख रहा है, साथ ही वैध व्यापार और यात्रा को भी जारी रखे हुए है।

स्वतंत्रता दिवस की 80 वर्षगाठ के अवसर पर प्रदेश व देश वासियों को दैनिक विश्व केसरी परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं। 15 अगस्त 2026 को अवकाश होने के कारण अगला अंक 17 अगस्त 2026 को प्रकाशित होगा

पीएम मोदी ने भारतीय-अमेरिकी समुदाय की भूमिका की सराहना की, बोले-हर क्षेत्र में बनाई पहचान

एजेंसी ■ वाशिंगटन

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अलग-अलग क्षेत्रों में भारतीय-अमेरिकी समुदाय की उपलब्धियों की सराहना की। पीएम मोदी ने कहा कि भारत की सांस्कृतिक विरासत के साथ इसका लगातार जुड़ाव देश के लिए ताकत का जरिया बना हुआ है। नेशनल अलायंस ऑफ इंडियन ऑर्गनाइजेशन्स (एनएआईओ) को भेजे गए एक संदेश में पीएम मोदी ने कहा कि भारत के 80वें स्वतंत्रता दिवस और अमेरिका की 250वीं सालगिरह का जश्न दोनों लोकतांत्रिक देशों के बीच करीबी संबंध को दिखाता है। पीएम मोदी ने 13 अगस्त के भेजे गए संदेश में कहा, 'यह जानकर खुशी हो रही है कि नेशनल अलायंस ऑफ इंडियन ऑर्गनाइजेशन्स (एनएआईओ) भारत का 80वां स्वतंत्रता दिवस और संयुक्त राज्य अमेरिका की 250वीं वर्षगांठ मना रहा है।'

पीएम मोदी ने कहा कि साथ मिलकर मनाया जा रहा ये जश्न उन मूल्यों को दिखाता है, जो नई दिल्ली और वाशिंगटन को जोड़ते हैं। उन्होंने कहा, 'ये जश्न भारत और अमेरिका के बीच करीबी संबंधों को दिखाते हैं, जो हमारे साझा लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित हैं। उन्होंने कहा, 'मां भारती और प्रवासी भारतीयों के बीच मजबूत संबंध ऐसी कोशिशों में भी दिखता है, जो हमेशा हमारे देश के लिए ताकत का जरिया रहा है।

राज्यपाल जिष्णु देव वर्मा ने महाराष्ट्र लोकायुक्त संस्था में चार नए सदस्यों को दिलाई पद की शपथ

विश्व केसरी

मुंबई। बॉम्बे हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज जस्टिस सुरेंद्र पंढरीनाथ तवाडे ने महाराष्ट्र लोकायुक्त संस्था के न्यायिक सदस्य के तौर पर शपथ ली। महाराष्ट्र के राज्यपाल जिष्णु देव वर्मा ने शुक्रवार को मुंबई के लोक भवन में आयोजित एक संक्षिप्त शपथ ग्रहण समारोह में जस्टिस तवाडे को पद की शपथ दिलाई।

रिटायर्ड चीफ डिस्ट्रिक्ट जज सुवर्णा किशोर केओले ने भी महाराष्ट्र लोकायुक्त संस्था के न्यायिक सदस्य के तौर पर शपथ ली। रिटायर्ड एडिशनल चीफ सेक्रेटरी ओम प्रकाश गुप्ता और महाराष्ट्र की रिटायर्ड डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस रश्मि शुक्ला ने भी महाराष्ट्र लोकायुक्त संस्था के गैर-न्यायिक सदस्यों के तौर पर शपथ ली। ये नियुक्तियां गवर्नर ने नए लोकायुक्त एक्ट 2023 के तहत कीं। सभी सदस्यों की नियुक्ति 5 साल के कार्यकाल के लिए या 70 साल की उम्र पूरी होने तक (जो भी पहले हो) की गई है।

इस मौके पर डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे, लोकायुक्त जस्टिस विद्यासागर कनाडे (रिटायर्ड), चीफ सेक्रेटरी राजेश अग्रवाल और सरकार के सीनियर अधिकारी मौजूद थे। गवर्नर के सेक्रेटरी डॉ. प्रशांत नारनवरे ने लोकायुक्त संस्था के चार सदस्यों की नियुक्ति के वारंट पढ़कर सुनाए। शपथ ग्रहण समारोह की शुरुआत राष्ट्र गीत, राष्ट्रगान और महाराष्ट्र गीत के गायन से हुई और समापन राष्ट्र गीत और राष्ट्रगान के साथ हुआ। इसके पहले 14 जुलाई को महाराष्ट्र के लोकायुक्त जस्टिस वी.एम. कनाडे (सेवानिवृत्त) ने राज्यपाल जिष्णु देव वर्मा से मुलाकात कर वर्ष 2025 के लिए लोकायुक्त और उप-लोकायुक्त के कामकाज की 53वीं संयुक्त वार्षिक रिपोर्ट सौंपी थी। रिपोर्ट में वर्ष 2025 के दौरान कार्यालय में प्राप्त शिकायतों, उनके निपटारे और संस्था के कामकाज का विवरण दिया गया है।

लोकायुक्त कार्यालय की ओर से जारी जानकारी के अनुसार, वर्ष 2025 में कुल 8,547 नई शिकायतें प्राप्त हुईं। इनमें से 3,869 शिकायतों को पंजीकृत नहीं किया गया, क्योंकि वे अन्य अधिकारियों को भेजे गए आवेदनों की प्रतियां थीं या उन पर शिकायतकर्ता के हस्ताक्षर नहीं थे। इसके बाद कुल 4,678 शिकायतों को विधिवत दर्ज किया गया।

रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2025 की शुरुआत में पिछले वर्षों के 4,287 मामले पहले से लंबित थे। इस तरह पूरे वर्ष के दौरान लोकायुक्त कार्यालय के पास सुनवाई और निपटारे के लिए कुल 8,965 मामले थे। इनमें से 4,885 मामलों का निपटारा कर दिया गया, जबकि वर्ष के अंत तक 4,080 मामले लंबित रहे।

सोशल मीडिया पर चाइल्ड पोर्नोग्राफी को लेकर सुप्रीम कोर्ट सख्त, केंद्र सरकार को जारी किया नोटिस

विश्व केसरी

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को केंद्र सरकार को नोटिस जारी कर पूछा कि इंस्टाग्राम और एक्स जैसे सोशल मीडिया मध्यस्थ बच्चों के यौन शोषण के मामलों की रिपोर्ट पुलिस और अन्य संबंधित एजेंसियों को क्यों नहीं दे रहे हैं।

2024 में सुप्रीम कोर्ट ने एक अहम फैसले में कहा था कि चाइल्ड पोर्नोग्राफी देखना और डाउनलोड करना एक जुर्म है और सोशल मीडिया इंटरमीडियरी के लिए ऐसे कंटेंट की रिपोर्ट पुलिस को करना जरूरी है। अगर सोशल मीडिया इंटरमीडियरी ऐसे मामलों की रिपोर्ट पुलिस को नहीं करते हैं तो वे क्रिमिनल तौर पर जवाबदेह बन जाते हैं। एक एनजीओ जस्ट राइट्स फॉर चाइल्ड की तरफ से दायर एक अर्जी में सुप्रीम कोर्ट में कहा गया था कि केंद्र और सोशल मीडिया इंटरमीडियरी सुप्रीम कोर्ट के 2024 के फैसले का पालन नहीं कर रहे हैं। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र को नोटिस जारी किया और पूछा कि सोशल मीडिया इंटरमीडियरी चाइल्ड पोर्नोग्राफी की रिपोर्ट पुलिस को क्यों नहीं कर रहे हैं?

सीनियर एडवोकेट एच.एस. फुल्का ने कहा, 'इन दिनों चल रहे इस मुद्दे को लेकर कि इंस्टाग्राम पर बच्चों के यौन शोषण के वीडियो न सिर्फ तेजी से फैल रहे हैं, बल्कि उन्हें सक्रिय रूप से बढ़ावा भी दिया जा रहा है। भारत सरकार ने इंस्टाग्राम को रोकने के लिए बहुत सख्त कदम उठाए हैं। हालांकि, 2 सितंबर 2024 को सुप्रीम कोर्ट ने एक फैसला सुनाया। उस फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने साफ़ तौर पर कहा कि सोशल मीडिया चलाने वाले सभी लोग – ये मध्यस्थ, चाहे वह मेटा हो, टेलीग्राम हो या कोई भी हो जो इन्हें चला रहा है – यह उनकी ज़िम्मेदारी है कि जब भी बच्चों के यौन शोषण का कोई वीडियो सामने आए, तो वे न सिर्फ उसे ब्लॉक करें बल्कि पुलिस को इसकी रिपोर्ट भी करें। एच.एस. फुल्का ने आगे कहा, 'सोशल मीडिया से चाइल्ड पोर्नोग्राफी को डाउनलोड करने और देखने वालों के खिलाफ पोक्स एक्ट के तहत केस चलने की बात सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कही है।

महाराष्ट्र में शुरू होगी महा-आईडी व्यवस्था, घर बैठे मिलेगा सरकारी योजनाओं का लाभ

विश्व केसरी

मुंबई। महाराष्ट्र सरकार अब राज्य के हर नागरिक को एक डिजिटल पहचान देगी। इसके लिए सरकार 'महा-आईडी' जारी करेगी। इसका मकसद सूचना प्रौद्योगिकी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की मदद से तेज, पारदर्शी और घर बैठे सरकारी सेवाएं देना है। यह कोई अलग पहचान पत्र नहीं होगा। 'महा-आईडी' सीधे व्यक्ति के आधार कार्ड से जुड़ी एकीकृत पहचान संख्या होगी।

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने सभी सरकारी विभागों को निर्देश दिए हैं कि वे एआई और आईटी समाधान अपनाएं, ताकि नागरिकों को सरकारी सेवाएं सीधे घर से मिल सकें। इसी डिजिटल गवर्नेंस पहल का अहम हिस्सा 'महा-आईडी' होगा। सरकारी सूत्रों के अनुसार, 'इस प्लेटफॉर्म को इलेक्ट्रॉनिक्स, सूचना प्रौद्योगिकी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विभाग के अंतर्गत 'महा-सारथी' पोर्टल के जरिए चलाया जाएगा। नागरिक तय पोर्टल पर रजिस्टर करेंगे और जरूरी जानकारी देंगे। आधार फ्रेमवर्क को शामिल करते हुए डिजिटल

महा-आईडी तैयार की जाएगी। नागरिक इसी एक आईडी से विभिन्न सरकारी सेवाओं के लिए आवेदन कर सकेंगे।'

'महा-आईडी' देने के बाद नागरिकों को योजनाओं, जानकारी, सब्सिडी और सेवाओं तक पहुंचने के लिए सिर्फ 'महा-आईडी' बतानी होगी। सरकार के पास पहले से ही डोमिसाइल सर्टिफिकेट, आय प्रमाण पत्र, राशन कार्ड जैसे अहम रिकॉर्ड मौजूद हैं। इसलिए हर आवेदन के साथ नागरिकों को भौतिक दस्तावेज बार-बार जमा नहीं करने होंगे। मुख्यमंत्री फडणवीस स्वतंत्रता दिवस के मौके पर इस पहल की रूपरेखा पेश कर सकते हैं। इसके तुरंत बाद आधिकारिक परियोजना लॉन्च होगी। यह एकीकृत प्रणाली छात्रों, किसानों, वरिष्ठ नागरिकों, महिला उद्यमियों और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को सीधे लाभ देगी। अभी छात्रों को राज्य छात्रवृत्ति के लिए शिक्षा पोर्टलों पर अलग-अलग रजिस्ट्रेशन करना पड़ता है। किसानों को सब्सिडी के लिए बार-बार पहचान, जमीन और बैंक का ब्योरा देना होता है। इसी तरह सामाजिक कल्याण योजनाओं के लाभार्थियों को भी ऐसे प्रमाण पत्र दोबारा जमा करने पड़ते हैं जो पहले से अन्य विभागों के रिकॉर्ड में होते हैं।

सरकारी सूत्रों ने कहा कि पहले से सत्यापित डेटा अब पात्र सेवाओं में अपने आप इस्तेमाल हो जाएगा। इससे अनावश्यक दस्तावेज जमा करने से छुटकारा मिलेगा।

'महा-आईडी' और 'महा-सारथी' पोर्टल के एकीकरण से विभिन्न सरकारी विभाग और डिजिटल प्लेटफॉर्म आपस में जुड़ जाएंगे। इससे एक अत्यधिक इंटरऑपरेबल डिजिटल गवर्नेंस नेटवर्क बनेगा। जब राज्य के विभाग अपना डेटा सिंक्रोनाइज करेंगे।

करूर भगदड़ पीड़ितों के परिजनों को नौकरी देने का रास्ता साफ, सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट के आदेश पर लगाई रोक हटाई

विश्व केसरी

नई दिल्ली। करूर भगदड़ में मारे गए लोगों के परिजनों को सरकारी नौकरी देने के तमिलनाडु सरकार के फैसले पर लगी रोक हट गई है। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को मद्रास हाईकोर्ट के उस आदेश पर अंतरिम रोक लगा दी, जिसमें सरकार के इस फैसले को रद्द कर दिया गया था। जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस के. विनोद चंद्रन की बेंच ने तमिलनाडु सरकार की याचिका पर सुनवाई करते हुए यह अंतरिम आदेश दिया। राज्य सरकार ने मदुरै

बेंच के 27 जुलाई के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी।

सुनवाई के दौरान बेंच ने कहा, 'राज्य ने एक दुखद त्रासदी के बाद पीड़ित परिवारों को रोजगार देने की पेशकश की थी। इसके खिलाफ चुनौती क्यों बेंच ने सवाल किया, 'राज्य द्वारा त्रासदी के पीड़ितों को रोजगार देने में दिक्कत क्या है तमिलनाडु सरकार की तरफ से वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी और मुकुल रोहतगी पेश हुए। मद्रास हाईकोर्ट की मदुरै बेंच ने सितंबर 2025 में करूर में हुई भगदड़ में जान गंवाने वालों के परिवारों को अनुकंपा के आधार पर सरकारी नौकरी देने के सरकार के फैसले को रद्द कर दिया था।हाईकोर्ट का कहना था कि इस तरह की नियुक्तियां असंवैधानिक हैं। अदालत ने कहा था कि अनुकंपा नियुक्ति का उद्देश्य सेवा के दौरान किसी सरकारी कर्मचारी की मृत्यु होने पर परिवार को तुरंत आर्थिक राहत देना है। इसे किसी सार्वजनिक त्रासदी के बाद आम पुनर्वास उपाय के तौर पर नहीं बढ़ाया जा सकता।

यह भगदड़ सितंबर 2025 में करूर में टीवीके नेता विजय की रैली के दौरान हुई थी। इस हादसे में 41 लोगों की मौत हो गई थी, जिनमें 8 बच्चे शामिल थे।

इसके अलावा 46 लोग घायल हुए थे।

वहाब आलम नेपाल के पांच ऑपरेटरों के जरिए आईएसआई हैंडलर्स से संपर्क में था, जांच में बड़ा खुलासा

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में उत्तर 24 परगना जिले के हाबरा से पाकिस्तानी नागरिक वहाब आलम की गिरफ्तारी के बाद स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) लगातार जांच में जुटी है। इस दौरान एसटीएफ को वहाब आलम के नेपाल में मौजूद पांच साथियों के नाम पता चले हैं।

एसटीएफ के अधिकारियों ने आलम के पास से मिले नेटबुक का डेटा डिकोड करके नेपाल में मौजूद इन पांच ऑपरेटर्स के नाम पता किए। इस मामले की जानकारी रखने वाले एक सूत्र ने बताया कि एसटीएफ की लंबी पूछताछ के दौरान आलम टूट गया और उसने कबूल किया कि वह पाकिस्तान में अपने आईएसआई हैंडलर्स से संपर्क बनाए रखने के लिए नेपाल में मौजूद इन पांच ऑपरेटर्स का इस्तेमाल कैसे करता था।

मान. श्री नरेन्द्र मोदी जी
प्रधानमंत्री

मान. श्री अमित शाह जी
केन्द्रीय गृहमंत्री

मान. श्री विष्णु देव साय जी
मुख्यमंत्री (छ.ग.)

मान. श्री टंकराम वर्मा जी
कैबिनेट मंत्री (छ.ग.)

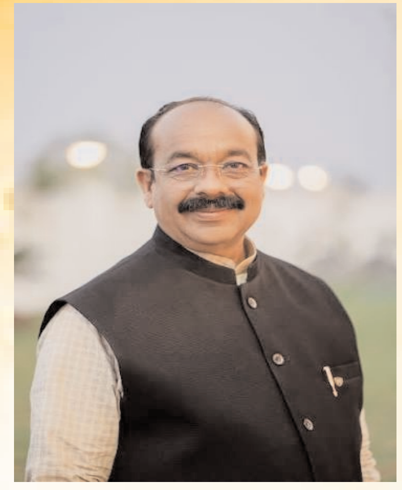
मान. श्री अरूण साव जी
उप मुख्यमंत्री (छ.ग.)

मान. श्री विजय शर्मा जी
उप मुख्यमंत्री (छ.ग.)

गौरीशंकर अग्रवाल
पूर्व विधानसभा अध्यक्ष छ.ग शासन

नंदकुमार साय

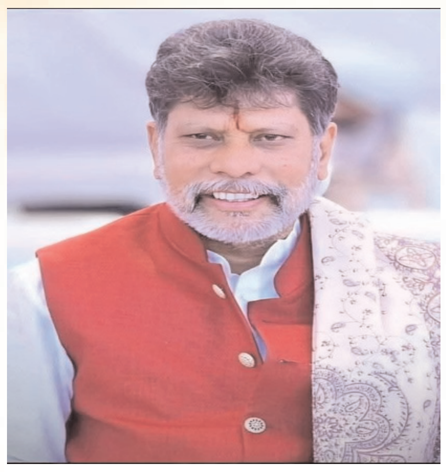
किरण देव
प्रदेश अध्यक्ष बीजेपी (छ.ग.)

सनम जागड़े
अनुसूचित जाति आयोग

मोरध्वज पैकरा (सभापति)
खेल एवं युवा कल्याण विभाग
जनपद पंचायत कसडोल
प्रदेश मंत्री भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा
प्रभारी रायपुर

श्रीमती गायत्री जाटवर
सरपंच

श्रीमती पूजा कमलवंशी
सरपंच

श्रीमती रंजनी राजेन्द्र
महिलांगें (सरपंच)

श्रीमती गीतांजली
मानिकपुरी (सरपंच)

आप सभी प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाए

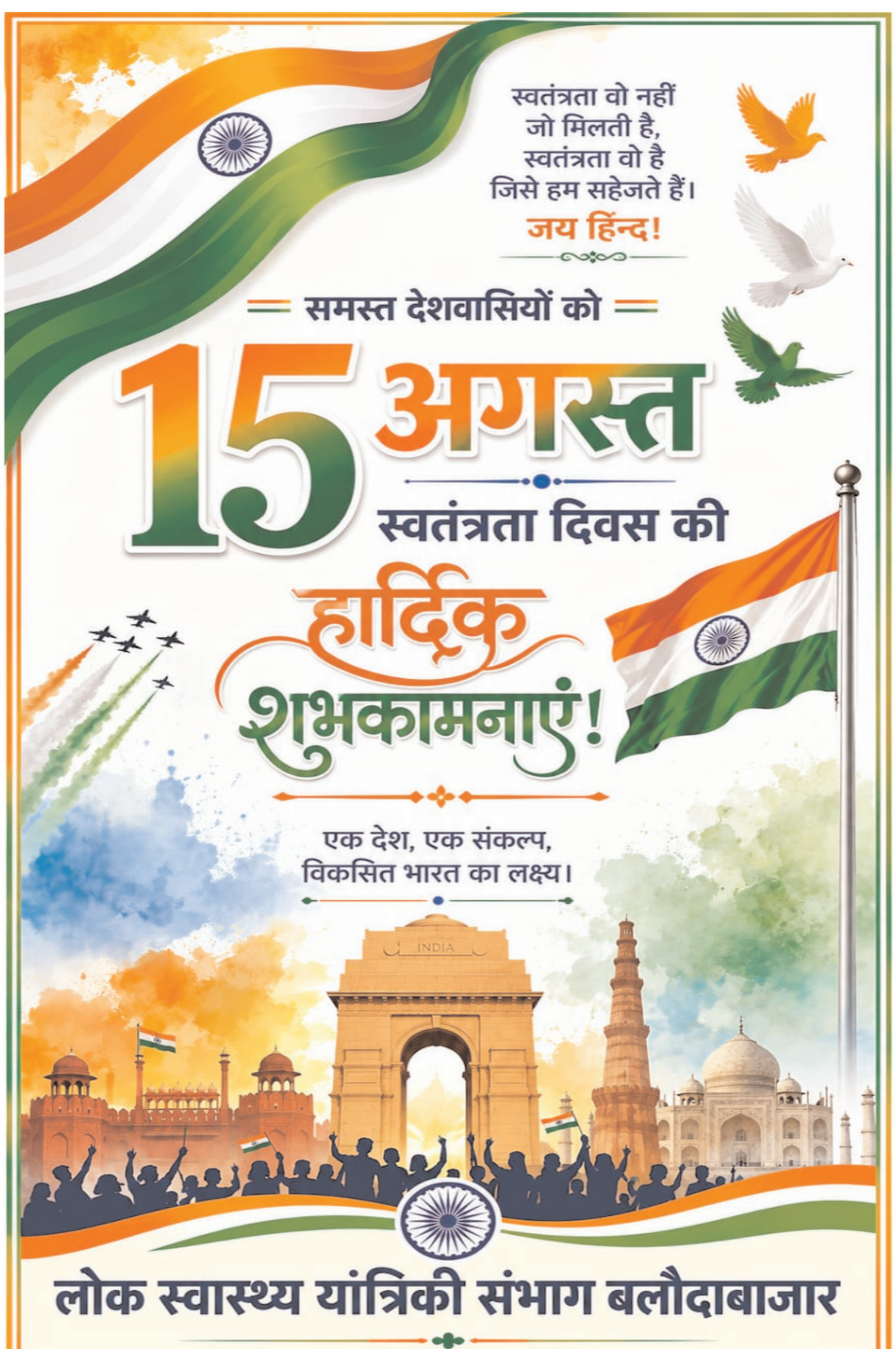

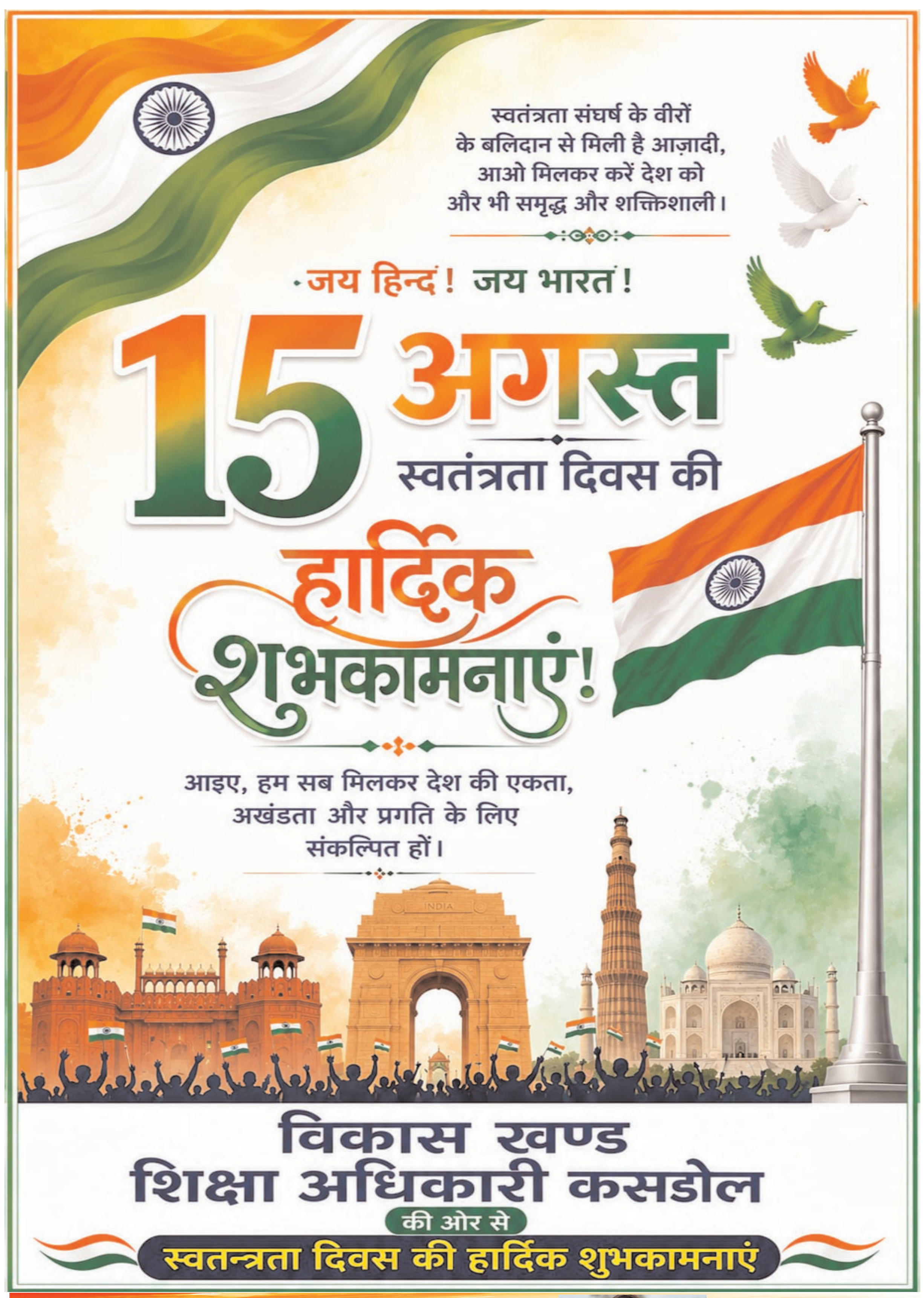

संकलनकर्ता :- प्रवीण ढोमने कसडोल

संपादकीय

बदलता भारत, बनता भारत

हम जिस भारत के रूप में उभरे हैं, और जिस भारत की हम अभी भी तलाश कर रहे हैं

डॉ. प्रियंका सौरभ

प्रत्येक स्वतंत्रता दिवस हमें अपने राष्ट्र के अतीत पर चिंतन करने और भविष्य पर विचार करने का अवसर देता है। स्वतंत्रता के पिछले 80 वर्षों में भारत में आए कुछ परिवर्तनों को याद करने का यह मेरा एक प्रयास है। यह परिवर्तन केवल हमारी अर्थव्यवस्था, शहरों या प्रौद्योगिकी में ही नहीं, बल्कि आम भारतीयों की आकांक्षाओं, आत्मविश्वास और दृष्टिकोण में भी देखा गया है। आज का भारत 1947 में औपनिवेशिक शासन से मुक्त हुए भारत से बहुत अलग है।

आर्थिक दृष्टि से सबसे बड़ा अंतर यही है। स्वतंत्रता के बाद के शुरुआती दशकों में संसाधनों की कमी थी, अवसर सीमित थे और विशाल जनसंख्या की बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करना एक चुनौती थी। भारत आज विश्व की महान आर्थिक शक्तियों में से एक है; आधुनिक उद्योग, विकसित होता बुनियादी ढांचा और उद्यमशीलता की नई भावना, महत्वाकांक्षी युवा पीढ़ी। सड़कों, हवाई अड्डों, मेट्रो, डिजिटल नेटवर्क और बेहतर कनेक्टिविटी के कारण स्थान और लोग एक-दूसरे के करीब आ गए हैं। एक युवा ऑनलाइन पढ़ाई कर सकता है, किसी दूसरे शहर की कंपनी में काम कर सकता है और यहां तक ??कि पूरे देश में लोगों को सेवा प्रदान करने वाला व्यवसाय भी चला सकता है। पिछली पीढ़ियों के लिए ऐसी संभावनाओं की कल्पना करना भी मुश्किल रहा होगा।

शायद इस बदलाव में प्रौद्योगिकी का सबसे बड़ा योगदान है। मोबाइल फोन अब सिर्फ संचार का साधन नहीं रह गया है। यह एक बैंक, कक्षा, बाज़ार, कार्यालय और सूचना का स्रोत बन गया है। ऑनलाइन भुगतान ने हमारे दैनिक जीवन में क्रांति ला दी है और अनेक सार्वजनिक सेवाएं ऑनलाइन उपलब्ध हैं। प्रौद्योगिकी ने भारत को सूचना और अवसरों के मामले में कई मायनों में अधिक जुड़ा हुआ और अधिक लोकतांत्रिक बनाया है। लेकिन प्रगति का सच्चा सूचक प्रौद्योगिकी नहीं है, बल्कि यह है कि प्रौद्योगिकी आम आदमी के जीवन को कैसे प्रभावित करती है।

भारतीयों और उनके राष्ट्र के आत्मविश्वास में अद्भुत परिवर्तन आया है। कुछ पीढ़ियों पहले, पश्चिम के प्रति प्रशंसा और कभी-कभी हीनता की भावना प्रचलित थी। आज, हमारे युवा खुद को विश्व के सर्वश्रेष्ठ लोगों के बराबर मानते हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, उद्यमशीलता, पेशेवर क्षेत्र, कला एवं खेल के क्षेत्र में भारतीय नागरिक विदेशों में अपनी पहचान बना रहे हैं। साथ ही, भारत की संस्कृति, भाषाओं, परंपराओं और इतिहास का पुनरुद्धार हो रहा है। आधुनिकता और जड़ों से जुड़ाव की अवधारणा अब विरोधाभासी नहीं रह गई है।

प्रगति के बावजूद, हमारी समस्याएं कम नहीं हुई हैं। हमारे पास विश्व स्तरीय हवाई अड्डे और डिजिटल बुनियादी ढांचा है, लेकिन कुछ समुदाय अभी भी स्वास्थ्य, शिक्षा और स्वच्छता जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। हमारे पास बेहतरीन व्यवसाय और कुशल कर्मचारी हैं, फिर भी लाखों युवा स्थिर और लाभकारी रोजगार की तलाश में हैं। शहरों के विकास के साथ-साथ, कई शहर प्रदूषण, भीड़भाड़ और खराब शहरी नियोजन से जूझ रहे हैं। आर्थिक विकास ने अपार अवसर पैदा किए हैं, लेकिन सभी नागरिकों को इसका समान लाभ नहीं मिल रहा है।

संतुलित आलोचना का महत्व यहीं पर है। अपने देश की कमियों से अवगत हुए बिना उससे प्रेम करना संभव नहीं है। वास्तव में, सच्ची देशभक्ति हमें उन चीजों को स्वीकार करने का साहस देती है जिन्हें बदलने की आवश्यकता है। एक सशक्त लोकतंत्र में असहमति और आलोचना को सहन किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय हित केवल आर्थिक विकास, सैन्य शक्ति और अंतरराष्ट्रीय शक्ति तक सीमित नहीं होना चाहिए। इसमें सामाजिक सद्भाव, सुदृढ़ संस्थाएं, समान अवसर, सभी नागरिकों के लिए गरिमा और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में विश्वास भी शामिल होना चाहिए। यदि देश का कोई भविष्य है, तो उसे कठिन प्रश्नों को स्वीकार करने के लिए पर्याप्त आत्मविश्वास होना चाहिए।

हमारे लिए भी भारत की यह अवधारणा अनूठी है। भारत केवल आधुनिक युग की एक राजनीतिक इकाई नहीं है, बल्कि हजारों वर्षों के इतिहास, विभिन्न परंपराओं, भाषाओं, दर्शनों और सांस्कृतिक प्रभावों से परिपूर्ण एक सभ्यता है। विविधता को स्वीकार करना और एकरूपता की मांग न करना हमेशा से इसका गुण रहा है। हमारे सामने चुनौती यह है कि हम इस सभ्यतागत स्वरूप को बनाए रखें और साथ ही तेजी से बदलती दुनिया की संभावनाओं को भी स्वीकार करें। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, उन्नत प्रौद्योगिकियों और सांस्कृतिक जड़ों के बीच संतुलन होना चाहिए। आधुनिक शहर बनने चाहिए, लेकिन उनमें सामुदायिक भावना भी होनी चाहिए। हमें विश्व के साथ अधिक एकीकृत होने की आवश्यकता है, लेकिन अपनी संस्कृति को लेकर असुरक्षित नहीं होना चाहिए।

एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत की सबसे बड़ी सफलता यह रही कि उसने लोकतंत्र को कायम रखा और विकसित किया। अब तक, विभिन्न भाषाओं, धर्मों, भौगोलिक पृष्ठभूमि, समुदायों और आर्थिक स्थिति वाले लोगों से भरा यह विविध राष्ट्र संवैधानिक ढांचे के भीतर अपने मतभेदों को सुलझाने में सक्षम रहा है। हालांकि यह लोकतंत्र अभी पूर्ण नहीं है, फिर भी असहमति एक ताकत हो सकती है। यह इस बात का संकेत हो सकता है कि लोग अभी भी अपने समाज के भविष्य पर विचार-विमर्श कर रहे हैं। हमारा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि हमारे मतभेद विभाजन में न बदलें और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा भारत की अवधारणा को कमजोर न करे।

स्वतंत्रता दिवस यानी राष्ट्र निर्माण का संकल्प

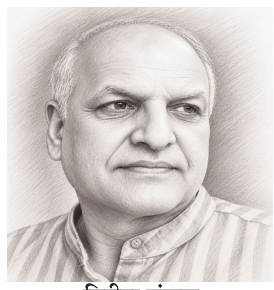

गिरीश पंकज

भारत अपनी स्वतंत्रता के आठ दशकों की यात्रा पूर्ण कर रहा है। आठ दशक किसी भी राष्ट्र के इतिहास में एक ऐसा पड़ाव होते हैं, जहाँ पहुँचकर पीछे मुड़कर देखना और आगे का मार्ग प्रशस्त करना अनिवार्य हो जाता है। इन अस्सी वर्षों में निसंदेह भारत ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अर्थशास्त्र, इंफ्रास्ट्रक्चर और अंतरिक्ष क्षेत्र में अभूतपूर्व 'भौतिक प्रगति' की है। आज हम दुनिया की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में गिने जाते हैं। लेकिन भौतिक विकास की इस चमचमाती इमारत के पीछे एक गहरी चिंताजनक सच्चाई भी छिपी है, हमारी सांस्कृतिक, नैतिक और राष्ट्रीय चेतना में आता क्षरण।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए अस्सी वर्ष कम नहीं होते, लेकिन भौतिक उन्नति के बावजूद यदि देश विरोधी मानसिकता, सांस्कृतिक हीनता और कर्तव्यों से विमुखता बढ़े, तो यह चिंता का विषय है। आज का यक्ष प्रश्न यही है कि क्या स्वतंत्रता केवल 'अधिकारों की अंधी दौड़' है या फिर यह 'नागरिक कर्तव्यों के गंभीर दायित्व' का दूसरा नाम है?

स्वतंत्रता केवल ब्रिटिश शासन की पराधीनता से मुक्ति या विदेशी शासकों के चले जाने का नाम नहीं थी। स्वतंत्रता का सच्चा अर्थ था, अपने राष्ट्र, संस्कृति, परंपराओं और भविष्य का निर्माण स्वयं करने का अधिकार। परंतु समय के साथ, विशेषकर पिछले कुछ दशकों में, समाज में स्वतंत्रता की व्याख्या को बेहद संकुचित और स्वार्थी बना दिया गया है। ?हमने यही पढ़ा है कि अधिकार और कर्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। बिना कर्तव्य के अधिकार एक ऐसी स्वच्छंदता बन जाते हैं जो अंततः समाज और राष्ट्र को विनाश की ओर ले जाती है। ?जब हम केवल अपने अधिकारों के प्रति सजग रहते हैं और कर्तव्यों को भूल जाते हैं, तो लोकतंत्र एक अराजक व्यवस्था में बदलने लगता है। आज देश में हर व्यक्ति को अपनी 'व्यक्तिगत स्वतंत्रता' और 'अभिव्यक्ति की आजादी' की चिंता तो है, लेकिन उस स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए जिस अनुशासन, नैतिक मूल्य और नागरिक कर्तव्य की आवश्यकता है, उससे लोग मुँह मोड़ रहे हैं।

यह कटु सत्य अत्यंत विचारणीय है कि पिछले डेढ़-दो दशकों में देश में एक ऐसी मानसिकता ने आकार लिया है जो अपने ही देश की गौरवशाली परंपराओं, सांस्कृतिक प्रतीकों और राष्ट्रीय अस्मिता पर आघात करती है। ?अपनी जड़ों से उखड़े हुए कुछ लोग आज आधुनिकता या प्रगतिशीलता के नाम पर भारत की सनातनी परंपराओं, ऋषि-मुनियों के चिंतन और धार्मिक प्रतीकों को नीचा दिखाने या गाली देने में गर्व महसूस करते हैं। यह वैचारिक विकृति उस हीन भावना का परिणाम है जो हमें अपनी हजारों साल पुरानी संस्कृति से काटने का प्रयास करती है। ?हाल के वर्षों में ऐसी घटनाएँ बढ़ी हैं जहाँ 'वंदे मातरम' गाने पर आपत्ति जताई जाती है, राष्ट्रगान के सम्मान में खड़े होने को व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर हमला बताया जाता है, और तिरंगे के प्रति जो स्वाभाविक श्रद्धा होनी चाहिए, उसमें कमी देखी गई है। जिस तिरंगे की आन-बान-शान के लिए भारत माता के बेटों ने हँसते-हँसते फाँसी के फंदे को चूम लिया था, उस तिरंगे का सम्मान करने में भी यदि किसी को हिचकिचाहट होती है, तो यह गहरे मानसिक प्रदूषण का संकेत है।

?आज की नई पीढ़ी डिजिटल क्रांति और उपभोक्तावादी संस्कृति के दौर में जी रही है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आज का युवा तकनीकी रूप से बेहद सक्षम है, परंतु दुर्दशा यह है कि वह इस बात को भूलता जा रहा है कि यह आजादी कितनी महँगी कीमत चुकाकर मिली है।

हम अब ?बलिदानों की विस्मृति के शिकार हो रहे हैं । चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, सुभाष चंद्र बोस, अशफाक उल्ला खाँ और रानी लक्ष्मीबाई जैसे हज़ारों-लाखों ज्ञात और अज्ञात शहीदों ने अपना

वर्तमान हमारे सुखद भविष्य के लिए न्योछावर कर दिया था। उन ?शहीदों के सपनों का भारत बनाना हम सबका परम् कर्तव्य है । शहीदों ने केवल एक राजनीतिक रूप से मुक्त भारत का सपना नहीं देखा था; उनका सपना एक ऐसे भारत का था जो नैतिक रूप से समृद्ध, सांस्कृतिक रूप से जागृत और आत्म-अभिमानी हो। यदि आज का युवा उन बलिदानों के महत्व को नहीं समझेगा, तो वह इस देश की नींव को मजबूत कैसे रख पाएगा?

?इसीलिए यह अत्यंत आवश्यक हो गया है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था और सामाजिक संवाद में 'देशभक्ति के पाठ' को निरंतर और प्रभावी ढंग से पढ़ाया जाए। देशभक्ति कोई एक दिन (15अगस्त या 26 जनवरी) मनाया जाने वाला उत्सव नहीं, बल्कि एक दैनंदिन जीवन-शैली होनी चाहिए।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और नैतिक सीमाएँ

?वर्तमान दौर में 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' का दुरुपयोग एक फैशन बन गया है। मैंने अत्यंत कड़वी लेकिन सत्य बात कही है कि अगर अश्लील गालियां देना या दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुँचाना ही किसी का अधिकार बन गया है, तो उसका यह कर्तव्य भी है कि वह समाज के नैतिक मूल्यों की रक्षा करे। स्वतंत्रता कभी भी 'उच्छृंखलता' या 'अराजकता' का लाइसेंस नहीं हो सकती। अगर संविधान हमें बोलने की आजादी देता है, तो वही संविधान और हमारी नैतिक परंपराएँ हमें यह भी सिखाती हैं कि हमारी जीभ से निकले शब्द देश की अखंडता और सामाजिक ताने-बाने को नुकसान न पहुँचाएँ। ?यदि हमें शहीदों के सपनों का भारत बनाना है, तो प्रत्येक नागरिक को अपने स्तर पर निम्नलिखित कर्तव्यों को आत्मसात करना होगा,जैसे ?राष्ट्रीय प्रतीकों का स्वतःस्फूर्त सम्मान: तिरंगा, राष्ट्रगान, वंदे मातरम और हमारे सुरक्षा बलों का सम्मान किसी नियम या कानून के डर से नहीं, बल्कि दिल से होना चाहिए। ?नई पीढ़ी को सत्य और प्रामाणिक इतिहास का ज्ञान कराया जाए । उसे भारत के वास्तविक इतिहास, संघर्षों और सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ना होगा ताकि वे दुष्प्रचार का शिकार न बनें। ?सामाजिक समरसता और भ्रातृत्व भी जगाना है। जाति, धर्म, भाषा या क्षेत्र के नाम पर देश को बाँटने वाली शक्तियों को पहचानना और सामाजिक भाईचारे को बढ़ावा देना भी देशभक्ति है ।व्यक्तिगत जीवन में ईमानदारी, महिलाओं का सम्मान, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा को प्राथमिक कर्तव्य मानना हर व्यक्ति का कर्तव्य होना चाहिए ।

राष्ट्र निर्माण का संकल्प

भारत अपनी स्वतंत्रता के सौवें वर्ष की ओर बढ़ रहा है। भौतिक विकास, बड़ी-बड़ी इमारतें, चमचमाती सड़कें और उन्नत तकनीक किसी देश का ढाँचा तो बना सकती हैं, लेकिन उसकी 'आत्मा' उसके नागरिकों के चरित्र, राष्ट्रप्रेम और नैतिक मूल्यों से ही जीवंत रहती है। यह विचार आज पूरे समाज के लिए एक चेतावनी भी है और मार्गदर्शन भी। यदि हमने समय रहते अपनी नई पीढ़ी को अधिकारों के साथ-साथ 'नागरिक कर्तव्यों' का पाठ नहीं पढ़ाया, तो हम अपनी स्वतंत्रता के वास्तविक अर्थ को खो देंगे।

?आजादी एक निरंतर चलने वाली जिम्मेदारी है। शहीदों के सपनों का भारत बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हर भारतीय अपनी दैनिक दिनचर्या में देशभक्ति को शामिल करे। जब देश का प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्यों का पालन निष्ठापूर्वक करेगा, तभी भारत न केवल भौतिक रूप से, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक रूप से भी विश्वगुरु के पद पर पुनः प्रतिष्ठित हो सकेगा। जिस देश में कर्तव्य की भावना प्राथमिक होगी, वहाँ अधिकारों के लिए संघर्ष करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। जब हम कतार में खड़े होकर अपनी बारी का इंतजार करते हैं, जब हम कचरा डस्टबिन में फेंकते हैं, जब हम रिश्वत देने और लेने से मना करते हैं, और जब हम अपने देशवासियों के प्रति दया और प्रेम भाव रखते हैं, तब हम सही मायनों में देशभक्त होते हैं। एक आम नागरिक के लिए अपनी दैनिक दिनचर्या में देश के नियमों और व्यवस्थाओं का सम्मान करना ही सबसे बड़ी देशभक्ति है. सड़क पर यातायात नियमों का पालन करना, ईमानदारी के साथ टैक्स चुकाना, पर्यावरण और जल का संरक्षण करना, कहीं भी सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान न पहुंचना,बच्चों को सच्चे नैतिक मूल्य और सही ज्ञान देना देशभक्ति है। एक डॉक्टर के लिए मरीज की जान बचाना और सेवा भाव रखना देशभक्ति है। किसान के लिए अन्न उपजाना और एक मजदूर के लिए ईमानदारी से निर्माण करना देशभक्ति है। एक सफाई कर्मी द्वारा अपने आसपास के परिवेश को स्वच्छ रखना उतनी ही बड़ी देशभक्ति है, जितना किसी सैनिक का सीमा पर डटे रहना। देश के नव निर्माण में यह छोटे-छोटे व्रत - संकल्प हैं ।

लोग इन सबका पालन करते रहे तो अपने देश को निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर होने से कोई नहीं रोक सकता।

स्वतंत्रता दिवस स्वच्छंदता दिवस न बने

– साकार श्रीवास्तव 'फ़लक'

भारत यानी हम भारत वासियों को 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता मिली। इसमें नयी बात क्या हुई? यह तो सर्व विदित तथ्य है। सच है, हमें स्वतंत्रता मिली ताकि हम स्व का तंत्र स्थापित करें व अपनी एक सुशासन व्यवस्था लागू करें। लेकिन अभी आज़ादी कहाँ? हमें इंतज़ार था कि हमारा क़ानून बने। चलिए, तंत्र की स्थापना हो गयी, अपना संविधान बन गया और और 26 जनवरी 1950 को 'हम भारत के नागरिक' के रूप में हमने इसे अंगीकार भी कर लिया कि अब हम अपने क़ायदे - क़ानून मानेंगे। लेकिन व्यवहार में हुआ कुछ और ही। अब 'हम भारत के नागरिक' ने स्वाधीन होने का अर्थ अपनी मर्ज़ी का मालिक होने से ले लिया। हमने स्वतंत्रता का अर्थ समझ लिया – यानी कुछ भी करो, कोई रोक-टोक नहीं। मतलब अब है—हर कोई 'राजा', और बाकी सब 'प्रजा'।

जो हम से कमतर है उस पर हमारा राज चलेगा और यदि हमारे ऊपर सत्ता का वरद हस्त है तो कहना ही क्या, करेला उस पर नीम चढ़ा। हम मोहल्ले के छुटभैय्या नेता ही हों, जनसेवा के नाम पर सरकारी बाबू हमारे आगे कुछ भी नहीं फिर आम आदमी की तो औक़ात ही क्या।

आम आदमी, वह अपने स्तर पर इस स्वतंत्रता का आनंद लेता है। सड़क पर चलते - चलते पान मसाला या तम्बाकू गुटखे का ख़ाली पाउच, अधजली सिगरेट, बीड़ी कहीं भी फेंक सकता है, गुटखा या पान चबाकर कहीं भी थूक सकता है। चाहे वह साफ़- सुथरा रेल्वे स्टेशन हो या सड़क। घर की नित्य सफ़ाई के बाद घर का कचरा सड़क पर फेंकने में गुरेज़ नहीं करते। मकान बनाते समय घर की नालियाँ सड़क पर खोल देते हैं। सड़क पर गंदगी और गंदा पानी जमा हो उनकी बला से। बाद में आस पड़ौसियों के सुर में सुर मिला कर नगर निगम को तो दोष देना ही है। व्यवस्था को अपशब्द निकालने में क्या जाता है। हम स्वतंत्र जो हैं।

अपने वाहन चाहे वह दुपहिया हो या चौपहिया सड़क पर या किसी के घर के आगे पार्क कर देते हैं, आने जाने वालों को परेशानी से उनको कोई मतलब नहीं आख़िर वे भी स्वतंत्र हैं।

सरकार में बाबुओं की लोकलुभावन सैलेरी और भाँति - भाँति के भत्तों के अलावा भी उनकी गीध दृष्टि 'बँधी' पर रहती है। ऐसे पद पर पोस्टिंग के लिए मोटी 'बँधी' देने को तैयार रहते हैं। जहाँ मौक़ा मिले झपट लो। महीने की पगार से कई गुना 'बँधी'। कोई पूछे तो टका - सा जवाब, अरे साहब, हमें ऊपर मंत्री तक पहुँचाना होता है। कभी क़ानून की गिरफ़्त में आ भी गए तो 'दे' कर छूट जाएँगे। हर तरफ़ सरकारी मुलाजिम और हर ओर 'बँधी' का बोलबाला। वो कहते हैं ना –

'बँधी' वो शय कि जिससे 'लेने' पे पकड़े जाते हैं

तो 'देने' से छूट जाते हैं और फिर मज़े उड़ाते हैं।

एक पूर्व प्रधान मंत्री ने एक बार कहा था कि विकास के लिए जो धन आबंटित होता है वह क्षेत्र के विकास में 25 टका तक भी नहीं पहुँचता। उसमें सेंध कहाँ लगी? एक अंग्रेज़ी किताब मशहूर हुई थी 'हू मूव्ड माई चीज'। देश के विकास कार्यों में लगे 'ज़िम्मेदार' ही बताएँ। लेकिन ग़रीब आँकड़े देख कर हैरान है। अरे! हम 11 वीं से पाँचवीं और देखते- देखते चौथी अर्थव्यवस्था हो गए। उसे तो 'बजट के हलुए' की खुशबू तक नहीं मिली। तब इस बात का अहसास हुआ कि हम कितने 'स्वतंत्र' हैं।

एक बार कलेंडर में छपाई की छोटी सी त्रुटि रह गयी। 'शिक्षा' विभाग की छुट्टियाँ की जगह 'भिक्षा' विभाग की छुट्टियाँ छप गया। ग़ौर करने पर लगा कि बात तो कुछ हद तक सही ही है। देश और राज्यों के बजट का बहुत मामूली – सा हिस्सा अमूमन 3-5 टका ही शिक्षा विभाग को आबंटित होता है। उसमें से अधिकतर हिस्सा कर्मचारियों के वेतन- भत्ते और पेंशन (जिसे वे हमेशा अपर्याप्त ही मानते हैं) में ख़र्च हो हो जाता है। सरकारी स्कूलों के भवनों की हालत विशेष रूप से गाँवों में जर्जर होती है। बरसात में उनके कमरे ढह जाते हैं और कुचल जाते हैं माता-पिता व बच्चों के भविष्य के सपने।

बोधकथा

ये भी रहेगा नहीं

ये भी रहेगा नहींएक बार एक राजा ने अपने राज्य के एक ज्ञानी और फकीर से कहा, 'मुझे जीवन का कोई ऐसा सत्य बताएं जो हमेशा एक जैसा रहे और मुझे हर परिस्थिति में संभाल सके। फकीर ने एक छोटी सी अंगूठी निकाली और राजा को दी। उस पर लिखा था– 'ये भी रहेगा नहीं' (यह समय भी नहीं रहेगा)। फकीर ने कहा, 'हे राजन! इस वाक्य को हमेशा याद रखना। जब आप बहुत दुखी हों, इसे पढ़ना, दु:ख कम हो जाएगा। जब आप बहुत प्रसन्न हों, तब भी इसे पढ़ना, आपका घमंड टूट जाएगा। जीवन में सुख हो या दु:ख, कोई भी परिस्थिति सदा एक जैसी नहीं रहती। बुरा समय हो या अच्छा समय, वह बदलता जरूर है। इसलिए हर परिस्थिति में धैर्य रखना चाहिए। अगर आप ऐसी और भी बोध कथाएं पढ़ना चाहते हैं या किसी खास विषय (जैसे संतोष, मेहनत या बुद्ध की शिक्षा) पर कहानी चाहते हैं, तो मुझे बताएं।

कविता/देशगान

गोलेन्द्र पटेल

देश न केवल भू-
धरा, जनमन का
विश्वास।
संस्कृति, समता,
चेतना, इसका दिव्य
प्रकाश।
माटी, भाषा, लोक
से, जिसका जुड़ा सनेह।
वही सच्चा देशप्रेम,
निर्मल मन का नेह॥

प्रेम बने जब कर्ममय,
जागे सत्य-विवेक।
देशभक्ति तब खिल
उठे, सेवा-धर्म अनेक।
सीमा से संसद
तलक, कर्तव्य रहे
प्रधान।
श्रम, ईमान, विज्ञान
से, बढ़ता देश-मान॥

मातृभूमि की धूल में,
जीवन का आधार।
जन्म-जन्म का जुड़
गया, इससे आत्म-
संस्कार।
न्याय, समता, बंधुत्व
से, सजता राष्ट्र-विहार।
संविधान की छाँह में,
खिलता जन-संसार॥

द्वेष नहीं, सद्भाव हो,
मानव हो पहचान।
अपना देश महान हो,
हो जग का कल्याण।
प्रेम, त्याग, कर्तव्य
से, रचें नया इतिहास।
वन्दे मातरम् गूँजता,
भारत रहे प्रकाश॥

व्यंग्य केसरी

राग देशभक्ति का..

डॉ मुकेश असीमित

देश में इन दिनों प्रेम का नया मौसम आया है-देशप्रेम का। यह प्रेम पहले भी था, मगर थोड़ा शर्मीला था। साल में दो-चार बार ही सार्वजनिक रूप से दिखाई देता था। कभी 15 अगस्त और 26 जनवरी को स्कूल के भोंपू से 'मेरे देश की धरती...' बनकर निकलता, तो कभी बारात में 'ये देश है वीर जवानों का' पर नागिन डांस के बीच अचानक राष्ट्रप्रेम जाग उठता था।

अब जमाना बदल गया है। देशप्रेम को शर्माना छोड़ना पड़ा है। उसे रग-रग में इंजेक्ट किया जा रहा है। कोरोना की वैक्सीन का वितरण भी शायद इतनी तत्परता से नहीं हुआ होगा, जितनी तेजी से देशभक्ति की बूस्टर डोज बाँटी जा रही है।

इस वैक्सीन की खासियत यह है कि यह बीमारी ठीक करे न करे, बीमारी का ध्यान जरूर भटका देती है।

बेरोजगारी का भूत चढ़ गया? देशभक्ति का झाड़ा लगवाइए।महँगाई डायन खाए जा रही है? देशभक्ति का ताबीज पहनिए।पानी नहीं आ रहा? भारत माता की जय बोलिए।घर में आटा गीला हो गया? देशभक्ति से अभिमंत्रित फूँक मारिए-शायद कंगाली का गीला आटा सूख जाए ।

राजनीति ने आखिर हमारी पुरातन चिकित्सा पद्धति का महत्व समझ लिया है। हर मर्ज का एक ही रामबाण इलाज। थोड़ी सी देशभक्ति का चूरन बंटवा दो ।

वर्षों से गोदाम में पड़ी देशभक्ति की तोपों को भी झाड़-पोंछकर निकाल लिया गया है। तोप तैयार है, गोला-बारूद भरपूर है, बस दुश्मन चाहिए।

मैंने पूछा- 'दुश्मन कौन?

बताया गया- 'अपने बीच ही बहुत हैं।

पहचान कैसे होगी?

बहुत सरल है। जिसके पास हमारी बताई हुई देशभक्ति का आईडी कार्ड नहीं है, पहले उसी पर शक कीजिए। जो सवाल पूछे, उसकी देशभक्ति की एक्सपायरी डेट जाँचिए। फिर भी कुछ गोला-बारूद बच जाए तो उसे बेरोजगारी, महँगाई, गरीबी जैसी चिंताओं की तरफ दाग दीजिए। कम से कम धमाके में उनकी आवाज तो सुनाई नहीं देगी।

भक्तिकाल लौट आया है, बस प्रेम की परिभाषा बदल गई है। युवा से कहा गया- 'देश से प्रेम करो।'

युवा बेचारा घबरा गया- 'कैसे करें?

उसे समझाया गया- 'बहुत आसान है यार ।हाथ में तिरंगा लो, 'भारत माता की जय' बोलो, सेल्फी खींचो, सोशल मीडिया पर डालो और चार लोगों को टैग कर दो।'

वाह! सदियों में पहली बार देशभक्ति का सिलेबस इतना छोटा हुआ है। कौन कह रहा है कि देश के लिए जान दो यार ! फिलहाल डीपी बदलकर काम चलाओ।

अब देशभक्ति की खरपतवार हर तरफ उग आई है। टोपी पर देशभक्ति, टी-शर्ट पर देशभक्ति, मोबाइल कवर पर देशभक्ति और न्यूज चैनल की बहस में तो देशभक्ति की ऐसी फसल लहलहा रही है कि बाकी मुद्दों को धूप ही नहीं मिल रही।

बाजार भी अवसर पहचान गया। जगह-जगह 'देशभक्ति की दुकान' खुल गई है। वहाँ भावना किलो के भाव उपलब्ध है। पैकेट पर तिरंगा लगा दीजिए, माल स्वतः पवित्र और प्रीमियम वाला हुई जा रहा है ।

फल भी रंग देखकर तय होने लगे हैं-कौन-सा रंग ज्यादा देशभक्त है, कौन कम। कुछ लोग तो तिरंगे की चादर इतनी मजबूती से ओढ़े हैं कि उसके नीचे दबा नंगइ पण दिखाई ही नहीं देता । साल भर गरीब का हक मारो, रिश्वत खाओ, कमजोर को दबाओ और फिर तिरंगा हाथ में लेकर देश भक्ति कि गंगा में एक दुबकी लगा आओ..कसम से सारे पाप उड़न छु । मैं अपनी देशभक्ति को लेकर परेशान हूँ।

समय पर टैक्स भर देता हूँ ,चालान कि सेल्फी भी नहीं लगाता सोशल मीडिया पर ।बिजली का बिल भरता हूँ, जबकि बिजली कभी-कभी ही दर्शन देती है। पानी का बिल भी भरता हूँ, जबकि नल कई बार पानी से ज्यादा हवा देता है। ट्रैफिक नियम मान लेता हूँ, सड़क पर कचरा नहीं फेंकता। यार ये सब कोई देशभक्ति न कहलाएगी ..मेरे दोस्त ने चेताया मुझे द्य एक तिरंगा रैली में भाग लेने का फरमान वो हाथ में लिए थाद्य

बेरोजगार युवा नौकरी माँगेगा तो उसके हाथ में देशभक्ति का झुनझुना थमा दिया जाएगा- 'लो बेटा, इसे बजाओ। 'इसकी मधुर आवाज में बेरोजगारी की कर्कश ध्वनि कुछ देर सुनाई नहीं देगी।

यही खतरा है। देशभक्ति जब कर्तव्य से निकलकर प्रदर्शन में और प्रेम से निकलकर प्रमाणपत्र में बदलने लगे, तो लोकतंत्र की सड़क पर गड्ढे बनने लगते हैं। फिर गाड़ी धचक्के खाती है और हम गड्ढा भरने के बजाय उसके किनारे तिरंगा लगाकर फोटो खिंचवा लेते हैं।

तो फिलहाल कैमरा खोलिए, तिरंगा उठाइए और मुस्कराइए-

भारत माता की जय!

इतिहास

भारत का स्वतंत्रता दिवस हर वर्ष 15 अगस्त को मनाया जाता है। सन् 1947 में इसी दिन भारत के निवासियों ने ब्रिटिश शासन से स?वतंत्रता प्राप्त की थी। यह भारत का राष्ट्रीय त्यौहार है।

प्रतिवर्ष इस दिन भारत के प्रधानमंत्री लाल किले की प्राचीर से देश को सम्बोधित करते हैं। 15 अगस्त 1947 के दिन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने, दिल्ली में लाल किले के लाहौरी गेट के ऊपर, भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराया था।[1] महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में लोगों ने काफी हद तक अहिंसक प्रतिरोध और सविनय अवज्ञा आंदोलनों में हिस्सा लिया। स्वतंत्रता के बाद ब्रिटिश भारत को धार्मिक आधार पर विभाजित किया गया, जिसमें भारत और पाकिस्तान का उदय हुआ। विभाजन के बाद दोनों देशों में हिंसक दंगे भड़क गए और सांप्रदायिक हिंसा की अनेक घटनाएं हुईं। विभाजन के कारण मनुष्य जाति के इतिहास में इतनी ज्यादा संख्या में लोगों का विस्थापन कभी नहीं हुआ।

छत्तीसगढ़ पुलिस द्वारा 'साइबर जागृति अभियान' का आयोजन

विश्व केसरी

15 अगस्त से 02 अक्टूबर, 2026 तक चलेगा अभियान

कांकेर (रोहित श्रीवास्तव)। पुलिस अधीक्षक निखिल राखेचा के निर्देशन तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आकाश श्रीश्रीमाल,सायबर नोडल अधिकारी व अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक योगेश साहू के मार्गदर्शन में तथा उप पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) सुश्री विंकेश्वरी पिंदे के पर्यवेक्षण में 'सायबर काईम से आजादी अभियान' को संचालित किया जा रहा है। 15 अगस्त 1947 को, करोड़ों देशवासियों के प्रयासों से देश को मिली आजादी के भाव से प्रेरित यह अभियान,साइबर क्राइम के विरुद्ध एकजुटता से जागरूकता लाने और छत्तीसगढ़ को साइबर क्राइम मुक्त बनाने का अभिनव प्रयास है। साइबर क्राइम के विरुद्ध निरंतर चलाए जा रहे अभियानों के क्रम में,छत्तीसगढ़ पुलिस का 'साइबर जागृति अभियान' देश के सबसे अनोखे,इनोवेटिव और ट्रेंडी अभियानों में से एक है। इस अभियान की मुख्य थीम है 'साइबर जागृति की एक सेल्फी '। बड़ी संख्या में राज्यवासी,छत्तीसगढ़ पुलिस और संबंधित जिला पुलिस के सोशल मीडिया हैंडल्स में जारी लिंक को क्लिक कर या त्त्क्र ष्थ्स्त्र्द्व को स्कैन कर,जागरूकता के संदेश वाली 'सेल्फी फ्रेम 'में अपनी सेल्फी लेकर,उस सेल्फी को स्वयं के सोशल मीडिया हैंडल्स में पोस्ट करेंगे। प्रदेश भर के लाखों लोग,छत्तीसगढ़ पुलिस की जागरूकता संदेश वाली 'सेल्फी फ्रेम' को सोशल मीडिया में शेयर करेंगे तो,साइबर क्राइम के प्रति जागरूकता का संदेश उनके फॉलोअर्स और फ्रेंड्स तक पहुंचेगा,जिससे अधिक से अधिक लोग साइबर क्राइम के प्रति जागृत होंगे। इस अभियान का उद्देश्य,जनभागीदारी से साइबर क्राइम के विरुद्ध जागरूकता का संदेश पहुंचाना है। सोशल मीडिया के माध्यम से यह संदेश, सरल और प्रभावी ढंग से अधिक से अधिक लोगों तक तेजी से पहुंच सकेगा । 'साइबर जागृति अभियान' का शुभारंभ आज राजधानी रायपुर में मुख्यमंत्री एवं गृहमंत्री द्वारा किया गया। वहीं,कांकेर जिले में आज प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए पुलिस अधीक्षक निखिल राखेचा ने 'साइबर जागृति अभियान' की लिंक एवं त्त्क्र कोड जारी कर अभियान का शुभारंभ किया। पुलिस अधीक्षक ने क्यूआर कोड स्वयं अपने मोबाइल में स्कैन कर, अपनी सेल्फी ली,इसके पश्चात उन्होंने स्वयं सोशल मीडिया में अपनी सेल्फी फ्रेम को पोस्ट किया। इस अवसर पर उन्होंने, जिलावासियों को अभियान के विषय में जानकारी दी और लोगों को विशेषकर सामाजिक/व्यापारिक संगठनों,संस्थानों के पदाधिकारियों,सदस्यों एवं गणमान्य नागरिकों,सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर्स, प्रोफेशनल्स एवं कलाकारों को अधिक से अधिक संख्या में छत्तीसगढ़ पुलिस द्वारा जारी लिंक क्लिक कर या क्यूआर कोड स्कैन कर, सेल्फी लेने और उसे सोशल मीडिया हैंडल्स में शेयर करने की अपील की है। अभियान के सार के विषय में जानकारी देते हुए, पुलिस अधीक्षक ने कहा कि 'जिस तरह देश की आजादी के लिए करोड़ों देशवासी एकजुट होकर लड़े थे,उसी तरह हम सभी को साइबर क्राइम के विरुद्ध, साथ मिलकर, जिलावासियों को जागृत करना होगा और उन्हें साइबर सुरक्षित बनाना होगा। उन्होंने आमजनों से अभियान को सफल बनाने की अपील करते हुए कहा कि 'साइबर जागृति अभियान ', के लिए, जागरूकता की एक सेल्फी 'लें,उस सेल्फी को सोशल मीडिया में शेयर करें और साइबर अपराध को रोकने,कांकेर जिला पुलिस का सहयोग करें। 'साइबर जागृति अभियान' अभियान को जन-जन तक पहुँचाने,कांकेर जिला पुलिस ने जिले में अभियान को एक व्यापक स्वरूप दिया है। 15 अगस्त से 02 अक्टूबर तक यानि 07 सप्ताह में प्रदेश भर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

पहले सप्ताह:- डिजिटल सतर्कता और बुनियादी सुरक्षा के लिए स्कूल/कॉलेजों में अभियान।

दूसरे सप्ताह:- वित्तीय धोखाधड़ी और क्क्ष् सुरक्षा पर बैंकिंग एवं वित्तीय संस्थानों में अभियान।

तीसरे सप्ताह:- डिजिटल अरेस्ट और फर्जी कॉल के विषय पर वरिष्ठ नागरिकों के संग टाउन हाल का आयोजन।

चौथे सप्ताह: स्मार्टफोन प्राइवेसी और सेफ ब्राउजिंग पर महिला कॉलेजों, सामुदायिक समूहों के बीच अभियान।

पांचवे सप्ताह:- जॉब फ्रॉड और फिशिंग को लेकर युवाओं को जागरूक करने रोजगार कार्यालयों, आईटीआई और कौशल

विकास केंद्रों में कार्यक्रम का आयोजन।

छठवें सप्ताह: डेटा प्राइवेसी और सोशल मीडिया की सीमाओं के विषय पर अभियान

सातवें सप्ताह:- ग्राम पंचायतों, निकायों में गांधी जयंती के उपलक्ष्य में साइबर मुक्त छत्तीसगढ़ का 'संकल्प' अभियान

अभियान का समापन:- 02 अक्टूबर 2026 गांधी जयंती के दिन 'साइबर जागृति अभियान' का समापन किया जायेगा।

चांदी भंडार लाया है रक्षाबंधन पर आकर्षक सिल्वर कलेक्शन

रायपुर। रक्षाबधन सिर्फ एक त्योहार नहीं, बल्कि अपनों के बीच प्यार और भरोसे के साथ एक रस्म से कहीं आगे बढ़कर है, जो हर साल रिश्तों को और भी मजबूत बनाता है। इस ख़ास मौके को और भी यादगार बनाने के लिए, 'चांदी भंडार' 92.5 स्टर्लिंग सिल्वर (शुद्ध चांदी) से तराशी गई राखियां और ब्रेसलेट का एक शानदार कलेक्शन लेकर आया है। यह कलेक्शन हर भाई-बहन और प्रियजन के लिए एक परफेक्ट गिफ्टिंग ऑप्शन है। इसमें बेहतरीन स्टेटमेंट पीसेस से लेकर सादगी पसंद लोगों के लिए मिनिमल डिज़ाइन वाली राखियां शामिल हैं, साथ ही ऐसे सिल्वर ब्रेसलेट भी हैं जिन्हें त्योहार बीत जाने के बाद भी एक खूबसूरत याद के तौर पर पहना जा सकता है। इस कलेक्शन में त्योहार के हर्षोल्लास से साथ हमारी सासंकृतिक झलक भी नज़र आती है। भगवान जगन्नाथ से प्रेरित राखियां इसका मुख्य आकर्षण हैं, जबकि बच्चों के के लिए खास डिज़ाइन भी पेश किए गए हैं, ताकि हर उम्र के लोगों के लिए यह त्योहार खास बन सके। जेंट्स भी 'चांदी भंडार' के एक्सक्लूसिव 'अमोघ' कलेक्शन का भी रुख कर सकते हैं। भाइयों और प्रियजनों को शानदार उपहार देने के लिए इसमें सिल्वर एक्सेसरीज़ की एक विस्तृत रेंज मौजूद है, जिसमें ट्रेंडी चेन, पेंडेंट, अंगूठियां और ब्रेसलेट शामिल हैं। इसके साथ ही, चांदी भंडार 92.5 स्टर्लिंग सिल्वर ज्वेलरी की भी एक बड़ी रेंज लाया है, जिसमें खूबसूरत इयररिंग्स, चूड़ियां, अंगूठियां, ब्रेसलेट और पायल शामिल हैं, जो हर किसी के लिए रक्षाबंधन के तोहफे को बेजोड़ बनाते हैं। वहीं, बच्चों के खास पलों को सेलिब्रेट करने के लिए 'ट्रेज़र्स' कलेक्शन में बड़ी ही बारीकी से तैयार किए गए चांदी के आभूषण मौजूद हैं।

ज्वेलरी और पारंपरिक चांदी के बर्तनों से आगे बढ़ते हुए, चांदी भंडार ने अपने लाइफस्टाइल सेगमेंट को भी एक नया रूप दिया है। इसमें सिल्वर-एक्सेंट वाले वाइन ग्लास, बोतलें और बेहद आकर्षक टी-सेट शामिल हैं। इन्हें इस तरह डिज़ाइन किया गया है कि चांदी के हेल्थ बेनिफिट्स को आपकी रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बनाया जा सके, साथ ही ये एक बेहतरीन गिफ्ट भी साबित हों। इस प्रीमियम रेंज में चांदी की नक्काशी वाली लकड़ी की ट्रे और शानदार लाइफस्टाइल पीसेस भी शामिल हैं, जो आपके घर की खूबसूरती में चार चांद लगाते हैं और किसी भी मौके पर गिफ्ट देने के लिए परफेक्ट हैं।

CGMSC पर लगा 1 लाख का जुर्माना निरस्त

सुप्रीम कोर्ट ने छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के आदेश को पलटा

रायपुर । छत्तीसगढ़ मेडिकल सर्विसेज कॉर्पोरेशन ्की कार्य शैली और नियम आधारित टेंडर प्रक्रिया पर सुप्रीम कोर्ट ने अपनी मुहर लगा दी है। अदालत ने छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के उस फैसले को रद्द कर दिया है, जिसमें CGMSC पर 1 लाख का जुर्माना (हर्जाना) लगाया गया था। इस फैसले से साफ हो गया है कि कंपनी की टेंडर प्रक्रिया पूरी तरह साफ-सुथरी और नियमों के हिसाब से थी।

पूरा मामला यह था कि टेंडर से जुड़े एक मामले में एक ठेकेदार ने हाईकोर्ट में शिकायत की थी, जिसके बाद हाईकोर्ट ने CGMSC पर 1 लाख का जुर्माना लगा दिया था। इसके खिलाफ CGMSC सुप्रीम कोर्ट गया। सुप्रीम कोर्ट ने अपनी सुनवाई में पाया कि निगम की तरफ से कोई गलती नहीं हुई थी।

अदालत ने माना कि ठेकेदार ने फॉर्म में जो अपनी ऑफिशियल ईमेल आईडी दी थी, उसी पर समय रहते सारी जरूरी जानकारियां और मैसेज भेजे गए थे। ठेकेदार ने खुद तय समय में जवाब नहीं दिया, इसलिए नियमों के तहत ही उसे टेंडर से बाहर किया गया था।

सुप्रीम कोर्ट ने माना कि पूरे मामले में ष्टत्नरूस्ष्ट का काम बिल्कुल सही था और उस पर लगा 1 लाख का जुर्माना ग़लत है। इस फैसले से साबित हो गया है कि CGMSC अपने सभी टेंडर और खरीदारी में पूरी ईमानदारी और नियमों का पालन करता है। निगम ने कहा है कि वह आगे भी राज्य की स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए ऐसे ही पूरी ईमानदारी के साथ काम करता रहेगा।

ऑपरेशन नारकोस के तहत RPF की बड़ी कार्रवाई, 5.24 करोड़ का गांजा जब्त

विश्व केसरी

बिलासपुर। (अमित मिश्रा) दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में नशीले पदार्थों की तस्करी के खिलाफ रेलवे सुरक्षा बल ने 'ऑपरेशन नारकोस' के तहत अभियान तेज कर दिया है। यात्री ट्रेनों और रेलवे परिसरों में विशेष निगरानी रखते हुए RPF लगातार नशीले पदार्थों की तस्करी करने वालों के खिलाफ कार्रवाई कर रही है।

RPF के अनुसार, वर्ष 2026 में अब तक 104 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। इनके कब्जे से कुल 1048.086 किलोग्राम मादक पदार्थ बरामद किया गया है, जिसकी अनुमानित कीमत करीब 5.24 करोड़ रुपये है। जब्त मादक पदार्थों के संबंध में आरोपियों के खिलाफ नियमानुसार कानूनी कार्रवाई की गई है।

नशीले पदार्थों की तस्करी पर प्रभावी रोक लगाने के लिए दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के बिलासपुर, रायपुर और नागपुर—तीनों मंडलों में स्पेशल टास्क टीमों का गठन किया गया है। ये टीमें ट्रेनों में संदिग्ध यात्रियों और सामान पर विशेष नजर रखते हुए लगातार चेकिंग अभियान चला रही हैं। RPF ने विशेष रूप से ओडिशा की ओर से आने वाली ट्रेनों पर निगरानी बढ़ाई है। इनमें पुरी-अहमदाबाद एक्सप्रेस (12843), उत्कल एक्सप्रेस (18477), समता एक्सप्रेस (12807), टिटलागढ़-बिलासपुर पैसेंजर (58213) और पुरी-गांधीधाम एक्सप्रेस (12994) प्रमुख रूप से शामिल हैं।

RPF अधिकारियों के मुताबिक, इन ट्रेनों में नियमित रूप से ड्राइव और सघन जांच अभियान चलाया जा रहा है। संदिग्ध गतिविधियों की सूचना मिलने पर तत्काल कार्रवाई की जा रही है।

'ऑपरेशन नारकोस' के जरिए RPF का फोकस रेलवे को मादक पदार्थों की तस्करी के लिए इस्तेमाल होने से रोकने के साथ-साथ तस्करी के नेटवर्क पर प्रभावी कार्रवाई करना है। अभियान आगे भी लगातार जारी रहेगा।

हर घर तिरंगा अभियान के तहत 28वीं वाहिनी ने निकाली भव्य मोटरसाइकिल रैली

विश्व केसरी

तिरंगा लहराते जवानों ने दिया देशभक्ति का संदेश, स्कूली बच्चों ने भी बढ़-चढ़कर लिया हिस्सा

अंतागढ़ (राकेश गुप्ता)। आजादी का अमृत महोत्सव के तहत 'हर घर तिरंगा' अभियान को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से 28वीं वाहिनी, सशस्त्र सीमा बल, अंतागढ़ द्वारा 14 अगस्त को भव्य एवं प्रेरणादायक मोटरसाइकिल रैली का आयोजन किया गया। रैली के माध्यम से लोगों को राष्ट्रध्वज के सम्मान, राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति का संदेश दिया गया। मोटरसाइकिल रैली का शुभारंभ वाहिनी परिसर से हुआ। तिरंगा हाथों में लेकर जवान मोटरसाइकिलों पर सवार होकर नगर अंतागढ़ पहुंचे। रैली के दौरान जवानों ने 'भारत माता की जय', 'वंदे मातरम्' और 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' जैसे देशभक्ति के नारों के साथ वातावरण को राष्ट्रभक्ति से सराबोर कर दिया। सड़कों से गुजरते तिरंगा लहराते मोटरसाइकिलों के काफिले ने नगरवासियों का ध्यान आकर्षित किया और लोगों में देशप्रेम की भावना को और मजबूत किया। रैली का नेतृत्व श्री राजन राय, उप-कमांडेंट द्वारा किया गया। इस अवसर पर वाहिनी के वरिष्ठ अधिकारी एवं बलकर्मी तिरंगा लहराते हुए रैली में शामिल हुए। उप-कमांडेंट राजन राय ने बलकर्मियों को संबोधित करते हुए कहा कि देश सर्वोपरि है और प्रत्येक नागरिक का प्रथम कर्तव्य देश की एकता, अखंडता एवं स्वतंत्रता की रक्षा करना है। उन्होंने सभी से राष्ट्र के सम्मान, सुरक्षा और गौरव के लिए सदैव तत्पर रहने तथा देशभक्ति की भावना को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया।

रैली में स्कूली बच्चों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। हाथों में तिरंगा लेकर बच्चों ने 'भारत माता की जय' और 'वंदे मातरम्' के नारे लगाए। बच्चों के उत्साह और देशभक्ति ने कार्यक्रम को और अधिक प्रभावशाली बना दिया। इस अवसर पर 28वीं वाहिनी ने राष्ट्रप्रेम, अनुशासन और सेवा की भावना के साथ देश की एकता, अखंडता एवं गौरव की रक्षा करने का संकल्प दोहराया। रैली के माध्यम से नगरवासियों को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर तिरंगे के सम्मान और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी का संदेश दिया गया।

रिवर व्यू अटल स्मारक पर कविता की पंक्तियों को लेकर उठे सवाल, तथ्यात्मक संशोधन की मांग

विश्व केसरी

बिलासपुर (अमित मिश्रा)। रिवर व्यू में निर्माणाधीन अटल स्मारक पर अंकित कविता की पंक्तियों को लेकर साहित्यिक एवं ऐतिहासिक तथ्यात्मकता का सवाल उठाया गया है। शहर के वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यप्रेमी वर्ग ने नगर निगम बिलासपुर और स्मार्ट सिटी प्रबंधन से स्मारक पर अंकित पंक्तियों की तथ्यात्मक जाँच कराने का आग्रह किया है।

स्मारक पर अंकित पंक्तियां—

'क्या हार में, क्या जीत में,

किंचित नहीं भयभीत मैं।

कर्तव्य-पथ पर जो भी मिला,

यह भी सही, वो भी सही।। '

बताया गया है कि ये पंक्तियां प्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' की चर्चित कविता 'वरदान माँगूँगा नहीं' का हिस्सा हैं। हालांकि पूर्व प्रधानमंत्री एवं भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी अपने भाषणों में इन पंक्तियों का प्रभावशाली ढंग से उल्लेख करते रहे थे, लेकिन *पंक्तियों के मूल रचनाकार डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' हैं।

उद्घाटन से पहले संशोधन का आग्रह

मामले में नगर निगम एवं स्मार्ट सिटी प्रबंधन से आग्रह किया गया है कि यदि स्मारक पर इन पंक्तियों को अटल बिहारी वाजपेयी की मौलिक रचना के रूप में प्रदर्शित किया गया है, तो उद्घाटन से पूर्व इसकी आवश्यक तथ्यात्मक जाँच कर उचित संशोधन किया जाए।

इस संबंध में कहा गया है कि यह पहल किसी व्यक्ति या संस्था की आलोचना के उद्देश्य से नहीं, बल्कि बिलासपुर की प्रतिष्ठा, साहित्यिक विरासत और ऐतिहासिक तथ्यों की शुद्धता बनाए रखने की भावना से की जा रही है।

अटल जी के सम्मान में तथ्यात्मक शुद्धता जरूरी

निवेदन में कहा गया है कि अटल बिहारी वाजपेयी जी के प्रति सम्मान सदैव अटूट रहा है। ऐसे में उनके नाम से निर्मित स्मारक पर अंकित प्रत्येक तथ्य प्रामाणिक और सही होना चाहिए। साहित्यिक रचनाओं के रचनाकार का सही उल्लेख करना न केवल साहित्यकार के प्रति सम्मान है, बल्कि स्मारक की गरिमा बनाए रखने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम है।

चूड़ी फोड़ने की सार्वजनिक रस्म और दिखावे वाले भोज पर साहू समाज ने लगाई रोक, समाज सुधार की दिशा में सराहनीय पहल

विश्व केसरी

स्व. नरसीग साहू के दसगात्र से पहले जिला साहू संघ की महत्वपूर्ण बैठक, घर में ही होगी चूड़ी फोड़ने की रस्म; शांति भोज में परोसा जाएगा सादा भोजन

बेमेतरा (अनिल तिवारी)। समाज में व्याप्त अनावश्यक रूढ़ियों, दिखावे और सामाजिक खर्च को कम करने की दिशा में जिला साहू संघ ने एक महत्वपूर्ण एवं सराहनीय पहल की है। जिले के प्रमुख समाजसेवी स्वर्गीय नरसीग साहू के आगामी 16 अगस्त को होने वाले दसगात्र कार्यक्रम के पूर्व 13 अगस्त को ग्राम मंजगांव, परिक्षेत्र छीरहा, तहसील दाढ़ी स्थित उनके निवास पर जिला साहू संघ के पदाधिकारियों, महिला पदाधिकारियों, तहसील, परिक्षेत्र एवं ग्रामीण स्तर के प्रतिनिधियों तथा मृतक के परिजनों की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक जिला साहू संघ बेमेतरा के अध्यक्ष नारद साहू के साथ समाज के प्रमुख पदाधिकारियों की उपस्थिति में हुई। बैठक में स्वर्गीय नरसीग साहू के दसगात्र से जुड़ी सामाजिक परंपराओं और वर्तमान समय में उनमें आवश्यक सुधार को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। समाज सुधार की भावना से लिए गए निर्णयों को उपस्थित सभी लोगों ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया।

तालाब में सार्वजनिक रूप से चूड़ी फोड़ने की रस्म खत्म

बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि दसगात्र के दिन मृतक की पत्नी के हाथों की चूड़ी फोड़ने की रस्म अब सार्वजनिक रूप से तालाब में जाकर नहीं की जाएगी। यह रस्म घर में ही सादगीपूर्ण तरीके से संपन्न की जाएगी। समाज द्वारा लिए गए इस निर्णय को सामाजिक कुरीतियों और अनावश्यक सार्वजनिक रस्मों को समाप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। इस पहल से न केवल परिवार को अनावश्यक सामाजिक दबाव से राहत मिलेगी, बल्कि बदलते समय के अनुरूप समाज में सकारात्मक और व्यवहारिक बदलाव का संदेश भी जाएगा।

दिखावे और अनावश्यक खर्च से दूर रहेगा शांति भोज

बैठक में दसगात्र के अवसर पर आयोजित होने वाले शांति भोज को लेकर भी महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया। उपस्थित पदाधिकारियों एवं परिजनों ने सर्वसम्मति से तय किया कि शांति भोज में सादा भोजन ही परोसा जाएगा। भोज में अनावश्यक आडंबर, दिखावा और अतिरिक्त खर्च से बचने पर जोर दिया गया। समाज के पदाधिकारियों का मानना है कि किसी व्यक्ति के निधन के बाद परिवार पहले ही भावनात्मक पीड़ा से गुजरता है। ऐसे समय में सामाजिक परंपराओं के नाम पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ डालने के बजाय सादगी, संवेदना और सहयोग की भावना को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

समाज सुधार के संदेश के साथ आगे बढ़ने की पहल

जिला साहू संघ की यह पहल समाज में सकारात्मक बदलाव का संदेश देने वाली मानी जा रही है। पदाधिकारियों ने कहा कि परंपराओं का सम्मान करते हुए उन रस्मों और प्रथाओं में समय के अनुसार बदलाव जरूरी है, जिनसे परिवार पर अनावश्यक सामाजिक या आर्थिक दबाव पड़ता हो। सादगीपूर्ण संस्कार और सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति ही समाज को मजबूत बनाने की दिशा में सार्थक कदम है। इस अवसर पर उपस्थित समाजजनों ने स्वर्गीय नरसीग साहू के चित्र पर पुष्प अर्पित

सदाराम साहू बने जिला यूनियन पूर्व भानुप्रतापपुर के प्रबंधक संघ अध्यक्ष

अंतागढ़ (राकेश गुप्ता)। दिन शुक्रवार को प्रबंधक संघ जिला यूनियन पूर्व भानुप्रतापपुर की आवश्यक बैठक पुराना वनमण्डल कार्यालय भानुप्रतापपुर के सभा कक्ष में आयोजित की गई जहाँ कई महत्वपूर्ण विषयो पर चर्चा कर संघ के पुराने पदाधिकारीयों की कार्यकाल पुरे होने तथा नये पदाधिकारीयों का गठन करने की बात हुई इस बैठक में संघ की गतिविधियों के सफल संचालन के लिए सर्वसम्मति से प्रबंधक संघ के पदाधिकारियों का चयन किया गया जिसमे प्रबंधक संघ के अध्यक्ष पद पर सदाराम साहू को चुना गया वही उपाध्यक्ष सोनूराम ध्रुव, मदन भावसार संरक्षक युगलकिशोर पोटाई, मीडिया प्रभारी गोवर्धन नाग, कोषाध्यक्ष रूपजीराम बुई, उपकोषाध्यक्ष शिवलाल नरेटी अंकेक्षक लोकश्वर मरकाम, उप अंकेक्षक मेघनाथ बघेल सचिव रैसिंह नुरेटी सह सचिव दिनेश नरेटी को बनाया गया, नये पदाधिकारीयों के चयन पश्चात् जिला यूनियन प्रबंधक संघ के प्रबंधकों ने में हर्ष व्याप्त करते सभी नये पदाधिकारीयों को ग़ुलाल लगाकर बधाई दी।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं - 3) : शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुरः : -
Email ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र. /.34399..../ न. पा. नि. / जोन क्रं 3/2026
रायपुर, दिनांक 13-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34399
वार्ड का नाम 12 - कालीमाता वार्ड

एतद द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 12 स्थित भवन / भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई डी. **RPR330C0416A** जो की निगम अभिलेख श्री / श्रीमती **PANKAJ SHARMA** पिता/पति श्री श्रीमती **RAMAVTAR SHARMA** के नाम से दर्ज है जिसको श्री / श्रीमती 01. श्रीमती सीमा अग्रवाल, 02. श्री ओम प्रकाश अग्रवाल पिता / पति श्री/श्रीमती 01. पति ओम प्रकाश अग्रवाल, 02. पिता अशोक कुमार अग्रवाल ने मृत्यु प्रमाण पत्र सह पत्र, शपथ पत्र दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार / पंजीकृत पंजीकृत। विक्रय विलेख / / वंशानुक्रम / अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति / संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते है, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा /प्रस्तुत करे। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा / आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे '

श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं - 10) -:: अमलीडीह पानी टंकी, रायपुरः : -
Email ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र. /.33805..../ न. पा. नि. / जोन क्रं 10/2026
रायपुर, दिनांक 13-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 33805
वार्ड का नाम 50 पं. विद्याचरण शुक्ल वार्ड

एतद द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन /भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई. डी. **RPR446N00226** जो की निगम अभिलेख श्री / श्रीमती **SANGEETA SHRI-VASTAVA** पिता/पति श्री/श्रीमती **V.K. SHRIVASTAVA** के नाम से दर्ज है जिसको श्री / श्रीमती श्रीमती नेहा एच लालवानी पिता/पति श्री श्रीमती पति हरेश लालवानी ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार /पंजीकृत विक्रय विलेख / वंशानुक्रम / अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति / संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते है, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा / प्रस्तुत करे। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा / आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे '

श्री मोनेश्वर शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन (10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

भारतीय शेयर बाजार लगातार चौथे सत्र में लाल निशान में बंद, फार्मा और मेटल में रहा दबाव

विश्व केसरी

मुंबई। भारतीय शेयर बाजार शुक्रवार को लगातार चौथे कारोबारी सत्र में गिरावट के साथ बंद हुआ। दिन के अंत में सेंसेक्स 70.71 अंक या 0.09 प्रतिशत की गिरावट के साथ 78,009.25 और निफ्टी 29.85 अंक या 0.12 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 24,366 पर था।

शेयर बाजार पर दबाव बनाने का काम फार्मा और मेटल स्टॉक्स ने किया। सूचकांकों में निफ्टी फार्मा 0.90 प्रतिशत और निफ्टी मेटल 0.71 प्रतिशत की गिरावट के साथ लूजर्स थे। निफ्टी ऑटो 0.63 प्रतिशत, निफ्टी पीएसयू बैंक 0.57 प्रतिशत, निफ्टी कमोडिटीज 0.56 प्रतिशत, निफ्टी पीएसई 0.51 प्रतिशत, निफ्टी ऑयल एंड गैस 0.47 प्रतिशत और निफ्टी हेल्थकेयर 0.46 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुआ। वहीं, निफ्टी मीडिया 0.96 प्रतिशत, निफ्टी कंज्यूमर ड्यूरेबल्स 0.76 प्रतिशत, निफ्टी इन्फ्रा 0.28 प्रतिशत, निफ्टी सर्विसेज 0.09 प्रतिशत और निफ्टी कंजप्शन 0.04 प्रतिशत की तेजी के साथ बंद हुए।

सेंसेक्स पैक में भारती एयरटेल, अदाणी पोर्ट्स, आईसीआईसीआई बैंक, टाइटन, एमएंडएम, एचडीएफसी बैंक और इटरनल गेनर्स थे। एशियन पेंट्स, इंडिगो, एनटीपीसी, पावर ग्रिड, एसबीआई, एचसीएल टेक, टेक महिंद्रा, सन फार्मा, टाटा स्टील, ट्रेंट, आईटीसी, एक्सिस बैंक और टीसीएस लूजर्स थे। लार्जकैप के साथ मिडकैप और स्मॉलकैप में गिरावट देखी गई। निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 339.40 अंक या 0.53 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 63,782.15 और निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 136.55 अंक या 0.69 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 19,738.55 पर बंद हुआ।

जानकारों के मुताबिक, निवेशक एनर्जी की कीमतों और ग्लोबल बॉन्ड यील्ड के आउटलुक पर ज्यादा साफ जानकारी का इंतजार कर रहे हैं और इस कारण से बाजार एक सीमित दायरे बने हुए हैं। हालांकि, मांग में सुधार के चलते कंज्यूमर ड्यूरेबल्स और डिस्क्रिशनरी कंजम्पशन स्टॉक्स की अगुवाई में बाजार दिन के निचले स्तरों से सुधर कर बंद हुआ। उन्होंने आगे कहा कि तिमाही के दौरान उम्मीद से बेहतर कॉर्पोरेट नतीजों और घरेलू कारकों की वजह से 'बॉटम-अप' स्टॉक चुनने के तरीके के लिए मौके बन रहे हैं। इसके अलावा, रुपए में स्थिरता, भारत की 10-वर्षीय बॉन्ड यील्ड में कमी और एफआईआई की भागीदारी में धीरे-धीरे सुधार जैसे कारक मिलकर घरेलू अर्थव्यवस्था को सपोर्ट कर रहे हैं।

शिपरॉकेट के आईपीओ ड्राफ्ट पेपर में कई कानूनी और कर विवादों का खुलासा, कंपनी पर 4 आपराधिक मामले लंबित

विश्व केसरी

नई दिल्ली। शेयर बाजार में सूचीबद्ध होने की तैयारी कर रही ई-कॉमर्स लॉजिस्टिक्स और शिपिंग प्लेटफॉर्म शिपरॉकेट ने अपने ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) में कंपनी और उसकी सहयोगी इकाइयों से जुड़े कई लंबित कानूनी और कर विवादों का खुलासा किया है। ये मामले संभावित निवेशकों के लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं, क्योंकि वे कंपनी के जोखिम प्रोफाइल और भविष्य के कारोबारी प्रभावों को लेकर सवाल खड़े करते हैं।

डीआरएचपी के अनुसार, शिपरॉकेट वर्तमान में चार आपराधिक मामलों का सामना कर रही है, जिनमें कुल दावा राशि 5.39 करोड़ रुपए है। इसके अलावा कंपनी के खिलाफ दो अन्य आपराधिक कार्यवाहियां और सात कर (टैक्स) विवाद भी लंबित हैं। वहीं कंपनी की सहयोगी इकाइयों (सब्सिडियरी) के खिलाफ एक आपराधिक मामला और तीन कर संबंधी मामले चल रहे हैं, जिनमें कुल दावा राशि 2.34 करोड़ रुपए बताई गई है।

कंपनी के आईपीओ ड्राफ्ट पेपर में एक महत्वपूर्ण मामले का भी उल्लेख किया गया है, जो वर्ष 2022 में दर्ज किया गया था। इस मामले में शिपरॉकेट के सह-संस्थापक साहिल गोयल और गौतम कपूर, निदेशक अर्जुन सेठी तथा मुख्य वित्तीय अधिकारी कुमार तनमय को नामजद किया गया है। इस केस में धोखाधड़ी, आपराधिक विश्वासघात, जालसाजी और आपराधिक साजिश जैसे आरोप लगाए गए हैं। मामला फिलहाल अदालत में लंबित है और इस पर अंतिम फैसला आना बाकी है।

वित्तीय प्रदर्शन की बात करें तो डीआरएचपी के अनुसार, वित्त वर्ष 2025-26 में शिपरॉकेट का शुद्ध घाटा 79.2 करोड़ रुपए रहा, जो वित्त वर्ष 2024-25 के 74.4 करोड़ रुपए के घाटे से थोड़ा अधिक है। हालांकि कंपनी ने यह भी बताया कि यह स्थिति वित्त वर्ष 2023-24 की तुलना में काफी बेहतर है, जब उसे 595.1 करोड़ रुपए का भारी घाटा हुआ था।

राजस्व के मोर्चे पर कंपनी ने मजबूत वृद्धि दर्ज की है। वित्त वर्ष 2025-26 में परिचालन से प्राप्त आय 24 प्रतिशत बढ़कर 2,024.1 करोड़ रुपए हो गई। यह वृद्धि दर पिछले वित्त वर्ष के समान रही, जिससे कंपनी के कारोबार के विस्तार की गति बनी रहने का संकेत मिलता है।

'चिप्स टू स्टार्टअप्स' प्रोग्राम में 68,000 से अधिक छात्रों को मिला प्रशिक्षण, डिजाइन इकोसिस्टम भी मजबूत हुआ

विश्व केसरी

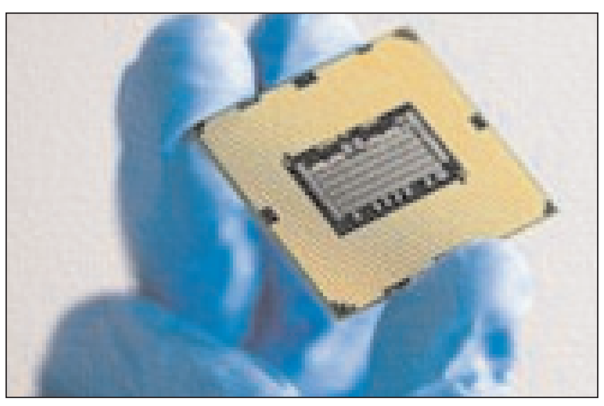

नई दिल्ली। भारत के सेमीकंडक्टर डिजाइन इकोसिस्टम को मजबूत करने के लिए अब तक 'चिप्स टू स्टार्टअप्स' (सी2एस) कार्यक्रम के तहत 68,000 से अधिक छात्रों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। यह जानकारी सरकार की ओर से शुक्रवार को दी गई।

केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आईटी राज्य मंत्री जितिन प्रसाद ने लोकसभा में एक सवाल के जवाब में बताया कि सी2एस कार्यक्रम का लक्ष्य सेमीकंडक्टर चिप डिजाइन के क्षेत्र में विशेषज्ञता रखने वाले बीटेक, एमटेक और पीएचडी स्तर के 85,000 उद्योग-तैयार पेशेवर तैयार करना है। सीटूएस कार्यक्रम के तहत देशभर के 332 शैक्षणिक संस्थानों को सिनॉप्सिस, कैडेंस, सीमेंस ईडीए, एन्सिस, कीसाइट, सिलवाको, रेनैसास-अल्टियम, एएमडी-जिलिंक्स, एस्टरक्वांटा, कॉम्पकार्टा, कैड्रे और एएमडी-जिलिंक्स जैसी कंपनियों के उन्नत इलेक्ट्रॉनिक डिजाइन ऑटोमेशन (ईडीए) टूल्स तक पहुंच प्रदान की गई है।

केंद्रीय मंत्री ने बताया कि भाग लेने वाले संस्थानों ने अब तक 254 चिप डिजाइन सफलतापूर्वक 'टेप-आउट' किए हैं। इनमें 175 डिजाइन एससीएल, मोहाली में 180एनएम टेक्नोलॉजी नोड पर और 79 डिजाइन विदेशों में स्थित सेमीकंडक्टर फाउंड्री में तैयार किए गए हैं। आंध्र प्रदेश में सी2एस कार्यक्रम के तहत 23 शैक्षणिक संस्थानों को उन्नत ईडीए टूल्स तक पहुंच प्रदान की गई है, जिनका कुल उपयोग 4.34 लाख से अधिक टूल घंटे रहा है।

प्रसाद ने आगे कहा कि ये परियोजनाएं फिलहाल डिजाइन और विकास के विभिन्न चरणों में हैं। इनके सेमीकंडक्टर फाउंड्री में टेप-आउट सहित प्रोटोटाइप वैलिडेशन की दिशा में आगे बढ़ने की उम्मीद है। इसके अतिरिक्त, इलेक्ट्रॉनिक्स हार्डवेयर टेक्नोलॉजी पार्क (ईएचटीपी) ने भारत के निर्यात-केंद्रित इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण इकोसिस्टम को मजबूत किया है।

ईएचटीपी इकाइयों की संख्या बढ़कर 79 हो गई है और वित्त वर्ष 2025-26 में इनका निर्यात 11,100 करोड़ रुपए से अधिक हो गया। ईएचटीपी योजना भारत से इलेक्ट्रॉनिक हार्डवेयर के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए 100 प्रतिशत निर्यात-उन्मुख योजना है। एसटीपीआई, ईएचटीपी योजना के तहत सिंगल-विंडो क्लीयरेंस सिस्टम के माध्यम से वैधानिक सेवाएं उपलब्ध कराता है। सरकार ने बताया कि ईएचटीपी योजना के तहत कोई फंड आवंटन नहीं किया जाता है। पात्र ईएचटीपी इकाइयों को मिलने वाले प्रोत्साहन और वित्तीय लाभ 'विदेश व्यापार नीति 2023' के प्रावधानों के तहत निर्धारित होते हैं।

अनन्या बिरला की स्वतंत्र माइक्रोफिन के आईपीओ प्रॉस्पेक्टस में कई जोखिमों का खुलासा, असुरक्षित कर्ज और बढ़ते नकद बहिर्वाह पर चिंता

विश्व केसरी

नई दिल्ली। अनन्या बिरला और एंटीमैटर मीडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रमोटेड स्वतंत्र माइक्रोफिन लिमिटेड ने सेबी यानी भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड के पास 3,000 करोड़ रुपए के प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के लिए मसौदा दस्तावेज (ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस-डीआरएचपी) दाखिल किए हैं। हालांकि, कंपनी द्वारा जमा किए गए दस्तावेजों में कई ऐसे कारोबारी, परिचालन और प्रशासनिक जोखिमों का उल्लेख किया गया है, जो संभावित निवेशकों का ध्यान आकर्षित कर सकते हैं।

डीआरएचपी के अनुसार, कंपनी की सबसे बड़ी चिंताओं में से एक उसकी असुरक्षित ऋणों पर अत्यधिक निर्भरता है। 31 मार्च 2026 तक कंपनी की कुल प्रबंधित परिसंपत्तियों (एयूएम) का 88.56 प्रतिशत हिस्सा असुरक्षित माइक्रोफाइनेंस ऋणों का था।

स्वतंत्र माइक्रोफिन मुख्य रूप से उन परिवारों को ऋण उपलब्ध कराती है जिनकी वार्षिक आय 3 लाख रुपए तक है। इस वर्ग के उधारकर्ता आर्थिक झटकों, आय में कमी और रोजगार संबंधी अनिश्चितताओं से अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित हो सकते हैं, जिससे ऋण वसूली का जोखिम बढ़ जाता है। कंपनी की एक अन्य बड़ी चुनौती नकद-आधारित वसूली प्रणाली है। डिजिटलीकरण के प्रयासों के बावजूद वित्त वर्ष 2025-26 में कुल संग्रह का 79.22 प्रतिशत हिस्सा नकद भुगतान के माध्यम से प्राप्त हुआ। कंपनी ने स्वीकार किया है कि नकद लेनदेन से धोखाधड़ी, चोरी, नकदी प्रबंधन में त्रुटियों और धन के दुरुपयोग जैसे जोखिम जुड़े रहते हैं।

मसौदा दस्तावेज में कंपनी की नकदी स्थिति को लेकर भी चिंता व्यक्त की गई है। वित्त वर्ष 2025-26 में परिचालन गतिविधियों में उपयोग हुई शुद्ध नकदी बढ़कर 5,392.6 करोड़ रुपए हो गई, जबकि एक वर्ष पहले यह केवल 427 करोड़ रुपए थी। यानी परिचालन नकद बहिर्वाह में करीब 1,160 प्रतिशत की तेज वृद्धि हुई है। कंपनी ने बताया कि इसका मुख्य कारण तेजी से बढ़ा ऋण वितरण और लोन बुक का विस्तार है। कंपनी ने यह भी संकेत दिया है कि भविष्य में ऋण कारोबार के विस्तार के साथ नकारात्मक परिचालन नकदी प्रवाह जारी रह सकता है।

भौगोलिक एकाग्रता भी कंपनी के लिए एक जोखिम के रूप में सामने आई है। स्वतंत्र माइक्रोफिन के कुल एयूएम का लगभग 68 प्रतिशत हिस्सा केवल पांच राज्यों बिहार, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक और मध्य प्रदेश में केंद्रित है।

2031 तक 11.8 लाख रोजगार और 1,380 नए जीसीसी स्थापित करने का लक्ष्य, राज्यों में निवेश आकर्षित करने की होड़ तेज : रिपोर्ट

विश्व केसरी

नई दिल्ली। भारत के विभिन्न राज्य वर्ष 2031 तक करीब 11.8 लाख रोजगार अवसर सृजित करने और लगभग 1,380 नए ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स (जीसीसी) स्थापित करने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहे हैं। रियल एस्टेट कंसल्टेंसी कंपनी सीबीआरई साउथ एशिया की एक रिपोर्ट के अनुसार, राज्यों द्वारा बनाई गई विशेष जीसीसी नीतियां इस क्षेत्र की तेज वृद्धि का प्रमुख आधार बन रही हैं।

रिपोर्ट में बताया गया है कि 2022 से लेकर 2026 की पहली छमाही तक जीसीसी ने भारत के शीर्ष नौ शहरों में 12.3 करोड़ वर्गफुट से अधिक कार्यालय क्षेत्र लीज पर लिया है। यह दर्शाता है कि वैश्विक कंपनियां भारत को अपने बैक-ऑफिस, रिसर्च, टेक्नोलॉजी और बिजनेस ऑपरेशन सेंटर स्थापित करने के लिए पसंदीदा गंतव्य के रूप में देख रही हैं। कर्नाटक, महाराष्ट्र, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों ने निवेश आकर्षित करने और जीसीसी क्षेत्र के विकास को गति देने के लिए विशेष नीतियां लागू की हैं। वहीं तेलंगाना, दिल्ली और तमिलनाडु ने भी इस क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं और नीति ढांचे तैयार किए हैं।

रिपोर्ट के अनुसार, कई अन्य राज्य भी जीसीसी क्षेत्र में अवसरों को देखते हुए नई नीतियों पर काम कर रहे हैं। केरल उन राज्यों में शामिल है जिसने जीसीसी नीति का मसौदा तैयार किया है और इस दिशा में आगे बढ़ रहा है।

भारत में कुल ऑफिस लीजिंग गतिविधियों में जीसीसी की हिस्सेदारी लगातार बढ़ रही है। वर्ष 2022 में यह हिस्सेदारी करीब 29 प्रतिशत थी, जो 2026 की पहली छमाही में बढ़कर लगभग 43 प्रतिशत पहुंच गई। यह संकेत देता है कि देश के वाणिज्यिक रियल एस्टेट बाजार में जीसीसी की भूमिका तेजी से मजबूत हो रही है।

सेक्टरवार आंकड़ों के अनुसार, प्रौद्योगिकी, बैंकिंग-फाइनेंशियल सर्विसेज एंड इंश्योरेंस (बीएफएसआई) तथा इंजीनियरिंग एवं विनिर्माण क्षेत्रों ने कुल लीजिंग गतिविधियों में 60 प्रतिशत से अधिक योगदान दिया।

इनमें टेक्नोलॉजी सेक्टर की हिस्सेदारी 23 प्रतिशत, बीएफएसआई की 22 प्रतिशत और इंजीनियरिंग एवं मैन्युफैक्चरिंग की 16 प्रतिशत रही। सीबीआरई इंडिया, दक्षिण-पूर्व एशिया, मध्य पूर्व एवं अफ्रीका के चेयरमैन एवं सीईओ अंशुमन मैगजीन ने कहा कि राज्य सरकारों द्वारा जीसीसी के लिए समर्पित नीतियां इतनी तेजी से अपनाना भारत के वाणिज्यिक रियल एस्टेट क्षेत्र में अभूतपूर्व बदलाव है। उन्होंने कहा कि अब जीसीसी केवल सेवा क्षेत्र का एक हिस्सा नहीं रह गए हैं, बल्कि राज्यों की आर्थिक रणनीति का महत्वपूर्ण स्तंभ बन चुके हैं।

अमेरिका-ईरान तनाव के बीच कीमती धातुओं में दबाव, सोने-चांदी की कीमतों में 1.6 प्रतिशत तक की गिरावट

विश्व केसरी

नई दिल्ली। अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ते तनाव के चलते हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन शुक्रवार को कीमती धातुओं में दबाव देखने को मिला। अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट द्वारा ईरान के खिलाफ अभूतपूर्व आर्थिक कदम उठाने की चेतावनी के बाद निवेशकों की धारणा प्रभावित हुई, जिसके चलते सोने और चांदी की कीमतों में 1 प्रतिशत तक की गिरावट दर्ज की गई।

मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर अक्टूबर डिलीवरी वाला सोना वायदा कारोबार के दौरान अपने पिछले बंद 1,53,466 से 1,543 रुपए यानी 1 प्रतिशत गिरकर 1,51,923 रुपए प्रति 10 ग्राम के इंट्रा-डे निचले स्तर तक पहुंच गया। हालांकि बाद में इसमें थोड़ी रिकवरी हुई और खबर लिखे जाने तक यह 0.64 प्रतिशत यानी 866 रुपए फिसलकर 1,52,480 रुपए प्रति 10 ग्राम पर ट्रेड करता नजर आया। कारोबार के दौरान सोने ने 1,53,200 रुपए का इंट्रा-डे उच्च स्तर भी छुआ, लेकिन ऊपरी स्तरों पर बिकवाली हावी रही।

इसी तरह सितंबर डिलीवरी वाली चांदी वायदा में भी कमजोरी देखने को मिली। चांदी का भाव कारोबार के दौरान 3,897 रुपए यानी 1.65 प्रतिशत गिरकर 2,31,550 रुपए प्रति किलोग्राम तक पहुंच गया, जो दिन का निचला स्तर रहा। हालांकि इसमें भी बाद में रिकवरी हुई और खबर लिखे जाने तक चांदी 0.83 प्रतिशत यानी 1,951 रुपए पर ट्रेड करती नजर आई। सत्र के दौरान चांदी ने 2,33,982 रुपए का उच्च स्तर भी छुआ, लेकिन बाजार में दबाव बना रहा।

बाजार विशेषज्ञों के अनुसार, कीमती धातुओं में यह कमजोरी उन खबरों के बाद आई है जिनमें अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने संकेत दिया कि अमेरिका ईरान के खिलाफ आर्थिक अलगाव और होर्मुज जलडमरूमध्य की नाकेबंदी जैसी रणनीतियों का सहारा ले सकता है। इन घटनाक्रमों ने वैश्विक वित्तीय बाजारों में अनिश्चितता बढ़ा दी है। तकनीकी विश्लेषकों का कहना है कि एमसीएक्स सोना हाल के उच्च स्तर 1,55,500 रुपए के आसपास से दबाव में आया है और फिलहाल 1,52,500 रुपए के करीब कारोबार कर रहा है। उनके मुताबिक 1,53,000 से 1,53,500 रुपए का दायरा तत्काल रेजिस्टेंस के रूप में काम कर सकता है।

भारत को वित्त वर्ष 27 में मजबूत एफसीएनआर रिस्पॉन्स के चलते 95 अरब डॉलर तक का पूंजी प्रवाह मिलने की संभावना: रिपोर्ट

विश्व केसरी

नई दिल्ली। मजबूत फॉरेन करेंसी नॉन-रेजिडेंट (बैंक) एफसीएनआर (बी) इनफ्लो और भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा विदेशी पूंजी आकर्षित करने के लिए उठाए गए कदमों से वित्त वर्ष 2026-27 में भारत में 90-95 अरब डॉलर का पूंजी प्रवाह आने की उम्मीद है। इससे भारत का भुगतान संतुलन (बीओपी) 64 अरब डॉलर के सरप्लस में पहुंच सकता है। यह जानकारी एक रिपोर्ट में दी गई।

केयरएज रेटिंग्स की रिपोर्ट के अनुसार, एजेंसी ने एफसीएनआर (बी) प्रवाह का अनुमान बढ़ाकर करीब 80 अरब डॉलर कर दिया है। इसके अलावा, बाहरी वाणिज्यिक उधारी (ईसीबी) और विदेशी मुद्रा में बाहरी स्रोतों से आने वाले प्रवाह के 10-15 अरब डॉलर रहने की उम्मीद है। इसके परिणामस्वरूप, भारत के पूंजी खाते का सरप्लस अब बढ़कर करीब 108 अरब डॉलर होने का अनुमान है, जबकि पिछले वर्ष यह महज 2 अरब डॉलर था। रिपोर्ट में कहा गया है कि वित्त वर्ष 2027 में भारत का बीओपी 64 अरब डॉलर के सरप्लस में रहने का अनुमान है, जबकि वित्त वर्ष 2026 में 23.6 अरब डॉलर और वित्त वर्ष 2025 में 5 अरब डॉलर का घाटा रहा था।

रेटिंग एजेंसी ने कहा, 'यह भारत की बाहरी स्थिति में महत्वपूर्ण मजबूती को दर्शाएगा और वैश्विक अस्थिरता के खिलाफ एक महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच प्रदान करेगा।'

5 जून 2026 को घोषित अन्य नीतिगत उपायों के साथ एफसीएनआर (बी) जमा, बाहरी वाणिज्यिक उधारी (ईसीबी) और विदेशी मुद्रा में बाहरी उधारी (ओएफसीबी) के लिए रियायती स्वैप विंडो को निवेशकों से मजबूत रिस्पॉन्स मिला है। एजेंसी ने बताया कि इन उपायों के जरिए 5 जून से 31 जुलाई 2026 के बीच कुल 40.8 अरब डॉलर आकर्षित हुए हैं। इनमें एफसीएनआर (बी) प्रवाह 36.7 अरब डॉलर रहा, जबकि ईसीबी और ओएफसीबी ने मिलकर 4.1 अरब डॉलर का योगदान दिया।

वर्तमान में बड़े बैंक एफसीएनआर जमा पर 6.0-6.5 प्रतिशत की ब्याज दर दे रहे हैं, जबकि कुछ छोटे और नए बैंक करीब 7 प्रतिशत तक की दर की पेशकश कर रहे हैं।

15 अगस्त की रंगोली हो ऐसी कि देखते रह जाएं लोग

15 अगस्त आते ही स्कूल, कॉलेज और ऑफिस में देशभक्ति का माहौल नजर आने लगता है. कहीं तिरंगा सजता है, कहीं देशभक्ति गीतों की तैयारी होती है और कहीं रंगोली के जरिए आजादी के पर्व को खास बनाने की कोशिश होती है. अगर इस बार आप भी स्वतंत्रता दिवस पर रंगोली बनाने की सोच रहे हैं, लेकिन डिजाइन को लेकर उलझन में हैं, तो परेशान होने की जरूरत नहीं. कुछ रंगोली डिजाइन ऐसे हैं, जिन्हें देखकर भले ही वे मुश्किल लगें, लेकिन सही आउटलाइन और थोड़ी सी प्रैक्टिस के साथ आसानी से बनाए जा सकते हैं. तिरंगे से लेकर मोर, कमल और भारत माता तक, इन डिजाइनों में देशप्रेम की खूबसूरत झलक दिखाई देती है.

15 अगस्त पर रंगोली क्यों बनती है खास? स्वतंत्रता दिवस की सजावट में रंगोली की अपनी अलग जगह है. स्कूल के मंच के सामने, ऑफिस के एंट्रेंस या कॉलेज के कार्यक्रम स्थल पर बनाई गई रंगोली पूरे माहौल को उत्सव जैसा बना देती है. खासकर जब इसमें केसरिया, सफेद और हरे रंग के साथ अशोक चक्र का इस्तेमाल किया जाए, तो डिजाइन सीधे स्वतंत्रता दिवस की थीम से जुड़ जाता है. रंगोली का फायदा यह भी है कि इसे सजाने के लिए बहुत महंगी चीजों की जरूरत नहीं पड़ती. रंग, चॉक और थोड़े से फूलों की मदद से भी सुंदर

मोर और कमल वाला डिजाइन मोर भारत का राष्ट्रीय पक्षी है और कमल राष्ट्रीय फूल. इसलिए दोनों को एक रंगोली में शामिल करना स्वतंत्रता दिवस के लिए काफी सुंदर विचार हो सकता है. पहले चॉक से मोर और कमल की हल्की आउटलाइन बनाएं. इसके बाद पंखों और फूलों में रंग भरें. बहुत ज्यादा बारीक डिजाइन न रखें, तो इसे बनाना काफी आसान हो जाएगा.

चम्मच से बनाएं फटाफट रंगोली रंगोली बनाने का अनुभव कम है तो यह ट्रिक काम आ सकती है. थोड़े-थोड़े रंग जमीन पर डालकर चम्मच के पिछले हिस्से से उन्हें फैलाते हुए पंखुड़ी जैसी आकृति बनाई जा सकती है. कई ऐसी आकृतियों को गोल घेरे में सजाएं और बीच में छोटा अशोक चक्र या तिरंगा बना दें. कम मेहनत में डिजाइन तैयार हो जाएगा.

15 अगस्त के लिए 8 आसान रंगोली डिजाइन तिरंगा और फूलों वाली रंगोली

अगर आप छोटी और जल्दी बनने वाली रंगोली चाहते हैं, तो तिरंगे और फूलों वाला डिजाइन अच्छा विकल्प है. बीच में अशोक चक्र बनाकर उसके चारों तरफ फूलों की आकृति बनाई जा सकती है. केसरिया, सफेद और हरे रंग का संतुलित इस्तेमाल इसे आकर्षक बना देगा. ऑफिस के प्रवेश द्वार या स्कूल की छोटी जगह के लिए यह डिजाइन खास तौर पर अच्छा रहेगा.

बड़ी और आसान तिरंगा रंगोली स्कूल या ऑफिस के बड़े हॉल में खाली जगह है तो बड़ी तिरंगा रंगोली बनाई जा सकती है. पहले पूरे डिजाइन की सीमा तय करें और फिर तीन हिस्सों में केसरिया, सफेद और हरे रंग की जगह बनाएं. सफेद हिस्से के बीच नीले रंग का अशोक चक्र बनाना न भूलें. साफ-सुथरी आउटलाइन इस डिजाइन की खूबसूरती बढ़ा देगी.

सिंपल तिरंगा रंगोली अगर पहली बार रंगोली बना रहे हैं, तो जटिल डिजाइन के बजाय सिंपल तिरंगा पैटर्न चुनना समझदारी होगी. गोल या आयताकार बॉर्डर के अंदर तीन रंगों की पट्टियां बनाकर बीच में अशोक चक्र बनाया जा सकता है. चारों ओर छोटे फूल या दीये जैसी आकृतियां जोड़कर इसे और खूबसूरत बनाया जा सकता है.

मोर वाली रंगोली मोर की रंगोली थोड़ी ज्यादा डिटेलिंग मांगती है, लेकिन तैयार होने के बाद यह पूरे कार्यक्रम की सजावट में अलग नजर आती है. मोर के पंखों में हरे, नीले और दूसरे चमकीले रंगों का इस्तेमाल किया जा सकता है. आसपास तिरंगे के रंगों से छोटे फूल या बॉर्डर बनाएं, तो डिजाइन स्वतंत्रता दिवस की थीम से भी जुड़ जाएगा.

दोस्त बहुत हैं, लेकिन अपना कौन? चाणक्य की इन 6 बातों से करें सच्चे मित्र की पहचान

किसी के साथ रोज बात करना, हर पोस्ट पर लाइक करना या खुशी के मौके पर पार्टी में पहुंच जाना आसान है. असली परीक्षा तब होती है, जब जिंदगी अचानक करवट लेती है. जेब खाली हो, बीमारी घेर ले, कोई बड़ा संकट सामने खड़ा हो या परिवार किसी मुश्किल दौर से गुजर रहा हो, तब कई रिश्तों की असली तस्वीर सामने आ जाती है. आचार्य चाणक्य ने भी मित्रता को केवल हंसी-मजाक और सुख के साथ जोड़कर नहीं देखा. उनकी नीति में बताया गया है कि सच्चा मित्र वही है जो मुश्किल घड़ी में व्यक्ति का हाथ नहीं छोड़ता. यही वजह है कि सदियों पुरानी चाणक्य नीति की यह बात आज की दोस्ती पर भी काफी हद तक लागू होती दिखाई देती है. आइए जानते हैं वे कौन से 6 मौके हैं, जिन्हें चाणक्य ने सच्चे मित्र की पहचान से जोड़ा है.

चाणक्य नीति में सच्चे मित्र की पहचान

चाणक्य नीति में मित्रता से जुड़ा एक प्रसिद्ध श्लोक है-

'आतुरे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रु-संकटे.
राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः॥'

इसका भावार्थ है कि जो व्यक्ति बीमारी, विपत्ति, आर्थिक संकट, शत्रु के संकट, राजदरबार यानी कानूनी परेशानी और श्मशान तक साथ खड़ा रहे, वही सच्चा मित्र या बंधु कहलाने योग्य है. इस नीति का मूल संदेश यही है कि रिश्ते की मजबूती का पता अच्छे समय में नहीं, बल्कि कठिन समय में चलता है.

1. बीमारी में जो हाल पूछने नहीं, साथ देने आए

बीमारी के समय अक्सर व्यक्ति को दवाइयों से ज्यादा किसी अपने के भरोसे की जरूरत महसूस होती है. चाणक्य के अनुसार जो मित्र आपकी बीमारी या शारीरिक परेशानी में आपका हाल जानने, मदद करने और जरूरत पड़ने पर आपके साथ खड़ा रहने से पीछे न हटे, उसकी मित्रता को सच्चा माना जा सकता है. केवल 'जल्दी ठीक हो जाओ' का संदेश भेजना और जरूरत के वक्त मौजूद रहना, दोनों में फर्क है.

2. बड़े संकट में न छोड़े साथ

मुश्किलें हमेशा बताकर नहीं आतीं. नौकरी चली जाना, कारोबार में नुकसान, पारिवारिक परेशानी या कोई अचानक आई विपत्ति व्यक्ति को भीतर तक हिला सकती है. ऐसे समय में जो दोस्त समस्या सुनकर दूरी बनाने के बजाय समाधान खोजने में मदद करे, उसे चाणक्य की नीति के अनुसार सच्चा साथी माना जा सकता है.

तीज पर अगर करना चाहते हैं खरीदारी, तो मेरठ का यह मार्केट है बेहद खास, सस्ता भी और अच्छा भी

तीज के पावन पर्व पर देखने को मिलता है कि महिलाएं अपनी सखियों के साथ इस उत्सव को काफी धूमधाम से मनाने के लिए काफी उत्साहित दिखाई देती हैं. इसीलिए वह विभिन्न प्रकार की सुंदर ड्रेस भी पहनती हैं. ऐसे में अगर आप भी सुंदर ड्रेस की तलाश कर रही हैं, लेकिन अभी तक आपको ड्रेस नहीं मिल पाई है, तो ऐसी सभी महिलाओं के लिए मेरठ की लाल कुर्ती और घंटाघर का मार्केट बेहद खास साबित हो सकता है.

यहां पर इस ड्रेस के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की ज्वेलरी भी खरीद सकती हैं. दरअसल देखने को मिलता है कि महिलाएं जिस तरह के कपड़े खरीदती हैं, उसी तरह की ज्वेलरी और अन्य तरह के प्रोडक्ट भी खरीदना उचित समझती हैं, ताकि मैचिंग के साथ वह काफी सुंदर दिखे. लेकिन एक ही स्थान पर मैचिंग का सामान मिलना महिलाओं के लिए चुनौती पूर्ण हो जाता है.

मगर मेरठ की लालकुर्ती मार्केट की बात की जाए तो यहां सुंदर ड्रेस के साथ-साथ अन्य तरह के ज्वेलरी, झुमकी भी मौजूद हैं, जिनकी कीमत की अगर बात की जाए तो दिल्ली की तर्ज पर ही बेहद कम कीमत पर यहां से खरीदारी कर सकते हैं. व्यापारी अनिल कुमार के अनुसार, अन्य मार्केट से जहां महिलाएं खरीदारी करते हुए सूट को 5 से 10000 रुपए की कीमत में खरीदेंगी, वहीं सूट यहां पर सिर्फ 1200 रुपए से लेकर 2500 रुपए की कीमत में उपलब्ध हो जाएगा.

यहां पर दिल्ली की तर्ज पर ही थोक के रेट में सूट सहित अन्य तरह के कपड़े उपलब्ध होते हैं. इसी के साथ वर्तमान समय में जिस तरह से ट्रेडिशनल ड्रेस के प्रति भी महिलाओं में क्रेज बढ़ता जा रहा है, उसी तरह की ड्रेस भी महिलाओं को लाल कुर्ती में उपलब्ध हो जाएंगी. इसी के साथ उन्होंने बताया कि लाल कुर्ती मार्केट में सिर्फ सूट ही नहीं, बल्कि लहंगा लांचा और अन्य प्रकार के कपड़े भी उपलब्ध हैं.

वहीं दूसरी ओर देखने को मिल रहा है कि आजकल महिलाओं में टेरी कोटा ज्वेलरी के प्रति भी काफी आकर्षक बढ़ता जा रहा है. डिमांड भी काफी आ रही है. ऐसे में अगर आप भी टेरी कोटा से संबंधित ज्वेलरी खरीदना चाहती हैं, वह भी आपको लाल कुर्ती एवं मेरठ के घंटाघर बाजार में उपलब्ध हो जाएगी. इसी के साथ ही विभिन्न प्रकार की आर्टिफिशियल ज्वेलरी भी यहां काफी कम रेट में महिलाओं को उपलब्ध हो जाती है. बताते चलें कि आजकल देखने को मिलता है कि महिलाओं को कश्मीरी, हिमाचल, जयपुरी सहित विभिन्न प्रकार की झुमकी और चूड़ियां काफी पसंद आती हैं. ऐसे में मेरठ के लालकुर्ती बाजार में आपको हर तरह की झुमकी व चूड़ियां भी उपलब्ध हो जाएंगी.

शरीर का सबसे खास अंग! छोटा सा हिस्सा भी बना सकता है नया लिवर, जानें कैसे होता है लिवर ट्रांसप्लांट

लिवर एक ऐसा अंग है, जो शरीर के 500 से ज्यादा फंक्शन में शामिल होता है. ऐसे में लिवर का सही कंडीशन में होना सेहतमंद लाइफ जीने के लिए बहुत जरूरी होता है. वैसे तो ये अंग खुद की सफाई और मरम्मत करने में भी सक्षम होता है, लेकिन यदि लाइफस्टाइल की आदतें लगातार खराब बनी रहे तो इसके खराब होने का खतरा बहुत ज्यादा होता है. ऐसी कंडीशन में सर्वाइवल के लिवर ट्रांसप्लांट की जरूरत होती है. बीएलके-मैक्स सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल में एचपीबी सर्जरी एवं लिवर ट्रांसप्लांट के चेयरमैन एवं एचओडी डॉ. अभिदीप चौधरी बताते हैं कि लिवर शरीर का एकमात्र ऐसा अंदरूनी अंग है जिसमें कोशिकाओं के दोबारा बनने क्षमता होती है. 'लिविंग डोनर लिवर ट्रांसप्लांट' के दौरान, सर्जन आमतौर पर स्वस्थ डोनर के लिवर का 40% से 60% हिस्सा निकाल लेते हैं. जैसे ही यह हिस्सा निकाला जाता है, कोशिकाओं के बंटने और बढ़ने की प्रक्रिया बहुत तेजी से शुरू हो जाती है. 6 से 8 हफ्तों के अंदर, डोनर का बचा हुआ लिवर अपने असली आकार का लगभग 80% से 90% तक दोबारा बढ़ जाता है और पूरी तरह काम करने लगता है.

ट्रांसप्लांट की जरूरत कब होती है?

पटपड़गंज स्थित मैक्स सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल एचपीबी सर्जरी एवं लिवर ट्रांसप्लांट के सीनियर डायरेक्टर डॉ. अजिताभ श्रीवास्तव बताते हैं कि जब लिवर गंभीर सिरोसिस, अचानक लिवर फेलियर, कुछ खास तरह के लिवर कैंसर या कुछ जन्मजात बीमारियों के कारण बुरी तरह डैमेज हो जाता है, तो ट्रांसप्लांट सबसे अच्छा इलाज होता है.

लिवर ट्रांसप्लांट प्रोसेस

सही डोनर खोजना

लिवर ट्रांसप्लांट में मृत डोनर या सावधानी से चुने गए जीवित डोनर की जरूरत होती है. जीवित डोनर से ट्रांसप्लांट के मामले में, एक स्वस्थ व्यक्ति अपने लिवर का एक हिस्सा दे सकता है क्योंकि लिवर की एक खास खूबी यह है कि इसमें दोबारा बढ़ने (रीजनरेट होने) की क्षमता होती है. जो भी व्यक्ति डोनर बनना चाहता है, उसकी मेडिकल हिस्ट्री, शरीर की बनावट और मानसिक स्थिति के आधार पर कड़ी जांच होनी चाहिए.

शम्मी की अस्थियां डल झील में विसर्जित की गई थीं: लोग Yahoo का मालिक समझते थे

शम्मी कपूर को 'याहू' की गूंज, बेफिक्र अंदाज और खुलकर नाचने वाले हीरो के तौर पर पूरी पीढ़ी ने याद किया। लेकिन उनके जीवन के कई किस्से स्टारडम से भी ज्यादा दिलचस्प हैं। एक दौर में उनकी Yahoo पहचान इतनी मशहूर हो गई थी कि लोग उन्हें याहू कंपनी का मालिक समझने लगे थे। परिवार में भी कन्फ्यूजन था। रणधीर कपूर ने उनसे पूछ लिया था- 'अंकल, आपने कंपनी खोली और बताया भी नहीं?

कपूर की 15वीं डेथ एनिवर्सरी पर रजा मुराद और अरुण बख्शी ने उनसे जुड़ी यादें साझा कीं।

कपूर के स्टारडम को समझने के लिए रजा मुराद की कहानी काफी है। जिस अभिनेता के साथ बाद में उन्होंने स्क्रीन शेयर की, कभी उसी की फिल्म देखने के लिए उन्हें घंटों एडवांस बुकिंग की लाइन में खड़ा होना पड़ता था।

रजा मुराद बताते हैं कि शम्मी कपूर उनके पसंदीदा सितारों में थे। 'जंगली', 'जानवर', 'ब्लफ मास्टर', 'राजकुमार' और 'सच्चाई' जैसी फिल्मों के लिए दर्शकों में जबरदस्त क्रेज रहता था।

बुकिंग में टिकट मिलना मुश्किल होता था। इसलिए एडवांस बुकिंग के लिए घंटों लाइन लगानी पड़ती थी।

नकल नहीं की, अपना अंदाज बनाया

कपूर की खासियत सिर्फ उनकी लोकप्रियता नहीं थी। उन्होंने किसी दूसरे अभिनेता की नकल करके अपना स्टाइल नहीं बनाया। उनकी अपनी बॉडी लैंग्वेज, ऊर्जा और आत्मविश्वास था। यही वजह थी कि भीड़ में भी वह तुरंत अलग नजर आते थे।

फैन से को-स्टार तक का सफर

वक्त बदला और वही रजा मुराद फिल्म 'प्रेम रोग' के सेट पर शम्मी कपूर के साथ खड़े थे, जिनकी फिल्में देखने के लिए वह कभी लाइन में लगा करते थे। रजा के लिए यह सपने के सच होने जैसा था। लेकिन शम्मी कपूर ने उन्हें कभी छोटा महसूस नहीं कराया। जूनियर कलाकार होने के बावजूद वह उनसे सहजता और बराबरी के भाव से पेश आते थे।

मुराद कहते हैं- सेट पर वह प्रैंक और मजाक करते रहते थे। कई बार किसी से आधी बात कहकर अचानक चुप हो जाते। सामने वाला सोचता रह जाता कि आखिर बात क्या है। फिर कुछ देर बाद शम्मी कपूर हंसते हुए बताते कि वह मजाक कर रहे थे।

कैमरे का एंगल तक याद रहता था

उनके भीतर का बच्चा उम्र के साथ बड़ा नहीं हुआ था। कैमरे के सामने भी वह सजग रहते थे। उन्हें पता रहता था कि कैमरा किस एंगल से उन्हें देख रहा है और फ्रेम में उनका चेहरा किस तरह नजर आएगा।

अच्छा खाना उन्हें पसंद था और दोस्तों को खिलाना भी। घर पर दोस्तों के लिए दावतें करना उनके स्वभाव का हिस्सा था। स्टारडम के बावजूद जिंदगी को भरपूर जीने का यह अंदाज आखिरी दौर तक बना रहा।

कश्मीर से था खास रिश्ता

शम्मी कपूर और कश्मीर का रिश्ता हिंदी सिनेमा की यादों में खास जगह रखता है। 'जंगली', 'कश्मीर की कली' और 'जानवर' जैसी फिल्मों ने कश्मीर की खूबसूरती देशभर के दर्शकों तक पहुंचाई। 'ये चांद सा रोशन चेहरा', 'कश्मीर की कली हूं मैं' और 'मेरे यार शब्बा खैर' जैसे गीतों में नजर आई वादियां और शम्मी कपूर का मस्तमौला अंदाज दर्शकों के दिल में बस गया।

पर्यटन में भी योगदान

मुराद मानते हैं कि कश्मीर के पर्यटन को लोकप्रिय बनाने में शम्मी कपूर की फिल्मों का बड़ा योगदान था। उनका कहना था कि शम्मी कपूर के नाम पर वहां कोई सड़क, बगीचा या मोहल्ला होना चाहिए। वह चाहते थे कि कश्मीर एयरपोर्ट का नाम भी शम्मी कपूर के नाम पर रखा जाता तो यह उनके योगदान का शानदार सम्मान होता।

रजा के लिए शम्मी कपूर का पूरा व्यक्तित्व एक ही बात में समाया था- या तो सबसे अच्छे बनो या सबसे अलग। शम्मी कपूर निश्चित रूप से सबसे अलग थे।

गीता बाली से मुलाकात और चार महीने का प्यार

शम्मी कपूर की निजी जिंदगी का खूबसूरत अध्याय अभिनेत्री गीता बाली से जुड़ा था। दोनों की मुलाकात फिल्मी माहौल में हुई। 'रंगीली रातें' की शूटिंग के दौरान दोनों करीब आए।

शम्मी कपूर ने गीता बाली के सामने शादी का प्रस्ताव रखा, लेकिन उन्होंने तुरंत हां नहीं की। करीब चार महीने तक दोनों इस बारे में बातचीत करते रहे। फिर एक रात गीता बाली ने कहा कि अगर शादी करनी है तो अभी करनी है।

आधी रात मंदिर पहुंचे, पुजारी ने कहा- भगवान सो चुके हैं

दोनों अपने दोस्त जॉनी वॉकर और निर्माता हरि वालिया की मदद से बाणगंगा मंदिर पहुंचे। रात काफी हो चुकी थी। पुजारी ने उनसे कहा कि भगवान सो चुके हैं, सुबह करीब चार बजे आइए। दोनों लौटे और सुबह फिर मंदिर पहुंचे। इसके बाद शादी हुई।

लिपस्टिक से भरी मांग

इस शादी की सादगी भी शम्मी-गीता के रिश्ते जैसी थी। गीता बाली के पास सिंदूर नहीं था। उन्होंने पर्स से लिपस्टिक निकाली और शम्मी कपूर से कहा कि उसी से उनकी मांग भर दें। 1955 में हुई इस शादी से दोनों के दो बच्चे हुए। करीब दस साल बाद गीता बाली की असमय मौत ने इस रिश्ते को हमेशा के लिए तोड़ दिया।

झ्रमयूरी कांगो : आईआईटी छोड़ 90 के दशक में बनीं नेशनल क्रश, फिल्मों को अलविदा कह बनीं कॉरपोरेट दुनिया में बड़ी शख्सियत

मुंबई । अक्सर लोग नौकरी छोड़कर फिल्मी दुनिया में नाम और शोहरत कमाने का सपना देखते हैं, लेकिन मयूरी कांगो की कहानी इससे बिल्कुल अलग है। महज 15 साल की उम्र में आईआईटी कानपुर की प्रवेश परीक्षा पास करने वाली मयूरी ने पढ़ाई छोड़कर अभिनय को चुना और 90 के दशक में अपनी मासूम छवि व शानदार अभिनय से लाखों दिलों की धड़कन बन गईं। हालांकि, जब उनका करियर सफलता की ऊंचाइयों पर था, तब उन्होंने ग्लैमर की दुनिया को अलविदा कहकर एक नया रास्ता अपनाने का फैसला किया। उनकी यह यात्रा बताती है कि सफलता सिर्फ फिल्मों में नहीं, बल्कि जीवन में अपनी पसंद के रास्ते चुनने में भी होती है।

आज, वह दुनिया की अग्रणी तकनीकी और विज्ञापन कंपनियों में शीर्ष नेतृत्व की भूमिका निभा रही हैं। मयूरी कांगो का जन्म 15 अगस्त 1982 को महाराष्ट्र के औरंगाबाद (अब छत्रपति संभाजीनगर) में हुआ था। उनके पिता भालचंद्र कांगो एक राजनेता थे और उनकी माता सुजाता कांगो एक प्रसिद्ध थिएटर कलाकार थीं। एक सुशिक्षित और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध पारिवारिक पृष्ठभूमि ने मयूरी कांगो के बौद्धिक और कलात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शिक्षा के प्रति उनके गहरे रुझान का प्रमाण यह था कि उन्होंने अपनी किशोरावस्था में ही आईआईटी प्रवेश परीक्षा पास कर ली थी, हालांकि नियति ने उनके लिए एक अलग ही मार्ग निर्धारित किया था। जब वह अपनी मां के साथ मुंबई के एक शूट पर गई थीं तो प्रसिद्ध फिल्म निर्माता सईद अख्तर मिर्जा की नजर उन पर पड़ी। सईद अख्तर मिर्जा ने उन्हें बाबरी मस्जिद विध्वंस की पृष्ठभूमि पर आधारित अपनी फिल्म 'नसीम' (1995) में मुख्य भूमिका का प्रस्ताव दिया। शिक्षा और कला के बीच एक रणनीतिक निर्णय लेते हुए उन्होंने फिल्म को चुना और इस प्रकार उनके अभिनय करियर की शुरुआत हुई।

नसीम' में उनके संवेदनशील और परिपक्व अभिनय ने फिल्म उद्योग के दिग्गजों का ध्यान आकर्षित किया। जाने-माने निर्देशक महेश भट्ट ने इस प्रदर्शन से प्रभावित होकर उन्हें अपनी रोमांटिक ड्रामा फिल्म 'पापा कहते हैं' (1996) में जुगल हंसराज के विपरीत कास्ट किया। इस फिल्म का संगीत विशेष रूप से अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। जावेद अख्तर द्वारा लिखित और उदित नारायण द्वारा गाया गया गीत 'घर से निकलते ही' 90 के दशक के युवाओं के लिए एक लव एंथम बन गया।

इस सफलता के बाद उन्होंने कई प्रमुख फिल्मों में काम किया। 1997 की 'बेताबी' फ्लॉप हुई। 1999 में 'होगी प्यार की जीत' सेमी-हिट रही और साल 2000 में आई फिल्म 'बादल' हिट रही। एक्शन-थ्रिलर फिल्म 'बादल' में मयूरी कांगो ने 'सोनी' नाम की एक सहायक भूमिका निभाई थी। इस फिल्म में मुख्य भूमिकाओं में बॉबी देओल और रानी मुखर्जी नजर आए थे।

लगभग 16 फिल्मों (जिनमें से आधी रिलीज भी नहीं हो सकीं) और कई टेलीविजन धारावाहिकों (जैसे 'डॉलर बहू' और 'कारिश्मा: द मिरेकल्स ऑफ डेस्टिनी') में काम करने के बाद मयूरी कांगो ने 28 दिसंबर, 2003 को एक एनआरआई व्यवसायी आदित्य ढिल्लों से शादी की और संयुक्त राज्य अमेरिका चली गईं। अमेरिका में उन्होंने सिटी यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क से मार्केटिंग और फाइनेंस में एमबीए की डिग्री हासिल की और 2007 में स्नातक की। यह कदम उनके पेशेवर पुनर्जागरण की नींव साबित हुआ।

अपनी व्यावसायिक कुशाग्रता से उन्होंने डिजिटल मार्केटिंग और विज्ञापन के क्षेत्र में अमिट छाप छोड़ी। 2007 में 360आई न्यूयॉर्क में एसोसिएट मीडिया मैनेजर के रूप में करियर शुरू किया। 2012 में 'जेनिथ' भारत के चीफ डिजिटल ऑफिसर बनीं। 2016 में 'पर्फोर्मिक्स' के मैनेजिंग डायरेक्टर और 2019 में गूगल इंडिया में इंडस्ट्री हेड- एजेंसी पार्टनरशिप बनीं।

मौजूदा समय में वह सीईओ की भूमिका में भारत के ऑपरेशन्स के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर मीडिया, टेक और एआई समाधानों को आकार दे रही हैं।

वी गॉट यू गर्ल का ट्रेलर आउट, दोस्ती-स्टाइल और सपोर्ट का परफेक्ट कॉम्बो 18 अगस्त को होगा रिलीज

विश्व केसरी ■

मुंबई। अभिनेत्री बरखा दत्ता और आयशा अहमद द्वारा होस्ट की गई सीरीज 'वी गॉट यू गर्ल' के मेकर्स ने शुक्रवार को इसका ट्रेलर रिलीज कर दिया है। यह शो सिस्टरहुड, दोस्ती और कॉन्फिडेंस पर आधारित है।

यह सीरीज रोजमर्रा के स्टाइल, ब्यूटी और कॉन्फिडेंस से जुड़ी छोटी-बड़ी परेशानियों को मजेदार तरीके से दिखाएगी। साथ ही, महिला दोस्ती और एक-दूसरे के सपोर्ट की अहमियत को भी सेलिब्रेट करती है। 15 एपिसोड की इस सीरीज में हर एपिसोड में अलग-अलग महिलाएं नजर आएंगी, जो अपने स्टाइल, ब्यूटी या कॉन्फिडेंस से जुड़ी किसी भी दिक्कत के लिए सलाह मांगने आती है।

शो में बरखा और आयशा अहमद के साथ इस बार एटीकेट और ट्रांसफॉर्मेशन कोच माणिक कौर भी हैं। वो अपने एक्सपर्ट टिप्स से सभी के मेकओवर में मदद करेंगी।

शो के बारे में अभिनेत्री बरखा का कहना है कि जिंदगी के हर मोड़ पर हमें लड़कियों की जरूरत होती है। यह शो भी हमने बस लोगों को यही समझाने के लिए बनाया है। उन्होंने कहा, 'वी गॉट यू गर्ल' एक ऐसा शो है, जहां मैं और आयशा की केमिस्ट्री नेचुरल नजर आएगी। शो के लिए मैं, इसलिए एक्साइटेड हूं कि जब यह आएगा तो हमारे ऑडियंस हमारी दुनिया का हिस्सा बनेंगे।

अभिनेत्री आयशा ने कहा, 'मुझे 'वी गॉट यू गर्ल' की सबसे खास बात ये लगती है कि ये बहुत मिलता-जुलता शो है। हम सबके साथ हुआ है, जब हमने अलमारी खोलकर सोचा हो कि हमारे पास 'पहनने को कुछ नहीं है' या कुछ ट्राई किया हो और समझ न आया हो कि सही क्यों नहीं लग रहा। ये शो रोजमर्रा की इन्हीं दिक्कतों को मजेदार तरीके से दिखाता है। साथ में काम की सलाह भी देता है। मुझे ये भी पसंद है कि यहां मेकओवर उन महिलाओं के हिसाब से किए गए हैं। उनकी पर्सनालिटी, उनकी लाइफस्टाइल और जिसमें वो सबसे ज्यादा कंफर्टेबल हों। बरखा और मुझे इस शो में गर्ल-गैंग वाली एनर्जी लाने में बहुत मजा आया। अब इंतजार है कि बाहर की हमारी बड़ी गर्ल-गैंग भी इन कमाल की महिलाओं से मिले।

यह 15 एपिसोड वाला शो 18 अगस्त को प्राइम वीडियो पर रिलीज होगा।

समय रैना समेत 5 कॉमेडियन को सुप्रीम कोर्ट से मिली राहत, दिव्यांगों पर टिप्पणी मामले में एफआईआर रद्द करने का आदेश

नई दिल्ली। दिव्यांग लोगों और गंभीर बीमारियों से जूझ रहे लोगों पर टिप्पणी मामले में समय रैना और उनके साथ जुड़े चार अन्य कॉमेडियन को सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को बड़ी राहत दी। अदालत ने समय रैना, विपुल गोयल, बलराज परमजीत सिंह घई, सोनाली ठक्कर और निशांत जगदीश तंवर के खिलाफ दर्ज एफआईआर रद्द करने का आदेश दिया।

सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि समय रैना और बाकी चार लोगों ने अदालत के पहले दिए गए निर्देशों का पालन किया। दरअसल, अदालत ने पहले उन्हें दिव्यांग लोगों के लिए जागरूकता बढ़ाने वाले कार्यक्रम करने और इलाज के लिए पैसे जुटाने की दिशा में काम करने का आदेश दिया था, जिसके बाद इन्होंने कई कार्यक्रम किए और दिव्यांग लोगों से जुड़े मुद्दों को अपने प्लेटफॉर्म पर जगह दी। इसी आधार पर कोर्ट ने इन पांचों के खिलाफ दर्ज एफआईआर को रद्द कर दिया। यह विवाद समय रैना के कॉमेडी शो 'इंडियाज गॉट लेटेंट' से शुरू हुआ था। इस शो में कही गई कुछ बातों के बाद देश के अलग-अलग हिस्सों में शिकायतें और एफआईआर दर्ज हुई थीं। बाद में दिव्यांग लोगों से जुड़े एक संगठन क्योर एसएमए ने भी सुप्रीम कोर्ट का रुख किया। संगठन का कहना था कि शो में गंभीर शारीरिक समस्याओं से जूझ रहे लोगों और दिव्यांगों को लेकर ऐसी बातें कही गईं, जो उनकी गरिमा को ठेस पहुंचाती है।

मामले की सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने इस तरह के मजाक को बेहद गंभीरता से लिया। अदालत ने कहा था कि किसी व्यक्ति का मजाक उड़ाना या उसे नीचा दिखाना सही नहीं माना जा सकता। कोर्ट ने समय रैना और अन्य कॉमेडियन को दिव्यांग लोगों के लिए काम करने और उनके इलाज के लिए पैसे जुटाने से जुड़े कार्यक्रम करने का निर्देश दिया था।

करिश्मा कपूर ने बताया 'महबूब मेरे' का मजेदार किस्सा, कहा- गाने में मैं ऋतिक रोशन को ढूंढ रही थीं

विश्व केसरी ■

मुंबई। अभिनेत्री करिश्मा कपूर ने 90 के दशक से हिंदी सिनेमा में राज किया है और अभी भी उनके प्रति दीवानगी लोगों के दिलों में कायम हैं। अभिनेत्री ने हाल ही में फिल्म 'फिजा' के मशहूर गाने 'महबूब मेरे' की अनकही कहानी बताई।

अभिनेत्री ने बताया कि फिल्म में उन्हें गाने की सिचुएशन काफी अजीब लगी थी, जब सुष्मिता सेन गाने पर डांस कर रही थीं, जबकि वह खुद फिल्म में ऋतिक रोशन को ढूंढ रही थीं।

अभिनेत्री ने इस बात का खुलासा डांस रियलिटी शो 'इंडियाज बेस्ट डांसर सीजन 5' में किया था। शो के स्पेशल एपिसोड में कंटेस्टेंट वैदेही और रोमशा ने 'महबूब मेरे' समेत कुछ टाइमलेस बॉलीवुड गानों पर दमदार परफॉर्मेंस दी थी। परफॉर्मेंस के बाद करिश्मा ने इस गाने से जुड़ा अपना अनुभव शेयर किया और फिल्म 'फिज़ा' से जुड़ा एक कम जाना-पहचाना किस्सा भी बताया।

करिश्मा ने कहा, 'आप लोगों को शायद ये पता नहीं होगा, लेकिन इस गाने में भी हूं। ये सिचुएशन बहुत अलग थी और मुझे भी बहुत अजीब लग रहा था कि सुष्मिता डांस कर रही थीं और मैं गाने के बीच में ऋतिक को ढूंढ रही थी। ये फिल्म 'फिजा' का गाना है। तो हां, मेरे लिए ये एक बहुत ही अनोखी सिचुएशन थी।

सॉन्ग 'महबूब मेरे' वर्ष 2000 में रिलीज हुई बॉलीवुड फिल्म 'फिजा' का एक बेहद लोकप्रिय और सदाबहार गाना है। इस गाने में अभिनेत्री सुष्मिता सेन ने एक स्पेशल अपीयरेंस (कैमियो) में शानदार डांस किया था, जिसे दर्शकों ने खूब पसंद किया।

सुष्मिता सेन वाला यह गाना उस समय के यादगार डांस नंबर्स में से एक बन गया, जबकि 'फिजा' में ऋतिक रोशन, करिश्मा कपूर और डिंपल कपाड़िया ने अहम रोल निभाए थे। फिजा एक बेहतरीन हिंदी ड्रामा और क्राइम थ्रिलर फिल्म है, जिसे खालिद मोहम्मद ने लिखा और निर्देशित किया है। इस फिल्म में करिश्मा कपूर, ऋतिक रोशन और जया बच्चन ने मुख्य भूमिकाएं निभाई हैं।

पृथ्वीराज की 'खलीफा' को सेंसर बोर्ड से मिली हरी झंडी, 20 अगस्त को रिलीज होगी थ्रिलर फिल्म

विश्व केसरी ■

मुंबई। पृथ्वीराज सुकुमारन की अपकमिंग फिल्म 'खलीफा' को लेकर दर्शकों का इंतजार अब खत्म होने वाला है। निर्देशक वैसाख की रिवेंज थ्रिलर को लेकर पहले से ही काफी चर्चा है और अब फिल्म की रिलीज का रास्ता भी साफ हो गया है। केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड (सीबीएफसी) ने फिल्म को यू/ए 16 प्लस सर्टिफिकेट दे दिया है।

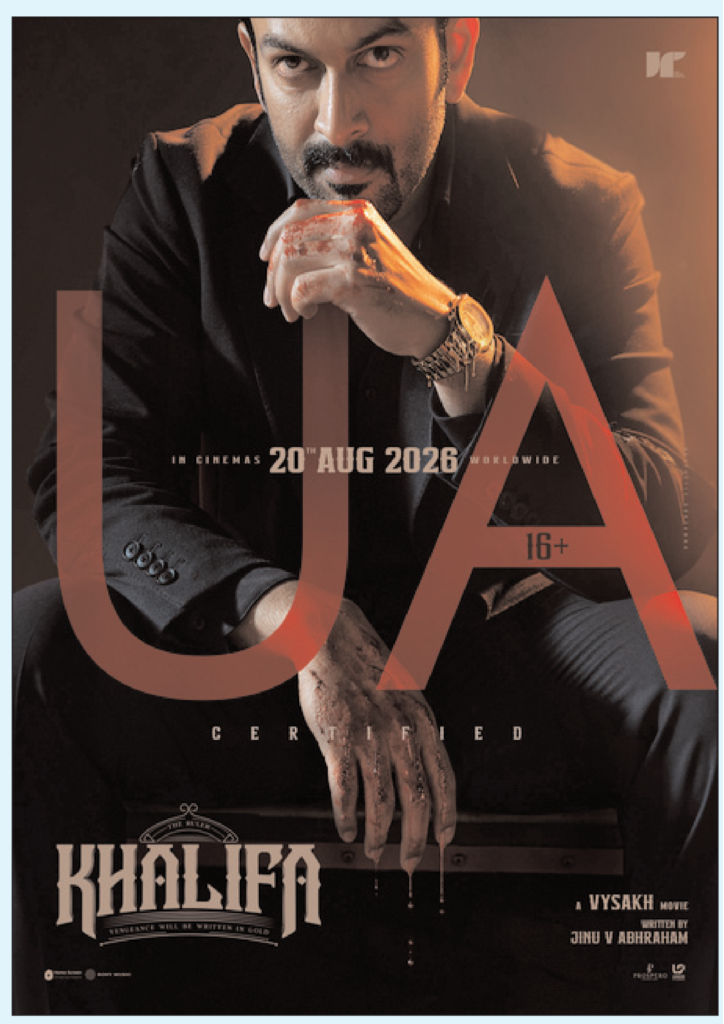

फिल्म में पृथ्वीराज मुख्य भूमिका में हैं और वह आमिर अली नाम के किरदार में नजर आएंगे। अभिनेता ने खुद सोशल मीडिया पर फिल्म को सेंसर सर्टिफिकेट मिलने की जानकारी साझा की।

पृथ्वीराज ने इंस्टाग्राम पर यह अपडेट शेयर करते हुए लिखा, ''फिल्म 'खलीफा' को सेंसर से यू/ए 16 प्लस सर्टिफिकेट मिल चुका है। अब यह फिल्म 20 अगस्त 2026 से दुनिया भर के सिनेमाघरों में रिलीज होगी।''

फिल्म को लेकर मेकर्स पहले ही कई किरदारों की जानकारी सामने ला चुके हैं। अभिनेत्री मोहिनी फिल्म में नूरजहां का किरदार निभा रही हैं, जबकि कायरा वासुदेवन के किरदार का नाम वैष्णवी है। वहीं अभिनेता शम्मी थिलाकन राघवन के किरदार में दिखाई देंगे।

फिल्म में इन किरदारों की क्या भूमिका होगी, इसे लेकर मेकर्स ने अभी पूरी जानकारी नहीं दी है।

बता दें कि 'खलीफा' की शूटिंग इसी साल जून में पूरी हो गई थी। फिल्म के कुछ सीन्स दुबई में शूट किए गए। इसके लिए फिल्म की टीम इस साल की शुरुआत में दुबई पहुंची थी।

फिल्म का टीजर रिलीज किया जा रहा है, जिसमें कहानी एक न्यूज बुलेटिन से शुरू होती दिखाई गई थी। इसमें बताया गया कि पुलिस और कस्टम अधिकारियों ने मिडिल ईस्ट से चल रहे करोड़ों डॉलर के सोने की तस्करी के एक बड़े नेटवर्क का पता लगाया है। इस नेटवर्क का संबंध लंदन, नेपाल और केरल से है। इसके बाद एक बुजुर्ग व्यक्ति से कस्टम अधिकारी पनिकर पूछताछ करता है। पनिकर उसे आमिर के बारे में बताते हुए डराने की कोशिश करता है और कहता है कि आमिर अब खत्म हो चुका है और भारत में कदम रखते ही उसे गिरफ्तार किया जा सकता है। इसी दौरान वह कोफेपोसा कानून का भी जिक्र करता है।

लेकिन पूछताछ के दौरान बुजुर्ग व्यक्ति ही पनिकर से सवाल कर बैठता है कि क्या उसे पता है कि कोफेपोसा कानून की शुरुआत कैसे हुई थी। इसके बाद वह पुराने समय के कुछ बड़े नामों का जिक्र करता है और बताता है कि उत्तर भारत में सुकुर नरेन बखिया और हाजी मस्तान, जबकि दक्षिण भारत में मुदलियार और मम्बारायक्कल अहमद अली जैसे नाम चर्चा में थे।

वह आगे बताता है कि आमिर अली उसी अहमद अली का पोता है। इसके बाद वह अधिकारी को आमिर को पकड़ने की चुनौती देता है और कहता है कि अगर वह आमिर को पकड़ लेता है, तभी उसे असली 'फायरवर्क्स' देखने को मिलेंगे।

शेखर कपूर ने शेयर की श्रीदेवी के साथ पुरानी तस्वीर, बोले- 'कैमरे के सामने आते ही जैसे जादू हो जाता था'

विश्व केसरी ■

मुंबई। श्रीदेवी ने हिंदी सिनेमा कई तरह के किरदार निभाए। फिर चाहे 'सदमा' की मानसिक रूप से कमजोर लड़की वाला रोल हो या फिर 'इंग्लिश विंग्लिश' की आत्मविश्वासी गृहिणी वाली भूमिका की बात हो, उन्होंने अपने अभिनय से अपना एक अलग स्टारडम तैयार किया। आज भी लोग उन्हें दिल से याद करते है। इस कड़ी में निर्देशक शेखर कपूर ने उन्हें याद करते हुए सोशल मीडिया पर श्रीदेवी की एक पुरानी तस्वीर शेयर की और 'मिस्टर इंडिया' के दिनों के बारे में बात करते हुए बताया कि कैमरे के सामने श्रीदेवी को देखना उनके लिए किसी जादुई अनुभव से कम नहीं था। शेखर कपूर ने इंस्टाग्राम पर श्रीदेवी के साथ अपनी एक ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीर शेयर की। उन्होंने इसे श्रीदेवी के साथ अपनी सबसे शुरुआती तस्वीर बताया। तस्वीर के साथ उन्होंने कैप्शन में लिखा, ''श्रीदेवी का चेहरा कभी नहीं बदला। उनकी आंखों में वही चमक दिखाई दे रही है, जो बाद में 'मिस्टर इंडिया' में नजर आई थी। दुनिया श्रीदेवी को एक बड़ी स्टार के रूप में याद करती है, लेकिन मैं उन्हें एक अलग तरह से याद करता हूं। मेरे लिए श्रीदेवी सिर्फ स्टार नहीं, बल्कि 'डायरेक्टर की सबसे अच्छी दोस्त' थीं।'' शेखर कपूर ने 'मिस्टर इंडिया' के दौरान श्रीदेवी के साथ अपनी बॉन्डिंग को भी याद किया। उन्होंने कहा, ''श्रीदेवी के साथ शानदार साझेदारी के बिना 'मिस्टर इंडिया' जैसी फिल्म बन ही नहीं सकती थी। जब मैं श्रीदेवी के साथ फिल्म पर काम कर रहा था, तब मुझे हर दिन सेट पर जाने की उत्सुकता रहती थी, क्योंकि मुझे पता नहीं होता था कि उस दिन श्रीदेवी अपने अभिनय से क्या नया दिखाने वाली हैं। वह हर बार किसी न किसी तरह से चौंका देती थीं।'' निर्देशक ने श्रीदेवी के कैमरे के सामने और कैमरे से दूर रहने के अंदाज का फर्क भी बताया। उन्होंने कहा, ''जब कैमरा श्रीदेवी पर नहीं होता था तो वह बहुत शांत होकर अपनी कुर्सी पर बैठी रहती थीं। वह अपनी स्टारडम को लेकर किसी तरह का दिखावा नहीं करती थीं। वह सेट पर ही सामान्य तरीके से बैठी रहती थीं। लेकिन जैसे ही कैमरा उनकी तरफ घूमता था, सब कुछ बदल जाता था।''

भारत और जर्मनी की वायु सेनाओं के बीच पहली एयर स्टाफ वार्ता, रक्षा सहयोग को नई गति

विश्व केसरी■

नई दिल्ली। भारत और जर्मनी की वायु सेनाओं के बीच पहली एयर स्टाफ वार्ता नई दिल्ली में आयोजित की गई है। भारतीय वायुसेना ने शुक्रवार को यह जानकारी साझा करते हुए कहा कि यह वार्ता दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय रक्षा सहयोग को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव है।

भारतीय वायुसेना के अनुसार, पहली बार आयोजित इस वार्ता ने दोनों पक्षों को आपसी सैन्य सहयोग को और गहरा करने तथा सहयोग के नए क्षेत्रों की संभावनाएं तलाशने के लिए महत्वपूर्ण मंच उपलब्ध कराया। वार्ता के दौरान सैन्य प्रशिक्षण, ऑपरेशनल स्तर पर आपसी आदान-प्रदान और सैन्य क्षमताओं के विकास से जुड़े क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर विशेष फोकस किया गया। दोनों वायु सेनाओं के बीच नियमित संवाद और पेशेवर अनुभवों के आदान-प्रदान से आपसी समझ तथा परिचालन सहयोग को और मजबूत करने की संभावनाएं बनी हैं।

गौरतलब है कि भारत और जर्मनी के बीच वायु क्षेत्र में सैन्य सहयोग पहले भी विभिन्न अभ्यासों और पेशेवर आदान-प्रदान के माध्यम से आगे बढ़ा है। वर्ष 2024 में जर्मन वायुसेना ने भारत में आयोजित तरंग शक्ति बहुराष्ट्रीय वायु अभ्यास में हिस्सा लिया था। इसमें जर्मन वायुसेना के यूरोफाइटर और ए400एम विमान शामिल हुए थे। ऐसे सैन्य अभ्यासों के अलावा एयर स्टाफ वार्ता जैसे संस्थागत संवाद दोनों देशों को अपनी परिचालन जरूरतों, प्रशिक्षण अनुभवों और भविष्य की क्षमताओं पर नियमित रूप से चर्चा करने का अवसर देते हैं।

भारतीय वायुसेना के मुताबिक 11 अगस्त से शुरू हुई यह चार दिवसीय पहली एयर स्टाफ वार्ता भारत-जर्मनी रक्षा संबंधों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। आने वाले समय में प्रशिक्षण, परिचालन आदान-प्रदान और क्षमता विकास के क्षेत्रों में सहयोग के नए अवसर तलाशे जाने की उम्मीद है। वहीं भारत-इंडोनेशिया के बीच आर्मी टू-आर्मी स्टाफ वार्ता भी हुई है। भारत व इंडोनेशिया के बीच इस सैन्य वार्ता का उद्देश्य रक्षा सहयोग को और मजबूत करना है। यहां रक्षा सहयोग के नए क्षेत्रों की पहचान करने और मौजूदा सहयोग को आगे बढ़ाने पर दोनों देशों ने सहमति दी है। द्विपक्षीय रक्षा सहयोग व संयुक्त प्रशिक्षण का दायरा बढ़ाने पर दोनों पक्ष राजी हुए हैं।

11 से प्रारंभ हुई दोनों देशों की यह सैन्य वार्ता 13 अगस्त तक जारी रही। वार्ता में दोनों देशों की सेनाओं के बीच द्विपक्षीय सैन्य सहयोग को बढ़ाने और आपसी संबंधों को और गहरा करने पर विस्तार से चर्चा हुई।

ग्लोबल स्पेस मार्केट का 10 फीसदी हिस्सा हासिल कर सकता है भारत : अमेरिकी वाणिज्य विभाग

विश्व केसरी■

वॉशिंगटन। अगले सात सालों में ग्लोबल स्पेस मार्केट में भारत की हिस्सेदारी पांच गुना बढ़ सकती है। ऐसा इसलिए होगा क्योंकि पॉलिसी में सुधार और अमेरिका के साथ करीबी रिश्तों से भारत के प्राइवेट स्पेस इंडस्ट्री की वृद्धि में तेजी आएगी। यह जानकारी अमेरिकी वाणिज्य विभाग ने दी है।

अभी ग्लोबल स्पेस मार्केट में भारत की हिस्सेदारी 2 प्रतिशत से भी कम है। लेकिन विभाग के इंटरनेशनल ट्रेड एडमिनिस्ट्रेशन ने अपने अगस्त के 'एयरोस्पेस एंड डिफेंस एक्सपोर्टर अलर्ट' में अनुमान लगाया है कि अगले पांच से सात सालों में यह हिस्सेदारी 10 प्रतिशत तक पहुंच जाएगी। विभाग ने कहा, 'भारत का प्राइवेट सेक्टर स्पेस इकोसिस्टम तेजी से विकसित हो रहा है और भारत सरकार के निजीकरण की दिशा में उठाए गए कदमों से इंटरनेशनल स्पेस कंपनियों के लिए भी मौके बनेंगे।' इस अलर्ट में भारत के स्पेस सेक्टर को 'मार्केट ऑफ द मंथ' बताया गया है। इसमें अमेरिकी कंपनियों के लिए सैटेलाइट सिस्टम, एडवांस्ड स्पेसफ्लाइट, कनेक्टिविटी, मैन्युफैक्चरिंग और संबंधित टेक्नोलॉजी में निवेश के मौकों पर जोर दिया गया।

1963 में भारत के पहले रॉकेट लॉन्च के समय से ही अमेरिका और भारत स्पेस के क्षेत्र में सहयोग कर रहे हैं। वह रॉकेट अमेरिका में बना 'नाइक-अपाचे' था। तब से यह साझेदारी वैज्ञानिक आदान-प्रदान, संयुक्त वर्किंग ग्रुप और मिलकर किए जाने वाले प्रोजेक्ट्स के जरिए बढ़ी है। नासा और अमेरिकी कंपनियों ने इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन (इसरो) को टेक्नोलॉजी और पार्ट्स भी सप्लाई किए हैं।

विभाग ने कहा कि भारत के नए स्पेस स्टार्टअप्स अमेरिका में अपने कामकाज और मैन्युफैक्चरिंग की मौजूदगी को बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं।

संक्षिप्त खबर

एच-1बी वीजा फीस से अमेरिका की नौकरियां जा सकती हैं विदेश : लॉमेकर राजा कृष्णमूर्ति

विश्व केसरी■

वॉशिंगटन। भारतीय-अमेरिकी लॉमेकर राजा कृष्णमूर्ति ने चेतावनी दी है कि नए एच-1बी वीजा पर 100,000 डॉलर की फीस से अमेरिकी कंपनियों को अपना काम विदेश ले जाने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है, जिससे देश की कुशल पेशेवरों को आकर्षित करने और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता पर बुरा असर पड़ेगा। कृष्णमूर्ति ने 'स्पिल द टी' इंटरव्यू सीरीज के एक एपिसोड में कहा, 'आप या तो टैलेंट को देश में ला सकते हैं या काम को विदेश भेज सकते हैं।' इलिनोइस के डेमोक्रेट लॉमेकर ने कहा, 'ये कंपनियां बस हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठेंगी और काम नहीं रोकेंगी। कृष्णमूर्ति ने कानूनी आप्रवासन (इमिग्रेशन) में आने वाली बाधाओं में शामिल 100,000 डॉलर की फीस पर चर्चा के दौरान यह बात कही। इंटरव्यू लेने वाले ने बताया कि वित्त वर्ष 2024 में सभी एच-1बी वीजा में से 71 प्रतिशत भारतीय नागरिकों को मिले थे और पूछा कि इस पॉलिसी का भारतीय-अमेरिकियों और अमेरिका की प्रतिस्पर्धात्मकता पर क्या असर पड़ेगा। कृष्णमूर्ति ने कहा, 'मेरा मतलब है, इसका बुरा असर दोनों पर पड़ता है, क्योंकि हमारा प्रतिस्पर्धी माहौल दुनिया के सबसे बेहतरीन टैलेंट को आकर्षित करने पर निर्भर करती है, चाहे वे भारत, चीन या स्वीडन के लोग हों।

जापान में भारी बारिश और बाढ़ से 6 लोगों की मौत

विश्व केसरी■

टोक्यो। पूर्वी जापान में गुरुवार से शुक्रवार सुबह तक हुई भारी बारिश के कारण कम से कम छह लोगों की मौत हो गई और कई इलाकों में बाढ़ आ गई। खराब होते मौसम के बीच अधिकारियों के अलर्ट पर रहने के दौरान जापान की मौसम एजेंसी ने टोक्यो के पास चिबा प्रांत की एक-तिहाई से अधिक नगरपालिकाओं के लिए भारी बारिश की सबसे ऊंची 'लेवल 5' की चेतावनी जारी की। जापान की क्योडो न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, प्रशासन ने बताया कि इचिकावा में एक व्यक्ति की मौत की पुष्टि हुई है। वहीं, साकुरा में पानी से भरी सड़क पर एक कार में फंसी 66 वर्षीय महिला की भी मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि चिबा प्रीफेक्चर में पानी से भरी सड़क पर एक व्यक्ति बेसुध हालत में मिला और बाद में उसकी मौत की पुष्टि हुई। साथ ही, साकुरा में गिरे हुए मिले एक व्यक्ति की भी मौत हो गई। चिबा प्रीफेक्चरल पुलिस ने बाद में दो लोगों की मौत की पुष्टि की। रिपोर्ट के मुताबिक, चिबा और टोक्यो के कई हिस्सों में बारिश की वजह से ट्रांसपोर्टेशन बाधित हुआ, जिससे यात्री सड़कों पर फंस गए। प्रीफेक्चर में एक सरकारी इमारत को फंसे हुए यात्रियों के लिए खोला गया था, जहां लगभग 1,800 लोग जमा हुए। चिबा, इचिकावा और दूसरी नगरपालिकाओं के अधिकारियों ने लोगों से सुरक्षा उपाय करने को कहा, क्योंकि पूरे इलाके में बाढ़ आ गई थी ।

रिपब्लिकन जांच में आरोप: हार्वर्ड ने अमेरिकी सुरक्षा से अधिक चीन के साथ संबंधों को प्राथमिकता दी

विश्व केसरी■

वॉशिंगटन। रिपब्लिकन पार्टी के नेतृत्व में हुई कांग्रेस की जांच में आरोप लगाया गया है कि हार्वर्ड यूनिवर्सिटी ने अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा के बजाय चीन के साथ फायदेमंद रिश्तों को प्राथमिकता दी और बीजिंग की सेना तथा मानवाधिकारों के उल्लंघन से जुड़ी संस्थाओं के साथ रिसर्च के संबंध बनाए रखे।

कॉम्प्रोमाइज्ड इंडिपेंडेंस: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में सीसीपी का प्रभाव' नामक 53 पन्नों की रिपोर्ट हाउस सेलेक्ट कमेटी ऑन चाइना और हाउस एजुकेशन एंड वर्कफोर्स कमेटी ने जारी की। कमेटी ने बताया कि उन्होंने हार्वर्ड और चीनी सरकार के हजारों पेजों के दस्तावेजों की समीक्षा की, यूनिवर्सिटी के कर्मचारियों से बातचीत की और कई गवाहों के बयान सुने। सेलेक्ट कमेटी के चेयरमैन जॉन मूलनार ने कहा, 'अमेरिकी लोग उम्मीद करते हैं कि हमारे देश की प्रमुख यूनिवर्सिटीज अमेरिकी रिसर्च और इनोवेशन की रक्षा करेंगी और कभी भी हमारे देश के दुश्मनों के हितों को आगे नहीं बढ़ाएंगी। अभी, हार्वर्ड इस उम्मीद पर खरा उतरने में नाकाम हो रहा है।'

उन्होंने कहा, 'चीन-विरोधी प्रदर्शनकारियों के खिलाफ हिंसा होने देने से लेकर पीएलए से जुड़ी संस्थाओं के साथ मिलकर काम करने तक, हार्वर्ड ने गंभीर गलतियां की हैं और अब उसे और गलतियों को रोकने के लिए कदम उठाने चाहिए। रिपोर्ट में आरोप लगाया गया है कि हार्वर्ड से जुड़े रिसर्चर्स ने चीन के डिफेंस रिसर्च और इंडस्ट्रियल बेस से जुड़ी यूनिवर्सिटीज के स्कॉलर्स के साथ मिलकर काम किया। इसमें कहा गया है कि कुछ रिसर्च ऐसे क्षेत्रों से जुड़ी थीं जिनका इस्तेमाल आम लोगों और सेना, दोनों के लिए हो सकता है, जैसे कि रोबोटिक्स।

इसमें यह भी कहा गया है कि हार्वर्ड के 'चैन स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ' ने एक एग्जीक्यूटिव एजुकेशन प्रोग्राम आयोजित किया था, जिसमें शायद 'शिनजियांग प्रोडक्शन एंड कंस्ट्रक्शन कॉर्प्स' के सदस्य शामिल हुए हों। इस चीनी पैरामिलिट्री संगठन पर अमेरिकी ट्रेजरी डिपार्टमेंट ने प्रतिबंध लगाया हुआ है।

होर्मुज से रोज गुजर रहा 80-90 लाख बैरल तेल, अमेरिका ऊर्जा मंत्री ने जलमार्ग से कम आवाजाही के दावों को किया खारिज

विश्व केसरी■

वाशिंगटन। अमेरिकी ऊर्जा सचिव क्रिस राइट ने कहा है कि होर्मुज स्ट्रेट से प्रतिदिन 80 लाख से 90 लाख बैरल तेल का आवागमन हो रहा है। साथ ही, उन्होंने उन दावों का खंडन किया, जिनमें कहा गया था कि ईरान के साथ संघर्ष के दौरान इस महत्वपूर्ण जलमार्ग से यातायात में भारी गिरावट आई है।

क्रिस राइट ने फॉक्स न्यूज को बताया कि वाणिज्यिक ट्रैकिंग सेवाएं पूरी तस्वीर पेश करने में असमर्थ थीं, क्योंकि अधिकांश जहाज अपने ट्रांसपोंडर बंद करके और सैन्य सुरक्षा के तहत यात्रा कर रहे थे। क्रिस राइट ने ब्रेट बेयर के साथ एक साक्षात्कार में कहा, 'हमें हर दिन ठीक-ठीक पता होता है कि होर्मुज स्ट्रेट से कितने जहाज आते-जाते हैं। हमें यह भी पता होता है कि वे क्या लेकर जा रहे हैं। सचिव ने कहा कि अमेरिकी अधिकारी जहाजों के साथ सीधे समन्वय कर रहे हैं और उत्तरी व दक्षिणी मार्गों से यातायात पर दैनिक रिपोर्ट प्राप्त कर रहे हैं। वाणिज्यिक ट्रैकिंग कंपनी केप्लर ने अनुमान लगाया था कि संघर्ष से पहले प्रतिदिन 100 से अधिक जहाज होर्मुज को पार करते थे। ब्रेट बेयर ने बताया कि कंपनी ने सोमवार को 14 और मंगलवार को भी इतनी ही संख्या में जहाजों के गुजरने की सूचना दर्ज की। राइट ने उन आंकड़ों को अपूर्ण बताकर खारिज कर दिया।

उन्होंने कहा, 'इनमें से लगभग सभी जहाजों के एआईएस (एंटी-आइसोलेशन सिस्टम) और ट्रांसपोंडर बंद हैं। इसलिए वे अंधेरे में हैं और सुरक्षा के साथ चल रहे हैं।

क्रिस राइट ने कहा कि औसतन प्रतिदिन 80 लाख से 90 लाख बैरल तेल होर्मुज से होकर गुजर रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि इसके अलावा 60 लाख बैरल तेल पाइपलाइनों के जरिए भेजा जा रहा है।

संयुक्त राष्ट्र ने दी चेतावनी, अल-कायदा बांग्लादेश में आतंकवादी सेल बनाने की कोशिश कर रहा

विश्व केसरी■

ढाका। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने चेतावनी दी है कि भारतीय उपमहाद्वीप में अल-कायदा (एक्यूआईएस) बांग्लादेश को आधार बनाकर आतंकवादी सेल स्थापित करने की कोशिश कर रहा है।

यह निष्कर्ष संयुक्त राष्ट्र की विश्लेषणात्मक सहायता एवं प्रतिबंध निगरानी टीम की 38वीं रिपोर्ट में सामने आया है। यह रिपोर्ट इस्लामिक स्टेट, अल-कायदा और उससे जुड़े संगठनों से संबंधित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की समिति को सौंपी गई है। बांग्लादेशी मीडिया के अनुसार, रिपोर्ट में कहा गया है कि नवंबर 2025 में दिल्ली के लाल किले पर हुआ हमला एक्यूआईएस से जुड़ा था। साथ ही, संगठन द्वारा बांग्लादेश को आतंकवादी नेटवर्क खड़ा करने के आधार के रूप में इस्तेमाल करने की कोशिशों पर चिंता जताई गई है। इस पृष्ठभूमि में निगरानी टीम ने चेतावनी दी है कि दक्षिण एशिया में आतंकवाद का खतरा और अधिक बढ़ गया है।

लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना को उस जनविद्रोह के बाद देश छोड़कर निर्वासन में जाना पड़ा था, जिसमें इस्लामवादी तत्वों की प्रमुख भूमिका बताई गई थी। इसके बाद से यह आशंका बढ़ गई है कि आतंकवादी संगठनों को वहां अपनी गतिविधियां फैलाने के लिए अनुकूल जमीन मिल सकती है। एक्यूआईएस की स्थापना वर्ष 2014 में अल-कायदा प्रमुख अयमान अल-जवाहिरी ने की थी। रिपोर्ट में कहा गया है, एक्यूआईएस एक बिखरे हुए समूह से विकसित होकर एक क्षेत्रीय आतंकवादी संगठन का रूप लेता जा रहा है।' इसमें आगे कहा गया कि संगठन ने लॉजिस्टिक्स और वित्तीय नेटवर्क स्थापित कर लिए हैं तथा अब वह बड़े संगठित ढांचों के बजाय छोटे, विकेंद्रीकृत और बिखरे हुए सेल के माध्यम से काम कर रहा है।

संयुक्त राष्ट्र के आकलन में इस घटनाक्रम को दक्षिण एशिया के सुरक्षा माहौल में व्यापक गिरावट से जोड़ा गया है। रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक आतंकवादी खतरे का स्तर कुल मिलाकर लगभग समान बना हुआ है।

कोलंबिया भूकंप में मरने वालों की संख्या बढ़कर 273 हुई, 3,824 घायल और 377 लोग लापता

विश्व केसरी■

बोगोटा। कोलंबिया में सोमवार को आए भूकंप से तबाही मची हुई है। नेशनल यूनिट फॉर डिजास्टर रिस्क मैनेजमेंट के डायरेक्टर डेविड तमायो ने बताया कि सोमवार को आए 7.4 तीव्रता के भूकंप से मरने वालों की संख्या बढ़कर 273 हो गई है। तमायो ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, 'हमारे पास 40,753 प्रभावित परिवारों, 97,515 प्रभावित लोगों और 273 मौतों की रिपोर्ट है। उन 273 मौतों में से 250 शव चिकित्सा विभाग में आ चुके हैं, 227 की पहचान की जा चुकी है और 189 को उनके परिवारों को सौंप दिया गया है।'

उन्होंने यह भी कहा कि भूकंप में 3,824 लोग घायल हुए और 377 लोग लापता हो गए। बुनियादी ढांचे के संदर्भ में, तमायो ने कहा कि 12,584 घर नष्ट हो गए और 74,873 क्षतिग्रस्त हो गए। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, उन्होंने यह भी कहा कि भूकंप के कारण 172 इमारतें ढह गईं और 2,198 स्कूल और शैक्षणिक संस्थान, 825 सामुदायिक केंद्र, 216 स्वास्थ्य केंद्र और पांच हवाई अड्डे प्रभावित हुए।

कोलंबिया भूकंप से हुए नुकसान की निगरानी के लिए उपग्रह प्रौद्योगिकी और हाई-रिजॉल्यूशन इमेज का उपयोग किया जा रहा है। जमीन पर, खोज और बचाव दल मलबे के नीचे लापता लोगों का पता लगाने के लिए डॉग स्क्वायड के साथ काम करते रहे।

कोलंबियाई भूवैज्ञानिक सेवा ने कहा कि चोको के उत्तर-पश्चिमी विभाग में सैन जोस डेल पालमार में गुरुवार को स्थानीय समयानुसार सुबह 9:42 बजे 4.2 तीव्रता का एक नया झटका दर्ज किया गया, जो सोमवार के भूकंप का हिस्सा था।

इस बीच, मानवीय मामलों के समन्वय के लिए संयुक्त राष्ट्र कार्यालय (ओसीएचए) और उसके सहयोगी कोलंबिया में विनाशकारी भूकंप के लिए सरकार के नेतृत्व वाली प्रतिक्रिया का समर्थन किया।

ऑस्ट्रेलिया: सिडनी एयरपोर्ट पर तीसरे रनवे से जुड़ी घटना की जांच कर रहे अधिकारी

विश्व केसरी■

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया के परिवहन सुरक्षा जांचकर्ता के प्रमुख ने शुक्रवार को अहम बयान दिया। बयान में कहा गया कि मौजूदा समय में एजेंसी यह समझने की कोशिश कर रही है कि आखिर सिडनी एयरपोर्ट पर दो प्लेन से संबंधित सुरक्षात्मक हादसों के बारे में रिपोर्ट करने में देरी क्यों की गई।

ऑस्ट्रेलियन ट्रांसपोर्ट सेफ्टी ब्यूरो ने गुरुवार रात बताया कि उसने 9 अगस्त को हुई रनवे पर घुसपैठ की एक घटना की जांच शुरू कर दी है। इस घटना में मध्य ऑस्ट्रेलिया के आयर्स रॉक एयरपोर्ट जाने वाली क्वांटस की फ्लाइट क्यू एफ 728 और पर्थ जाने वाली वर्जिन ऑस्ट्रेलिया की फ्लाइट वीए 555 शामिल थीं।

एटीएसबी के बयान में कहा गया है कि एयर ट्रैफिक कंट्रोल ने रविवार को स्थानीय समयानुसार सुबह लगभग 10 बजे सिडनी से वर्जिन ऑस्ट्रेलिया की फ्लाइट को पूरे रनवे का इस्तेमाल करके उड़ान भरने की मंजूरी दी थी।

शिन्हुआ न्यूज एजेंसी की रिपोर्ट के मुताबिक, जैसे ही क्रू ने थ्रस्ट (इंजन की ताकत) बढ़ाया, उन्होंने देखा कि क्वांटस की फ्लाइट उनके आगे रनवे पार कर रही थी। इसके बाद वर्जिन ऑस्ट्रेलिया की उड़ान रुक गई और फिर उसे टेक-ऑफ शुरू करने की दोबारा मंजूरी मिली। एटीएसबी के मुख्य कमिश्नर एंगस मिशेल ने ऑस्ट्रेलियन ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन रेडियो को बताया कि उन्हें गुरुवार तक इस घटना के बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई थी।

होर्मुज स्ट्रेट से गुजरते समय यूएई के दो टैंकरों पर हमला, विदेश मंत्रालय ने की ईरान की निंदा

विश्व केसरी■

अबू धाबी। स्थानीय अधिकारियों और मीडिया ने शुक्रवार सुबह बताया कि गुरुवार शाम को संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) की अबू धाबी नेशनल ऑयल कंपनी (एडीएनओसी) के दो जहाजों पर होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरते समय हमला किया गया।

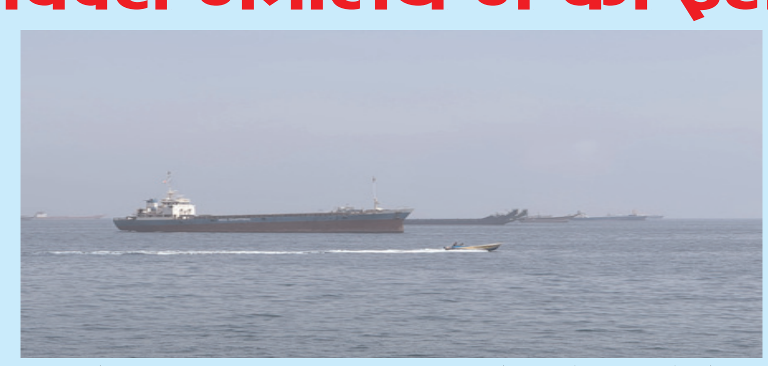

सोशल मीडिया पर जारी एक बयान में, यूएई के विदेश मंत्रालय ने ईरान के हमलों की निंदा की और ईरान से इन हमलों को रोकने की जरूरत पर जोर दिया। विदेश मंत्रालय ने इस बात पर जोर दिया कि यह हमला संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव 2817 का खुला उल्लंघन है, जिसमें नेविगेशन की आजादी के महत्व की पुष्टि की गई थी और कमर्शियल जहाजों को निशाना बनाने या अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्गों में बाधा डालने को अस्वीकार किया गया था।

मंत्रालय ने इस बात पर जोर दिया कि कमर्शियल जहाजों को निशाना बनाना और होर्मुज जलडमरूमध्य का इस्तेमाल आर्थिक दबाव या ब्लैकमेल के हथियार के तौर पर करना, ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स द्वारा समुद्री डकैती जैसा काम है। साथ ही, यह क्षेत्र की स्थिरता, वहां के लोगों और वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा के लिए सीधा खतरा है।

मंत्रालय ने आगे कहा, 'यूएई ने इस बात पर भी जोर दिया कि ईरान को इन बिना उकसावे के किए गए हमलों को रोकना चाहिए, सभी तरह की शत्रुता को तुरंत खत्म करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध होना चाहिए, और क्षेत्रीय सुरक्षा की रक्षा के लिए होर्मुज जलडमरूमध्य को पूरी तरह और बिना किसी शर्त के फिर से खोलना चाहिए।

सरकारी समाचार एजेंसी 'एमिरेट्स न्यूज एजेंसी' के हवाले से सिन्हुआ ने बताया कि कंपनी ने पुष्टि की है कि किसी के घायल होने की खबर नहीं है और स्थिति को नियंत्रण में ले लिया गया है। एक बयान में, एडीएनओसी ने नाविकों की सुरक्षा और भलाई की रक्षा करने के साथ-साथ नेविगेशन की आजादी और समुद्री सुरक्षा बनाए रखने के महत्व पर जोर दिया।

मान. श्रीमती कुसुम पैकरा
अध्यक्ष जनपद पंचायत कसडोल

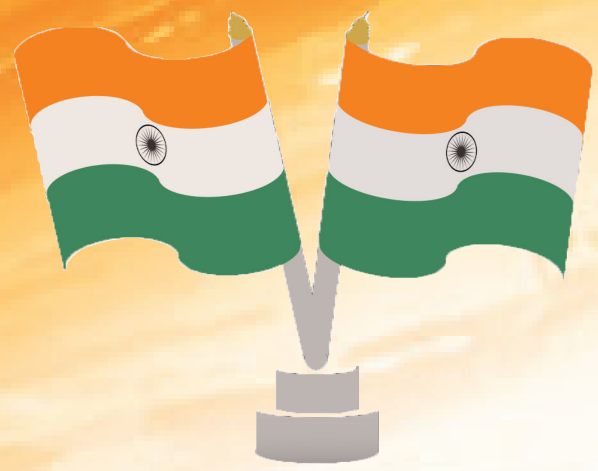

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं...

मान. श्री देवानंद नायक
उपाध्यक्ष जनपद पंचायत कसडोल

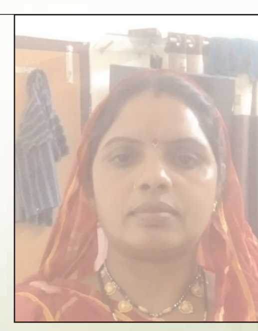

विनीतः मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत कासडोल जिला बालौदाबाजार भाटापारा (छ.ग.)

मान. श्री नरेन्द्र मोदी जी
प्रधानमंत्री

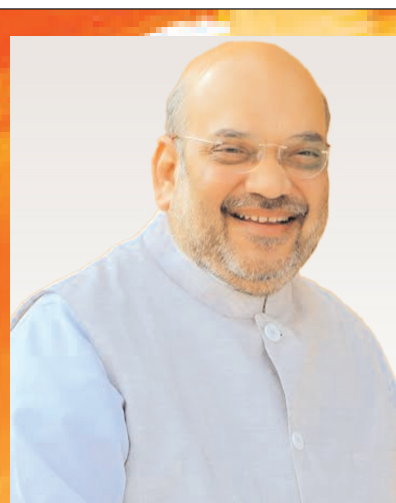

मान. श्री अमित शाह जी
केन्द्रीय गृहमंत्री

मान. श्री विष्णु देव साय जी
मुख्यमंत्री (छ.ग.)

मान. श्री टंकराम वर्मा जी
कैबिनेट मंत्री (छ.ग.)

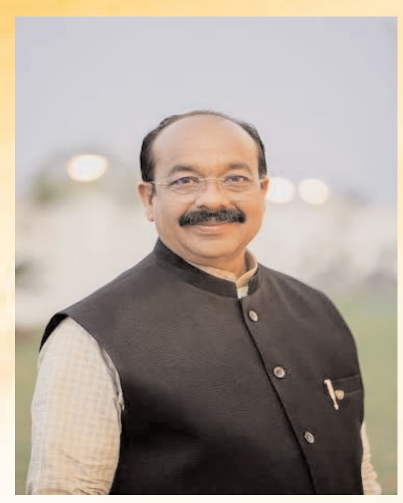

मान. श्री अरूण साव जी
उप मुख्यमंत्री (छ.ग.)

मान. श्री विजय शर्मा जी
उप मुख्यमंत्री (छ.ग.)

गौरीशंकर अग्रवाल
पूर्व विधानसभा अध्यक्ष छ.ग शासन

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं...

संकलनकर्ता :- प्रवीण ढोमने कसडोल

दशरथ पैकरा (सभापति)
लोकनिर्माण विभाग
नगर पंचायत कसडोल

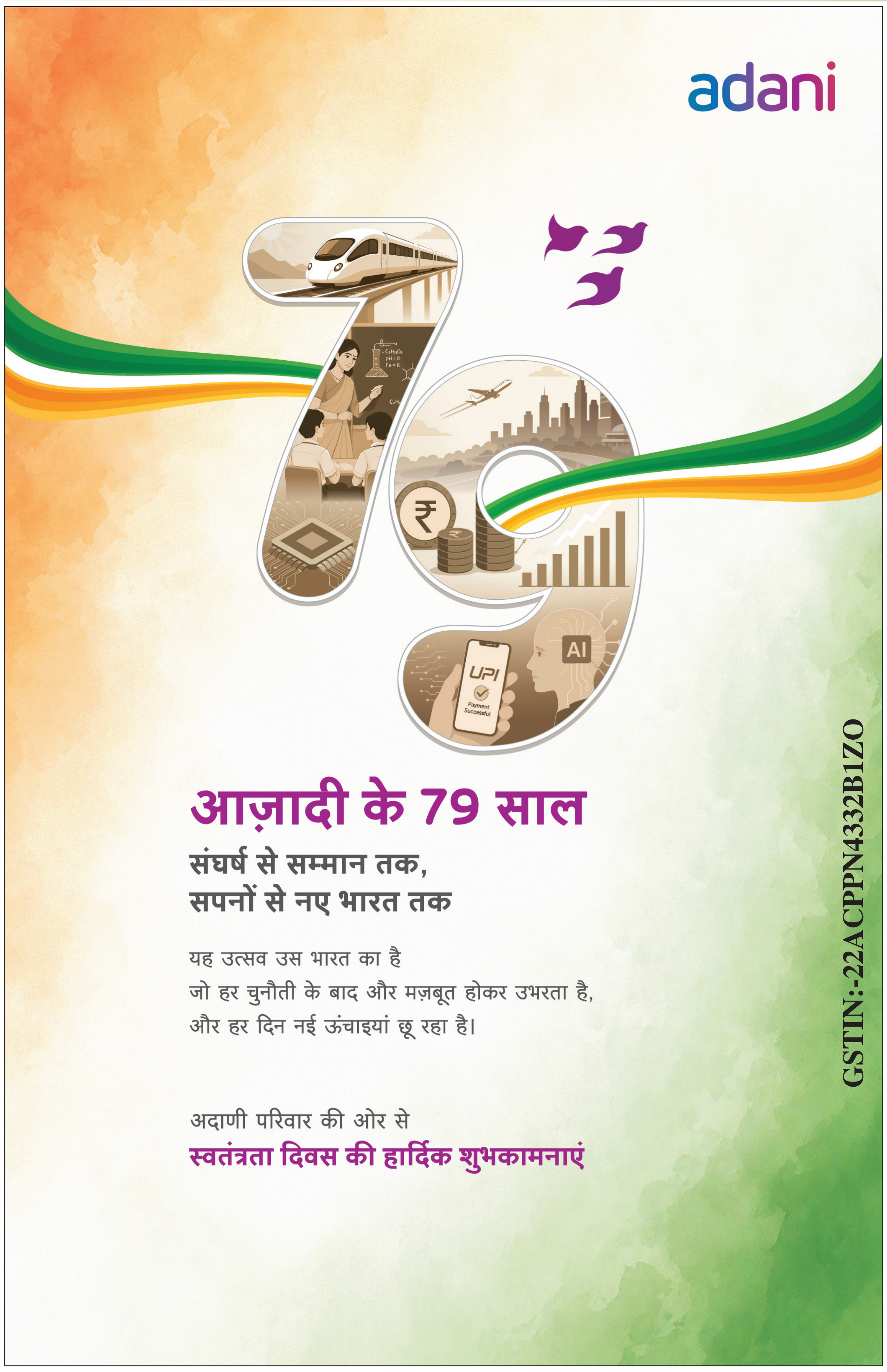
adani
UPI
AI
आज़ादी के 79 साल
संघर्ष से सम्मान तक,
सपनों से नए भारत तक
यह उत्सव उस भारत का है
जो हर चुनौती के बाद और मज़बूत होकर उभरता है,
और हर दिन नई ऊंचाइयां छू रहा है।
अदाणी परिवार की ओर से
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
GSTIN:-22ACPPN4332B1ZO

15th AUGUST
जय हिन्द
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!
वंदे मातरम् | जय हिन्द | भारत माता की जय
आइए, हम सब मिलकर देश की एकता, अखंडता और प्रगति
के लिए समर्पित हों और भारत को विश्वगुरु बनाने में अपना योगदान दें।
1
शिवशंकर सोनपिपरे
IFWJ, राष्ट्रीय सचिव
2
अमित मिश्रा
IFWJ, राष्ट्रीय काउंसलर
3
डॉ. निर्मला शर्मा
प्रदेश अध्यक्ष
न्यू छत्तीसगढ़ जर्नलिस्ट फाउंडेशन
5
हनीफ मेमन
बिलासपुर जिला अध्यक्ष
न्यू छत्तीसगढ़ जर्नलिस्ट फाउंडेशन
सत्य • निष्पक्षता • साहस
PRESS
NCJF
NEW CHHATTISGARH JOURNALIST FOUNDATION
पत्रकारिता की शक्ति, समाज की उन्नति
एकता में है शक्ति,
स्वतंत्रता में है गर्व,
आओ मिलकर करें
भारत का नवनिर्माण!

स्वतंत्रता की शान,
हमारी पहचान
गर्व से कहो हम
भारतीय हैं महान!
समस्त देशवासियों को
15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं!
खाद्य विभाग कसडोल

15th August Independence Day
शिवाजी पब्लिक स्कूल -पुरानी बस्ती रायपुर छ.ग. प्रदेश व देश वासियों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं बधाईयां
मुकेश शाह

15th August Independence Day
प्रदेश एवं देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाईयां
विनीत: एक शुभचिंतक

adani

आज़ादी के 79 साल

संघर्ष से सम्मान तक,
सपनों से नए भारत तक

यह उत्सव उस भारत का है
जो हर चुनौती के बाद और मज़बूत होकर उभरता है,
और हर दिन नई ऊंचाइयां छू रहा है।

अदाणी परिवार की ओर से
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

DOC- 20260813-wA0014

स्वात्वधिकारी राइवल्स मीडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक सुजीत कुमार द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड प्लाट नंबर 40/44 इण्डस्ट्रियल एरिया बीरगांव रोड़ उरला रायपुर छत्तीसगढ़ से मुद्रित और 30, मीडिया सीटी, हीरापुर रोड, मोहबा बाजार, टाटीबंध रायपुर छत्तीसगढ़- 492099,स्थानीय कार्यालय B-87A गायत्री नगर, शंकर नगर जगन्नाथ मंदिर के पास रायपुर छ.ग. 492004 से प्रकाशित संपादक : सुजीत कुमार (पीआरबी एक्ट के अनुसार समाचार पत्र चयन एवं संपादन के लिए उत्तरदायी। नोट किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्यायक्षेत्र रायपुर होगा) मोबाइल 9425509753 ई-मेलः vishwakesari2026@gmail.com,आर.एन.आई.नं. CTHIN/26/A6251